
मुत्तुस्वामि दीक्षितर् कीर्तनसमाहारम्

Compiled and typeset by

P. P. NARAYANASWAMI

TO NAVIGATE — *CLICK* ON THE BOOKMARKS PANEL ON LEFT,
or CLICK [HERE](#) TO GO TO “TABLE OF CONTENTS” अनुक्रमणिका.

(TO VIEW IN FULL SCREEN MODE (SUPPRESSING THE LEFT PANEL), *CLICK* ON THE “Bookmarks” BUTTON ON THE LEFT PANEL (IT TOGGLES).

**A total of 484 krtis
arranged in alphabetical order
(according to Sanskrit alphabet)**

©May 2007

अनुक्रमणिका

१	अखिलाण्डेश्वरि रक्ष माम्	3
२	अखिलाण्डेश्वर्यै नमस्ते	4
३	अखिलाण्डेश्वरो रक्षतु	6
४	अगस्तीश्वरम्	7
५	अङ्गारकमाश्रयाम्यहम्	8
६	अनतबालकृष्ण	10
७	अन्नपूर्णे विशालाक्षि	11
८	अभयाम्बा जगदम्बा	12
९	अभयाम्बानायक वरदायक	13
१०	अभयाम्बानायक हरिसायक	14
११	अभयाम्बायाम्	15
१२	अभयाम्बिकायाः	16
१३	अभयाम्बिकायै	18
१४	अभिरामीम्	19
१५	अम्ब नीलायताक्षि	20
१६	अम्बिकायाः अभयाम्बिकायाः	21
१७	अरुणाचलनाथम्	23
१८	अर्द्धनारीश्वरम्	24
१९	अव्याजकरुणाकटाक्षि	25
२०	अक्षयलिङ्गविभो	26
२१	आञ्जनेयम्	28
२२	आदिपुरीश्वरम्	29
२३	आनन्दनटनप्रकाशम्	30
२४	आनन्दामृताकर्षिणि	32
२५	आनन्देश्वरेण	33
२६	आर्या अभयाम्बाम्	34
२७	ईशानादिशिवाकारमञ्चे	36
२८	उच्छिष्टगणपतौ	37
२९	एकदन्तं भजेऽहम्	38
३०	एकाम्रनाथाय	39
३१	एकाम्रनाथाय नमस्ते	40

३२	एकाम्रनाथेश्वरेण	41
३३	एकाम्रनाथं भजेऽहम्	42
३४	एकाम्नेशनायकीम्	43
३५	एकाम्नेशनायिके	44
३६	एहि अन्नपूर्णे	45
३७	कञ्जदळायताक्षि	46
३८	कनकसभापतिम्	47
३९	कनकाम्बरि	48
४०	कमलाम्बा संरक्षतु माम्	49
४१	कमलाम्बां भज रे	50
४२	कमलाम्बिकायास्तव भक्तोऽहम्	51
४३	कमलाम्बिकायै	53
४४	कमलाम्बिके	55
४५	कमलासनवन्दित	56
४६	करिकळभमुखम्	57
४७	कलावती कमलासनयुवती	58
४८	काञ्चीशम्	59
४९	कादम्बरीप्रियायै	60
५०	कामकोटिपीठवासिनि	61
५१	कामाक्षि कामकोटि	62
५२	कामाक्षि मां पाहि	63
५३	कामाक्षि वरलक्ष्मि	64
५४	कामाक्षीं कल्याणीम्	65
५५	कामेश्वरेण	66
५६	कायारोहणेशम्	67
५७	कालभैरवम्	68
५८	काशीविशालाक्षीम्	69
५९	काशीविश्वेश्वर	70
६०	कुमारस्वामिनम्	71
६१	कुम्भेश्वराय नमस्ते	72
६२	कुम्भेश्वराय नमस्ते	73
६३	कुम्भेश्वरेण	74
६४	कुसुमाकरविमानारूढाम्	75
६५	कुसुमाकरशोभित	76

६६	कृष्णानन्दमुकुन्दमुरारे	77
६७	कैलासनाथेन	78
६८	कैलासनाथम्	79
६९	कोदण्डरामम्	80
७०	कौमारी गौरी	81
७१	गङ्गे मां पाहि	82
७२	गजाधीशादन्यम्	83
७३	गजाननयुतम्	84
७४	गजाननाय नमस्ते	85
७५	गजाम्बा नायको	86
७६	गणनायकम्	87
७७	गणपते महामते	88
७८	गणराजेन	89
७९	गणेशकुमार	90
८०	गानलोले	91
८१	गिरिजया अजया	92
८२	गीतिचक्ररथस्थितायै	93
८३	गुणिजनादिनुत	94
८४	गुरुगुहपदपङ्कज	95
८५	गुरुगुहभवान्तरङ्गिणीम्	96
८६	गुरुगुह सरसिज	97
८७	गुरुगुहस्वामिनि	98
८८	गुरुगुहादन्यम्	100
८९	गुरुगुहाय	101
९०	गुरुमूर्ते	102
९१	गोकर्णेश्वर पाहि	103
९२	गोपालकृष्णाय नमस्ते	104
९३	गोवर्धनगिरीशम्	105
९४	गोविन्दराजाय	106
९५	गोविन्दराजेन	107
९६	गोविन्दराजमुपास्महे	108
९७	गौरि गिरिराजकुमारि	109
९८	गौरीशाय नमस्ते	110
९९	चन्द्रं भज मानस	111

१००	चन्द्रशेखरम्	113
१०१	चिदम्बरनटराजम्	114
१०२	चिदम्बरनटराजमूर्तिम्	115
१०३	चिदम्बरेश्वरम्	116
१०४	चिन्तय माकन्तमूलकन्दम्	117
१०५	चिन्तये महालिङ्गमूर्तिम्	118
१०६	चिन्त्येऽहं सदा	119
१०७	चेतःश्रीबालकृष्णम्	120
१०८	छायावतीम्	122
१०९	जगदीश गुरुगुह	123
११०	जगदीशमनोहरि	124
१११	जम्बूपते	125
११२	जयति शिवा भवानी	126
११३	तारकेश्वर	127
११४	तिरुवटीश्वरम्	128
११५	त्यागराज पालयाशु	129
११६	त्यागराज महध्वजारोह	130
११७	त्यागराजयोगवैभवम्	132
११८	त्यागराजादन्यं न जाने	133
११९	त्यागराजाय नमस्ते	135
१२०	त्यागराजे	137
१२१	त्यागराजेन संरक्षितोऽहम्	138
१२२	त्यागराजो विराजते	139
१२३	त्यागराजं भज रे	141
१२४	त्यागराजं भजेऽहम्	142
१२५	त्यागेशं भज रे	143
१२६	त्रिपुरसुन्दरि नमोस्तु ते	144
१२७	त्रिपुरसुन्दरि शङ्करि	145
१२८	त्रिलोचनमोहिनीम्	146
१२९	दण्डनाथया रक्षितोऽहम्	147
१३०	दण्डायुधपाणिम्	148
१३१	दक्षिणामूर्ते	150
१३२	दाशरथे	151
१३३	दाक्षायणि	152

१३४	दिवाकरतनुजं शनैश्चरम्	153
१३५	दीनबन्धो	154
१३६	देवि जगदीश्वरि	155
१३७	धर्मसंवर्धनि	156
१३८	नन्दगोपाल	157
१३९	नभोमणिचन्द्राग्निनयनम्	158
१४०	नमस्ते परदेवते	159
१४१	नमो नमस्ते गीर्वाणि	160
१४२	नरसिंहाऽऽगच्छ	161
१४३	नरहरिमाश्रयामि	162
१४४	नर्मदाकावेरी	163
१४५	नवरत्नमालिनीम्	164
१४६	नवरत्नविलासविभवप्रदे	165
१४७	नागगान्धारीरागनुते	166
१४८	नागलिङ्गं नमामि	167
१४९	नागलिङ्गं भजेऽहम्	168
१५०	नागाभरणम्	169
१५१	निषदादि	170
१५२	नीरजाक्षि कामाक्षि	171
१५३	नीलकण्ठ महादेव	172
१५४	नीलकण्ठाय नमो नमस्ते	173
१५५	नीलकण्ठं भजेऽहम्	174
१५६	नीलाङ्गम्	175
१५७	नीलाचलनाथम्	176
१५८	नीलोत्पलाम्बा जयति	177
१५९	नीलोत्पलाम्बाम्	178
१६०	नीलोत्पलाम्बिकया	179
१६१	नीलोत्पलाम्बिकायाम्	180
१६२	नीलोत्पलाम्बिकायाः परम्	181
१६३	नीलोत्पलाम्बिकायास्तव	182
१६४	नीलोत्पलाम्बिकायै	183
१६५	नीलोत्पलाम्बिके	184
१६६	नी साटि दैवमेन्तुलेदनि	185
१६७	पङ्कजमुख	186

१६८	पञ्चमातङ्गमुखगणपतिना	187
१६९	पञ्चभूतकिरणावलिम्	188
१७०	पञ्चाशत्पीठरूपिणि	189
१७१	पन्नगशयन पद्मनाभ	190
१७२	परदेवता बृहत्कुचाम्बा	191
१७३	परदेवते नमस्ते	192
१७४	परदेवते भक्तपूजिते	193
१७५	परदेवते भक्तभवमोदिनि	194
१७६	परमशिवात्मजम्	195
१७७	परमेश्वर जगदीश्वर	196
१७८	परमेश्वरेण	197
१७९	पराशक्ति ईश्वरि	198
१८०	पराशक्तिम्	199
१८१	परिमळरङ्गनाथम्	200
१८२	परिमळरङ्गनाथम्	201
१८३	परंज्योतिष्मती पार्वती	202
१८४	परंधामवती	203
१८५	पर्वतराजकुमारि	204
१८६	पर्वतवर्धनि पाहिमाम्	205
१८७	पवनात्मजागच्छ	206
१८८	पवनात्मजम्	207
१८९	पशुपतीश्वरम्	208
१९०	पामरजनपालिनि	209
१९१	पार्वतीकुमारम्	210
१९२	पार्वतीपतिम्	211
१९३	पार्वतीपते	212
१९४	पार्वतीश्वरेण	213
१९५	पालय मां परमेश्वरि	214
१९६	पालय मां पार्वतीश	215
१९७	पालय मां बृहदीश्वर	216
१९८	पालय मां बृहदीश्वरि	217
१९९	पाहि दुर्गे	218
२००	पाहि मां जनकीवल्लभ	219
२०१	पाहि मां पार्वति परमेश्वरि	220

२०२	पाहि मां रत्नाचलनायक	221
२०३	पीतवर्णम्	222
२०४	पुरहरनन्दन	223
२०५	पूर्णचन्द्रबिम्बविजयवदने	224
२०६	प्रणतार्तिहराय नमस्ते	226
२०७	प्रणतार्तिहरम्	227
२०८	प्रत्यङ्गिराभगवतीम्	228
२०९	प्रसन्नवेङ्कटेश्वरम्	229
२१०	बालकुचाम्बिके	230
२११	बालकृष्णं भावयामि	231
२१२	बालगोपाल	232
२१३	बालसुब्रह्मण्यम्	233
२१४	बालाम्बिकाया	234
२१५	बालाम्बिकायाः तव	235
२१६	बालाम्बिकायाः परम्	236
२१७	बालाम्बिकायै	237
२१८	बालाम्बिके पाहि	238
२१९	बुधमाश्रयामि सततम्	239
२२०	बृहदम्बा मदम्बा	240
२२१	बृहदम्बिकायै	241
२२२	बृहदीशकटाक्षेण	242
२२३	बृहदीश्वराय	243
२२४	बृहदीश्वरो रक्षतु	244
२२५	बृहदीश्वरं भज रे	245
२२६	बृहदीश्वरीं भजरे	246
२२७	बृहन्नायकि वरदायकि	247
२२८	बृहस्पते तारापते	248
२२९	ब्रह्मविद्याम्बिके	249
२३०	भक्तवत्सलम्	250
२३१	भजरे रे चित्त	251
२३२	भारति	252
२३३	भूषापतिम्	253
२३४	भूषावतीम्	254
२३५	भोगच्छायाणाटकप्रिये	255

२३६	मङ्गलदेवतया	256
२३७	मङ्गलदेवते	257
२३८	मङ्गलाम्बायै नमस्ते	258
२३९	मङ्गलं जयमङ्गलम्	259
२४०	मत्स्यावतार	260
२४१	मधुराम्बा जयति	261
२४२	मधुराम्बा संरक्षतु	262
२४३	मधुराम्बायाः	263
२४४	मधुराम्बां भज रे	264
२४५	मधुराम्बिकायाम्	265
२४६	मरकतलिङ्गम्	266
२४७	मरकतवल्लीम्	267
२४८	महागणपतिम्	268
२४९	महागणपतिं वन्दे	269
२५०	महागणपते	270
२५१	महात्रिपुरसुन्दरी	271
२५२	महादेवेन	272
२५३	महालक्ष्मि करुणारसलहरि	273
२५४	महालिङ्गेश्वराय	274
२५५	महालिङ्गेश्वरम्	275
२५६	महासुरं केतुमहं भजामि	276
२५७	महिषासुरमर्दिनि	277
२५८	महिषासुरमर्दिनीम्	278
२५९	मातङ्गि मरकताङ्गि	279
२६०	मातङ्गि श्रीराजराजेश्वरि	280
२६१	माधवो मां पातु	281
२६२	मानसगुरुगुह	284
२६३	मामव पट्टाभिराम	285
२६४	मामव मीनाक्षि	286
२६५	मामव रघुवीर	287
२६६	मायूरनाथम्	288
२६७	माये चित्कले	289
२६८	माये त्वं याहि	290
२६९	मारकोटिकोटिलावण्य	291

२७०	माररतिप्रियम्	292
२७१	मारुवकादिमालिनि	293
२७२	मार्गसहायेश्वरम्	294
२७३	मार्गहिन्दोळरागप्रिये	295
२७४	मीनाक्षि मे मुदम्	296
२७५	मुचुकुन्दवरद	297
२७६	मुरहरेण मुकुन्देन	298
२७७	मूलाधारचक्रविनायक	299
२७८	मोहननाटरागप्रिये	300
२७९	रक्तगणपतिम्	301
२८०	रङ्गनायकम्	302
२८१	रङ्गपुरविहार	303
२८२	राजगोपालम्	305
२८३	राजराजेन्द्रचोल	306
२८४	राजीवलोचनम्	307
२८५	रामकृष्णेन संरक्षितोऽहम्	308
२८६	रामचन्द्रभक्तम्	309
२८७	रामचन्द्रस्य दासोऽहम्	310
२८८	रामचन्द्रादन्यम्	311
२८९	रामचन्द्राय नमस्ते	312
२९०	रामचन्द्रेण संरक्षितोऽहम्	313
२९१	रामचन्द्रं भावयामि	314
२९२	रामचन्द्रं राजीवाक्षम्	315
२९३	राम जनार्दन	316
२९४	रामनाथं भजेऽहम्	317
२९५	रामराम कलिकलुषविराम	318
२९६	रामे भरतपालित	319
२९७	रुद्रकोपजात	320
२९८	रूपमु जूचि	321
२९९	रेणुकादेवि संरक्षितोऽहम्	322
३००	लम्बोदराय नमस्ते	323
३०१	ललितापरमेश्वरी	324
३०२	ललिताम्बिकाम्	325
३०३	ललिताम्बिकायै	326

३०४	वदान्येश्वरम्	327
३०५	वन्दे मीनाक्षि	328
३०६	वरदराज पहि	329
३०७	वरदराजमुपास्महे	330
३०८	वरदराजाऽवाव	331
३०९	वरलक्ष्मीं भज	332
३१०	वरशिवबालम्	333
३११	वल्लभानायकस्य	334
३१२	वाग्देवि मामव	335
३१३	वातापिगणपतिं भजेऽहम्	336
३१४	वामाङ्गस्थितया	337
३१५	वाराहीं वैष्णवीं	338
३१६	वासुदेवमुपास्महे	339
३१७	विघ्नेश्वरम्	340
३१८	विनायक	341
३१९	विशालाक्षीं	342
३२०	विश्वनाथेन	343
३२१	विश्वनाथं भजेऽहम्	344
३२२	विश्वेश्वरो रक्षतु माम्	345
३२३	वीणापुस्तकधारिणीम्	346
३२४	वीणाभेरिवेणुवाद्यादि	347
३२५	वीरवसन्त त्यागराज	348
३२६	वीरहनुमते नमो नमः	349
३२७	वेङ्कटाचलपते	350
३२८	वेङ्कटेश्वरयादवभूपतिम्	352
३२९	वेदपुरीश्वरम्	353
३३०	वेदारण्येश्वराय	354
३३१	वंशवति शिवयुवति	355
३३२	शक्तिसहितगणपतिम्	356
३३३	शङ्करनारायणम्	357
३३४	शङ्करमभिरामीमनोहरम्	358
३३५	शङ्करवर	359
३३६	शङ्खचक्रगदापाणिम्	360
३३७	शरवणभवगुरुगुहं	362

३३८	शरावतीतटवासिनी	363
३३९	शालिवाटीश्वरम्	364
३४०	शिवकामीपतिम्	365
३४१	शिवकामेश्वरम्	366
३४२	शिवकामेश्वरीम्	367
३४३	शिवकायारोहणेशाय	368
३४४	शृङ्गाररसमञ्जरीम्	369
३४५	शृङ्गारशक्त्यायुधधर	370
३४६	शृङ्गारदिनवरसाङ्गी	371
३४७	शेषाचलनायकम्	372
३४८	शैलराजकुमारि	373
३४९	शैलेश्वरम्	374
३५०	शौरिविधिनुते	375
३५१	श्यामलाङ्गि	376
३५२	श्यामले मीनाक्षि	377
३५३	श्री अभयाम्बा	378
३५४	श्रीकमलाम्बा जयति	379
३५५	श्रीकमलाम्बिकया	381
३५६	श्रीकमलाम्बिकायाम्	383
३५७	श्रीकमलाम्बायाः परम्	385
३५८	श्रीकमलाम्बिकेऽवाव	387
३५९	श्रीकमलाम्बिके	388
३६०	श्रीकान्तिमतीम्	389
३६१	श्रीकालहस्तीश	390
३६२	श्रीकृष्णं भज मानस	391
३६३	श्रीकृष्णं भज रे	392
३६४	श्रीकृष्णो मां रक्षतु	393
३६५	श्रीगणनाथं भज रे	394
३६६	श्रीगणेशात्परम्	395
३६७	श्रीगुरुगुह	396
३६८	श्रीगुरुगुहमूर्ते	397
३६९	श्रीगुरुगुहस्य	399
३७०	श्री गुरुणा पालितोऽस्मि	400
३७१	श्रीत्यागराजस्य	401

३७२	श्रीदक्षिणामूर्तिमीशम्	402
३७३	श्रीदक्षिणामूर्तिम्	403
३७४	श्रीदुंदुर्गे	404
३७५	श्रीनाथसोदरीम्	405
३७६	श्रीनाथादिगुरुगुहो	406
३७७	श्रीनीलोत्पलनायिके	408
३७८	श्री पार्थसारथिना	410
३७९	श्रीपार्वतीपरमेश्वरौ	411
३८०	श्रीबालसुब्रह्मण्य	412
३८१	श्री भार्गवी	413
३८२	श्रीमङ्गळाम्बिकाम्	414
३८३	श्रीमङ्गळाम्बिके	415
३८४	श्रीमधुरापुरिविहारिणि	416
३८५	श्रीमधुराम्बिकया	417
३८६	श्रीमधुराम्बिके	418
३८७	श्रीमहागणपतिरवतु माम्	419
३८८	श्रीमहाराज्ञि	420
३८९	श्रीमातः शिववामाङ्के	421
३९०	श्रीमातृभूतम्	422
३९१	श्रीमीनाम्बिकायाः	424
३९२	श्रीमीनाक्षि गौरि	425
३९३	श्रीरङ्गनाथाय	426
३९४	श्री रमासरस्वती	427
३९५	श्रीराजगोपाल	428
३९६	श्रीराजराजेश्वरि त्रिपुरसुन्दरि	429
३९७	श्रीराजराजेश्वरी श्रीरमामनोहरी	430
३९८	श्रीराजराजेश्वरीम्	431
३९९	श्रीरामचन्द्रो	433
४००	श्रीरामं रविकुलाब्धिसोमम्	434
४०१	श्रीलक्ष्मीवराहम्	435
४०२	श्रीवटुकनाथ	436
४०३	श्री वरलक्ष्मि नमस्तुभ्यम्	437
४०४	श्रीवल्मीकलिङ्गम्	439
४०५	श्रीवाञ्छनाथम्	440

४०६	श्रीविद्याराजगोपालम्	441
४०७	श्री विश्वनथं भजेऽहम्	442
४०८	श्रीवेङ्कटगिरीशम्	447
४०९	श्रीवेणुगोपाल	448
४१०	श्री वेणुगोपालम्	449
४११	श्रीवैद्यनाथम्	450
४१२	श्री शुक्रभगवन्तम्	451
४१३	श्री शूलिनीम्	452
४१४	श्रीसत्यनारायणम्	453
४१५	श्रीसरस्वति नमोऽस्तु ते	454
४१६	श्री सरस्वति हिते	455
४१७	श्री साम्बशिवम्	456
४१८	श्रीसुगन्धिकुन्तलाम्बिके	457
४१९	श्रीसुन्दरराजम्	458
४२०	श्रीसुब्रह्मण्याय	459
४२१	श्रीसुब्रह्मण्यो माम्	460
४२२	श्री स्वामिनाथाय	461
४२३	श्वेतगणपतिम्	462
४२४	श्वेतारण्येश्वरम्	463
४२५	षडानने	464
४२६	सकलसुरविनुत	465
४२७	सच्चिदानन्दमय	466
४२८	सदाचलेश्वरम्	467
४२९	सदाविनतसादरे	469
४३०	सदाशिवजाये	470
४३१	सदाशिवमुपास्महे	471
४३२	सदाशिवेन	472
४३३	सदाश्रये	473
४३४	सन्ततं गोविन्दराजम्	475
४३५	सन्ततं पाहि माम्	476
४३६	सन्तानगोपालकृष्णम्	477
४३७	सन्तानमञ्जरी शङ्करी	478
४३८	सन्तानरामस्वामिनम्	479
४३९	सन्तानसौभाग्य	480

४४०	सन्ध्यादेवीम्	481
४४१	सरससौवीर	482
४४२	सरसिजनाभसोदरि	483
४४३	सरस्वती छायातरङ्गिणी	484
४४४	सरस्वती मनोहरि	485
४४५	सरस्वती विधियुवती	486
४४६	सरस्वत्या भगवत्या	487
४४७	साधुजनचित्त	488
४४८	साधुजनविनुतम्	489
४४९	सामगानप्रिये	490
४५०	साम्बसदाशिवाय	491
४५१	सारङ्गरागप्रिये	492
४५२	सारसदलनयन	493
४५३	सिद्धिविनायकम्	494
४५४	सिद्धीश्वराय	495
४५५	सिंहासनस्थिते	496
४५६	सुन्दरमूर्तिमाश्रयामि	497
४५७	सुन्दरेश्वराय नमस्ते	498
४५८	सुब्रह्मण्येन रक्षितोऽहम्	499
४५९	सुब्रह्मण्यम्	500
४६०	सूर्यमूर्ते	501
४६१	सेनापते	502
४६२	सैन्धवीरागप्रिये	503
४६३	सोमसुन्दरेश्वरम्	504
४६४	सोमास्कन्दम्	505
४६५	सौन्दरराजम्	506
४६६	सौरसेनेशम्	508
४६७	स्तवराजादि	509
४६८	स्मराम्यहं सदा राहुम्	510
४६९	स्वामिनाथ	511
४७०	स्वामिनाथेन	512
४७१	हरियुवतीम्	513
४७२	हरिहरपुत्रम्	514
४७३	हस्तिवदनाय	516

४७४	हाटकेश्वर	517
४७५	हालास्यनाथम्	518
४७६	हिमगिरिकुमारि	519
४७७	हिमगिरिकुमारि ईश्वरि	520
४७८	हिमाचलकुमारीम्	521
४७९	हिरण्मयीं लक्ष्मीम्	522
४८०	हे माये	523
४८१	हेरम्बाय	524
४८२	क्षितिजारमणम्	525
४८३	ज्ञानप्रसूनाम्बिके	526
४८४	ज्ञानाम्बिके	527

१ अखिलाण्डेश्वरि रक्ष माम्

अखिलाण्डेश्वरि रक्ष माम्

रागं: जुजावन्ति (२८) ताळं: आदि

पल्लवि

अखिलाण्डेश्वरि रक्ष मां आगमसंप्रदायनिपुणे श्री

अनुपल्लवि

निखिललोकनित्यात्मिके विमले

निर्मले श्यामळे सकलकळे

चरणम्

लम्बोदर गुरुगुह पूजिते लम्बालकोद्भाविते हसिते

वाग्देवताराधिते वरदे वरशैलराजनुते? शारदे

(मध्यमकालसाहित्यम्)

जम्भारिसम्भाविते जनार्दननुते जुजावन्ति रागनुते

झल्लीमद्वळझर्झरवाद्यनादमुदिते ज्ञानप्रदे



२ अखिलाण्डेश्वर्यै नमस्ते

अखिलाण्डेश्वर्यै नमस्ते

रागं: आरभि (२९) ताळं: अदि

पल्लवि

अखिलाण्डेश्वर्यै नमस्ते

अणिमादिसिद्धीश्वर्यै नमस्ते

अनुपल्लवि

निखिलागमसन्नुतवरदायै निर्विकारायै नित्यमुक्तायै

संसारभीतिभञ्जनायै शरच्चन्द्रिकाशीतलायै

सागरमेखलायै त्रिपुरायै

चरणम्

त्रैलोक्यमोहनचक्रेश्वर्यै प्रकटयोगिन्यै

नळिन्यै परन्धामप्रकीर्तिन्यै

सर्वाशापरिपूरकचक्रेश्वर्यै गुप्तयोगिन्यै

सर्वसंक्षोभणचक्रेश्वर्यै गुप्ततरयोगिन्यै

सर्वसौभाग्यचक्रेश्वर्यै संप्रदाययोगिन्यै

सर्वार्थसाधकचक्रेश्वर्यै कुलोत्तीर्णयोगिन्यै

सर्वरक्षाकरचक्रेश्वर्यै निगर्भयोगिन्यै

सर्वरोगहरचक्रेश्वर्यै रहस्ययोगिन्यै

सर्वसिद्धिप्रदचक्रेश्वर्यै अतिरहस्ययोगिन्यै

सर्वानन्दमयचक्रेश्वर्यै परापरादिरहस्ययोगिन्यै

श्रीचिदानन्दनाथ गुरुगुहायै साधुहृदयसदृशवशिन्यै



३ अखिलाण्डेश्वरो रक्षतु

अखिलाण्डेश्वरो रक्षतु

रागं: शुद्धसावेरि (१) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

अखिलाण्डेश्वरो रक्षतु मां

हरिहयादिपूजितस्सततम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

अखिलाण्डेश्वरिसहितानन्दयुतो

आश्रितजनकल्पतरो आरक्तवर्णशोभितो

सुखतरो अखण्डैकरसपूर्णो

अखिलभुवनसाक्षिणो सच्चिदानन्दरूपिणो

सद्गुरुगुहप्रबोधिनी



४ अगस्तीश्वरम्

अगस्तीश्वरम्

रागं: ललित (१५) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

अगस्तीश्वरं अराधयेऽहं हरं सच्चिदानन्दवल्लीशम्

अनुपल्लवि

जगज्जीवेशाकरं जननविलयकरं

नगजाह्लादकरं नन्दीशं शङ्करम्

चरणम्

जलनिधिपानार्थं कलशजेनार्चितं

जलजनाभादिनुतं जाह्नवीधरं सततम्

कलिकल्मषापहं कमनीयविग्रहं

सुललित गुरुगुहजनकं रक्षितधनिकम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

जलरुहाप्तचन्द्राग्निदृशं जटाजूटमीशाद्रीशं

वलरिपुवन्दितजगदीशं वाञ्छितार्थदायकमनिशम्



५ अङ्गारकमाश्रयाम्यहम्

अङ्गारकमाश्रयाम्यहम्

रागं: सुरटि (२८) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

अङ्गारकमाश्रयाम्यहं विनताश्रितजनमन्दारं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मङ्गळवारं भूमिकुमारं वारं वारम्

अनुपल्लवि

शृङ्गारकमेषवृश्चिकराश्यधिपतिं

रक्ताङ्गं रक्ताम्बरादिधरं शक्तिशूलधरम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मङ्गळं कम्बुगळं मञ्जुळतरपदयुगळं

मङ्गळदायकमेषतुरङ्गं मकरोत्तुङ्गम्

चरणम्

दानवसुरसेवितमन्दस्मितविलसितवक्त्रं

धरणीप्रदं भ्रातृकारकं रक्तनेत्रम्

दीनरक्षकं पूजितवैद्यनाथक्षेत्रं

दिव्यौघादिगुरुगुहकटाक्षानुग्रहपात्रम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

भानुचन्द्रगुरुमित्रं भासमानसुकळत्रं

जानुस्थहस्तचित्रं चतुर्भुजमतिविचित्रम्



६ अनन्तबालकृष्ण

अनन्तबालकृष्ण

रागं: ईशमनोहरि^२ (२८) ताळं: आदि

पल्लवि

अनन्तबालकृष्ण मामव मुकुन्द श्रीहरे
वनजमुखाम्बुजपदसुमते दीनावन नगधरशौरे

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

धनञ्जयसारथे दयानिधे कृपां कुरु
मनोमयकोशात्मकामरगुरुगुहानन्द
मायामयगोकुलवासनिरञ्जन श्री



७ अन्नपूर्णे विशालाक्षि

अन्नपूर्णे विशालाक्षि

रागं: साम (२९) ताळं: आदि

पल्लवि

अन्नपूर्णे विशालाक्षि रक्ष अखिलभुवनसाक्षि कटाक्षि

अनुपल्लवि

उन्नतगर्ततीरविहारिणि ओंकारिणि दुरितादिनिवारिणि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

पन्नगाभरणराज्ञि पुराणि परमेश्वरविश्वेश्वरभास्वरि

चरणम्

पायसान्नपूरितमाणिक्यपात्रहेमदर्वीविधृतकरे

कायजादिरक्षणनिपुणतरे काञ्चनमयभूषणाम्बरधरे

(मध्यमकालसाहित्यम्)

तोयजासनादिसेवितपरे तुम्बुरुनारदादिनुतवरे^३

त्रयातीतमोक्षप्रदचतुरे त्रिपदशोभित **गुरुगुह** सादरे



^३नुतपरे

८ अभयाम्बा जगदम्बा

अभयाम्बा जगदम्बा

रागं: कल्याणि (६५) ताळं: आदि

पल्लवि

अभयाम्बा जगदम्बा रक्षतु
आत्मरूपप्रतिबिम्बा मदम्बा

अनुपल्लवि

इभवदनश्री गुरुगुह जननी ईशमायूरनाथरञ्जनी^४

(मध्यमकालसाहित्यम्)

अभयवरदपाणी अलिवेणी आश्रितमावाणी कल्याणी

चरणम्

भक्तनागलिङ्गपरिपालिनी भासमाननवरत्नमालिनी
व्यक्तसमस्तजगद्विशालिनी व्यधिकरणहरणनिपुणशूलिनी
रक्तशुक्लमिश्रप्रकाशिनी रविकोटिकोटिसङ्काशिनी
भुक्तिमुक्तिमानसनिवासिनी भावरागतालविश्वासिनी

(मध्यमकालसाहित्यम्)

भुक्तिफलप्रददक्षमृडानी भक्तिप्रदनिपुणतरभवानी
शक्तिसंप्रदायकशर्वाणी भुक्तिमुक्तिवितरणरुद्राणी



^४मयूरनाथरञ्जनी

९ अभयाम्बानायक वरदायक

अभयाम्बानायक वरदायक

रागं: केदारगौळ (२८) ताळं: आदि

पल्लवि

अभयाम्बानायक वरदायक आत्मरूपप्रकाशकावाव

अनुपल्लवि

उभयात्मक प्रपञ्चव्यापक ओंकारस्वरूपावकाशक

(मध्यमकालसाहित्यम्)

शुभकर शशोशेखर करुणाकर सुन्दर शङ्कर भक्तवशंकर

चरणम्

नीलकण्ठपूजित निर्विकल्प नीलकण्ठ भव सत्यसङ्कल्प

कालकाल सकलविश्वविकल्पजालमूल कोटिब्रह्मकल्पक-

(मध्यमकालसाहित्यम्)

पालमाल शूलधर^५ गुरुगुह जाललील फाललोचन लोक-

पाल वरदानशील शार्दूलचेल करुणालवाल रतिलोल



^५शूलधरण

१० अभयाम्बानायक हरिसायक

अभयाम्बानायक हरिसायक

रागं: आनन्दभैरवि (२०) ताळं: आदि

पल्लवि

अभयाम्बानायक हरिसायक आत्मरूपप्रकाशक अवाव

अनुपल्लवि

उभयात्मकप्रपञ्चप्रकाश धीङ्कारस्वरूपावकाशक^६

(मध्यमकालसाहित्यम्)

शुभकरकावेरीतीरस्थित सुन्दरगौरीमायूरनाथ

चरणम्

नागलिङ्गभक्ताभीष्टप्रद नादबिन्दुकलारूपास्पद

आगमादिसन्नुत पल्लवपद आनन्दभैरवीयुतपद

(मध्यमकालसाहित्यम्)

भोगमोक्षवितरणधुरीणतर भूसुरादिसंसेवित शङ्कर

त्यागराज गुरुगुहसङ्गवकर तापत्रयहर दयासुधाकर



^६स्वरूपावकाश

११ अभयाम्बायाम्

अभयाम्बायाम्

रागं: सहान (२२) ताळं: त्रिपुट

पल्लवि

अभयाम्बायां भक्तिं करोमि
सच्चिदानन्दरूपायां स्वस्वरूपायां श्री

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

विभवादिवितरणनिपुणमन्त्रिण्यां
विजयकारणनिपुणतरदण्डिन्याम्
वियदादिभूतकिरणमालिन्यां
विकल्पहरणनिपुणशूलिन्याम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

अभेदप्रतिपादितायां आदिगुरुगुहवेदितायां
सभेशमोदितनटनायां सायुज्यप्रदचरणायाम्



१२ अभयाम्बिकायाः

अभयाम्बिकायाः

रागं: केदारगौळ (२८) ताळं: झम्प

पल्लवि

अभयाम्बिकायाः अन्यं न जाने

अज्ञानध्माने^७ अपरोक्षज्ञाने

अनुपल्लवि

इभराजगत्याः ईश्वर्याः जगत्याः^८

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नभोमणिगत्याः नादलयगत्याः

चरणम्

बालादिनामधेयप्रकाशिन्याः

कालादितत्वान्तप्रकाशिन्याः

मूलादिद्वादशान्तप्रकाशिन्याः

स्थूलादिमौनान्तः प्रकाशिन्याः^९

(मध्यमकालसाहित्यम्)

त्रैलोक्यमूलप्रकृत्याः स्वशक्त्याः

सालोक्यसामीप्यसारूप्यमुक्त्याः

^७अज्ञानध्माने

^८ईश्वरगत्याः

^९मौनान्तप्रकाशिन्याः

मालिनीमन्त्रमालादि^{१०}तन्त्रोक्त्याः

शूलिनी गुरुगुह स्वानुभवगत्याः



१३ अभयाम्बिकायै

अभयाम्बिकायै

रागं: यदुकुलकाम्भोजि (२८) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

अभयाम्बिकायै अश्वारूढायै
अभयवरप्रदायै नमस्ते नमस्ते

अनुपल्लवि

सुभगाकारायै सुरुचिरनटनभेदायै
शोभितरदनायै शुद्धमानसायै

(मध्यमकालसाहित्यम्)

हिरण्यमणिकुण्डलायै हिमाचलसदनायै

चरणम्

सकलमन्त्रयन्त्ररूपायै सकलायै
चन्द्रशेखरप्रियायै पञ्चमकारायै
गूढगुल्फायै गुरुगुहस्वरूपायै

(मध्यमकालसाहित्यम्)

गर्वभण्डखण्डायै गमपदादिनुतपदायै
कावेरीतीरायै कमलेशसेवितायै



१४ अभिरामीम्

अभिरामीम्

रागं: भूषावति (६४) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

अभिरामीं अखिलभुवनरक्षकीमाश्रये

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

इभवदनश्री गुरुगुह जननीं ईशामृतघटेश्वरमोहिनीं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

अभयवरप्रदायिनीं मार्कण्डेयायुष्प्रद-

यमभयापहारिणीं ??विशुद्धिचक्रनिवासिनीम्



१५ अम्ब नीलायताक्षि

अम्ब नीलायताक्षि

रागं: नीलाम्बरि (२९) ताळं: आदि

पल्लवि

अम्ब नीलायताक्षि करुणाकटाक्षि

अखिललोकसाक्षि कटाक्षि

अनुपल्लवि

बिम्बाधरि चित्रप्रतिबिम्बाधरि बिन्दुनादवशङ्करि शङ्करि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

अम्बुजारमणसोदरि आदरि अम्बरि कादम्बरि नीलाम्बरि

चरणम्

शिवराजधानीक्षेत्रवासिनि श्रितजनविश्वासिनि

शिवकायारोहणेशोल्लासिनि चिद्रूपविलासिनि

नवयोगिनीचक्रविकासिनि नवरसदरहासिनि

सुवर्णमयविग्रहप्रकाशिनि सुवर्णमयहासिनि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

भुवनोदयस्थितिलयविनोदिनि भुवनेश्वरि क्षिप्रप्रसादिनि

नवमाणिक्यवल्लकीवादिनि भवगुरुगुहवेदिनि सम्मोदिनि



१६ अम्बिकायाः अभयाम्बिकायाः

अम्बिकायाः अभयाम्बिकायाः

रागं: केदारम् (२९) ताळं: आदि

पल्लवि

अम्बिकायाः अभयाम्बिकायाः तव दासोऽहं

आदिजगदम्बिकायाः

अनुपल्लवि

शम्बरारिहरिशशिकुबेरप्रमुखोपासितनवयोगिन्याः

सांख्यातारकमनस्कराजयोगिन्याः शिवभोगिन्याः

बिम्बप्रतिबिम्बरूपिण्याः बिन्दुमण्डलवासिन्याः^{१२} स्वरूपिण्याः

चरणम्

यमनियमाद्यष्टाङ्गयोगविषयादिनिग्रहकरण -

मूलाधारमणिपूरकाद्यब्जभेदनस्फुरकुण्डलिनी -

सहस्रदळब्रह्मरन्ध्रस्थकमलान्तर्गतशिवसम्मेलन -

गळितपरमामृतबिन्दुसेचनसमुज्जृम्भित -

नाडीमुखविकासकरणनिजानुभूतियोगिन्याः

(मध्यमकालसाहित्यम्)

अमोघवरशिव^{१३}सारूप्यानन्दानुभवप्रदायिन्याः

^{१२}निवासिन्याः

^{१३}परशिव

अप्रमेय गुरुगुहा दिजनन्याः ब्रह्मादिपञ्चकारिण्याः



अरुणाचलनाथम्

रागं: सारङ्गा (६५) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

अरुणाचलनाथं स्मरामि अनिशं

अपीतकुचाम्बासमेतम्

अनुपल्लवि

स्मरणात्कैवल्यप्रदचरणारविन्दं

तरुणादित्यकोटिसंकाशचिदानन्तं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

करुणारसादिकन्दं शरणागतसुरबृन्दम्

चरणम्

अप्राकृततेजोमयलिङ्गं अत्यद्भुतकरधृत सारङ्गं

अप्रमेयमपर्णाब्जभृङ्गं आरूढोत्तुङ्गवृषतुरङ्गम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

विप्रोत्तमविशेषान्तरङ्गं वीरगुरुगुह तारप्रसङ्गं

स्वप्रदीपमौलिविधृतगङ्गं स्वप्रकाशजितसोमाग्निपतङ्गम्



१८ अर्द्धनारीश्वरम्

अर्द्धनारीश्वरम्

रागः कुमुदक्रिय (५१) ताळः रूपकम्

पल्लवि

अर्द्धनारीश्वरं आराधयामि सततं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

अत्रिभृगुवसिष्ठादिमुनिबृन्दवन्दितं श्री

अनुपल्लवि

अर्धयाम अलंकारविशेषप्रभावं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

अर्धनारीश्वरीप्रियकरं अभयकरं शिवम्

चरणम्

नागेन्द्रमणिभूषितं नन्दितुरगारोहितं

श्री गुरुगुह पूजितं कुमुदक्रिया रागनुतम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

आगमादिसन्नुतं अनन्तवेदघोषितं

अमरेशादिसेवितं आरक्तवर्णशोभितम्



१९ अव्याजकरुणाकटाक्षि

अव्याजकरुणाकटाक्षि

रागं: सालङ्गनाट (१५) ताळं: त्रिपुट

पल्लवि

अव्याजकरुणाकटाक्षि अनिशं मामव कामाक्षि

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

रव्यादिनवग्रहोदयेर ^{१४} सालङ्गनाट कक्रिये

दिव्यालंकृताङ्गाश्रये ^{१५} दीनावन गुरुगुह प्रिये

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सव्यापसव्यमार्गस्थे सद नमस्ते शुकहस्ते



^{१४} सारङ्ग

^{१५} दिव्यालंकृताङ्गाश्रिये

२० अक्षयलिङ्गविभो

अक्षयलिङ्गविभो

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

अक्षयलिङ्गविभो स्वयम्भो
अखिलाण्डकोटिप्रभो पाहि शंभो

अनुपल्लवि

अक्षयस्वरूप अमितप्रताप आरूढवृषवाह^{१६} जगन्मोह
(मध्यमकालसाहित्यम्)

दक्षशिक्षण दक्षतरसुरलक्षण विधिविलक्षण लक्ष्यलक्षण
बहुविचक्षण सुधाभक्षण गुरुकटाक्षवीक्षण

चरणम्

बदरीवनमूलनायिकासहित भद्रकाळीश भक्तविहित
मदनजनकादिदेवमहित मायाकार्यकलनारहित
सदय गुरुगुह^{१६} तात गुणातीत साधुजनोपेत शङ्करनवनीत-
हृदयविभात तुम्बुरुसङ्गीत ह्रींकारसंभूत हेमगिरिनाथ
(मध्यमकालसाहित्यम्)

सदाश्रितकल्पकमहीरुहपदाम्बुज भव रथगजतुरग-

^{१६}आरूढवृषवाहो

पदातिसंयुतचैत्रोत्सव सदाशिव सच्चिदानन्दमय



२१ आञ्जनेयम्

आञ्जनेयम्

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: तिश्र एकम्

नोटुस्वर साहित्यम्

आञ्जनेयं सदा भावयामि अप्रमेयं मुदा चिन्तयामि
अञ्जनानन्दनं वानरेशं वरं पञ्चवक्त्रं सुरेशादिवन्द्यम्
गुरुगुहहितं शान्तं सदासेवितश्रीरामपादपङ्कजं
सञ्जीविपर्वतकरं मुखाब्जं सदा रामचन्द्रदूतं भजे



२२ आदिपुरीश्वरम्

आदिपुरीश्वरम्

रागं: आरभि (२९) ताळं: आदि

पल्लवि

आदिपुरीश्वरं सदा भजेऽहं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

त्रिपुरसुन्दरीसमेत^{१७}वरगुरुगुहजनकं वन्दितमुनिसमूहम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

विधिहरिपूजितत्यागराजाङ्गं आदित्यकोटिप्रकाशलिङ्गं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नन्दिपूजितस्वयम्भुलिङ्गं नागकवचधरसैकतलिङ्गम्



^{१७}समेतं

२३ आनन्दनटनप्रकाशम्

आनन्दनटनप्रकाशम्

रागं: केदारम् (२९) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

आनन्दनटनप्रकाशं चित्सभेशं

आश्रयामि शिवकामवल्लरीशम्

अनुपल्लवि

भानुकोटिकोटिसंकाशं

भुक्ति^{१८}मुक्तिप्रददहराकाशम्

दीनजनसंरक्षणचणं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

दिव्यपतञ्जलिव्याघ्रपाददर्शितकुञ्जिताब्जचरणम्

चरणम्

शीतांशुगङ्गाधरं नीलकन्धरं

श्री केदारा दिक्षेत्राधारम्

भूतेशं शार्दूलचर्माम्बरं चिदम्बरं

भूसुरत्रिसहस्रमुनीश्वरं विश्वेश्वरम्

नवनीतहृदयं सदय गुरुगुह तातमाद्यं

वेदवेद्यं वीतरागिणमप्रमेयाद्वैतप्रतिपाद्यं

^{१८}भक्ति

सङ्गीतवाद्यविनोदताण्डवजातबहुतरभेदचोद्यम्



२४ आनन्दामृताकर्षिणि

आनन्दामृताकर्षिणि

रागं: अमृतवर्षणि (६६) ताळं: आदि

पल्लवि

आनन्दामृताकर्षिणि अमृतवर्षणि

हरादिपूजिते शिवे भवानि

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

श्रीनन्दनादि संरक्षिणि श्रीगुरुगुहजननि चिद्रूपिणि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सानन्दहृदयनिलये सदये सद्यस्सुवृष्टिहेतवे त्वाम्

सन्ततं चिन्तये अमृतेश्वरि सलिलं वर्षय वर्षय वर्षय



आनन्देश्वरेण

रागं: आनन्दमैरवि (२०) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

आनन्देश्वरेण संरक्षितोऽहं

चिदानन्दरूपोऽस्मि^{१९} ब्रह्मानन्दरूपोऽस्मि

अनुपल्लवि

ज्ञानप्रदानगुरुगुह रूप-

चिदानदनाथस्वरूपप्रकाशेन

चरणम्

अवयवत्रयातीतेन नित्येन

अवस्थात्रयसाक्षिणाऽतिशुद्धेन

भवपञ्चकोशव्यतिरिक्तेन बुद्धेन

(मध्यमकालसाहित्यम्)

शिवसच्चिदानन्दरूपेण मुक्तेन

श्रवणमनननिदिध्यासनसमाधिनिष्ठापरोक्षानु-

भवस्वमात्रावशेषितप्रकाशमानमहेश्वरेण



^{१९}नित्यानन्दरूपोऽस्मि

२६ आर्या अभयाम्बाम्

आर्या अभयाम्बाम्

रागः भैरवि (२०) ताळः त्रिपुट^{२०}

पल्लवि

आर्या अभयाम्बां भजरे रे चित्त सन्ततं
अविद्याकार्यकलनां त्यज रे

(मध्यमकालसाहित्यम्)

आदिमध्यान्तरहितां शिवसहिताम्

अनुपल्लवि

सूर्याग्निचन्द्रमण्डलमध्यवासिनीं
सुखतरप्रवर्त्तिनीं स्वेतरनिवासिनीम्
आचार्यशिष्यानुग्रहकरणशक्तिप्रदापारकरुणां

(मध्यमकालसाहित्यम्)

चर्यादिचतुष्टयवितरणसमर्थतरचरणां अरुणाम्

चरणम्

नन्दनवनोत्पादनपुष्पमालिकां
वन्दनालयादिप्रस्थापनदिव्य -
चन्दनाकर्षण^{२१}स्थलशुद्धिकरण -
वन्दनस्तोत्रादिपठनभक्तसेवानाम्

^{२०}अट

^{२१}चन्दनघर्षण, चन्दनकर्षण

मन्दधीहरणचर्यायुतमानवानां धर्ममय-

स्वच्छन्दशिवसालोक्य^{२२}दायकचतुरतरहरनटभैरवीं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मन्दस्मितविलसितमुखारविन्दां गुरुगुहाम्बिकां

मुकुन्दसोदरीं महात्रिपुरसुन्दरीमानन्दलहरीम्



२७ ईशानादिशिवाकारमञ्चे

ईशानादिशिवाकारमञ्चे

रागं: सहान (२२) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

ईशानादिशिवाकारमञ्चे

शिवकामेश्वरवामाङ्कस्थे नमस्ते नमस्ते गौरी

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

श्रीशारदासंसेवितपार्श्वयुगळे

शृङ्गारकळे विनतश्यामळाबगळे^{२३}

दुराशापहधुरीणतरसरसिजपदयुगळे

मुरारिगुरुगुहादिपूजितपूर्णकळे सकळे

(मध्यमकालसाहित्यम्)

पाशाङ्कुशेक्षुकार्मुकपञ्चसुमबाणहस्ते

देशकालवस्तुरूपदिव्यचक्रमध्यस्थे



^{२३}श्यामळबगळे, श्यामबगळे

२८ उच्छिष्टगणपतौ

उच्छिष्टगणपतौ

रागं: काशीरामक्रिय (५१) ताळं: आदि

पल्लवि

उच्छिष्टगणपतौ भक्तिं कृत्वोन्नतपदवीं

व्रज रे रे हृदय

अनुपल्लवि

सच्छब्दवाच्यस्वरूपिणि शबळीकृतब्रह्मस्वरूपिणि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

चिच्छक्तिस्फूर्तिस्वरूपिणि चिदानन्दनाथस्वरूपिणि^{२४}

चरणम्

नारीयोनिमुखास्वादने नगन रामक्रिया मोदने

भेरिवीणावेणुवादने भेदाज्ञानध्वान्तसूदने

(मध्यमकालसाहित्यम्)

शौरिनुते नत गुरुगुहमदने सूरिजनयुतश्रीपुरसदने

दूरीकृतमहादुरितकदने गौरीशनन्दने गजवदने



^{२४}नादस्वरूपिणि

२९ एकदन्तं भजेऽहम्

एकदन्तं भजेऽहम्

रागं: बिलहरि (२९) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

एकदन्तं भजेऽहं एकानेकफलप्रदम्

अनुपल्लवि

पाकशासनाराधितं पामरपण्डितादिनुतपदम्

चरणम्

कैलासनाथकुमारं कार्तिकेयमनोहरं

हालास्यक्षेत्रवेगवतीतटविहारं हरम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कोलाहल गुरुगुह सहितं कोटिमारलावण्यहितं

मालाकङ्कणादिधरणं माषावल्लभाम्बारमणम्



एकाम्रनाथाय

रागं: वीरवसन्तम् (२४) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

एकाम्रनाथाय नमस्ते एकानेकफलदाय

अनुपल्लवि

पाकशासनादिदेववन्दिताय वरदाय

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मूकमुख्यवाक्प्रदाय मूलकन्दमुक्तिदाय

चरणम्

कामाक्षिमोहिताय कामितफलनिपुणाय

कुमारगुरुगुहात्मजाय करविधृतकुरङ्गाय

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कामजनकपूजिताय कमनीयकन्धराय

काञ्चीपुरिविलसिताय कलिकल्मषविनाशाय



३१ एकाम्रनाथाय नमस्ते

एकाम्रनाथाय नमस्ते

रागं: मुखारि (२०) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

एकाम्रनाथाय नमस्ते नमस्ते श्री

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

पाकशासनादिसकलदेवबृन्दसन्नुताय

परशिवतत्वबोधितपरमशान्तस्वरूपाय

मूकमुख्यवाक्प्रदाय मूलकन्दमुक्तिदाय

कामाक्षीसमेताय गणपतिगुरुगुहसुताय



३२ एकाम्रनाथेश्वरेण

एकाम्रनाथेश्वरेण

रागं: चतुरङ्गिणि (६६) ताळं: आदि

पल्लवि

एकाम्रनाथेश्वरेण संरक्षितोऽहं श्री

अनुपल्लवि

मूकमुख्यवाक्प्रदनिपुणेन मुनिगणादिगुरुगुहसन्नुतेन

(मध्यमकालसाहित्यम्)

पाकशासनादिपूजितवरपञ्चाक्षरस्वरूपेण

चरणम्

काञ्चीपुरविलसितप्रभावेन पञ्चभूतात्मकेन शिवेन

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वाञ्छितार्थप्रदेन चतुरङ्गबलेश्वरीमोहिताकारेण



३३ एकाम्रनाथं भजेऽहम्

एकाम्रनाथं भजेऽहम्

रागं: गमकक्रिया (५३) ताळं: आदि

पल्लवि

एकाम्रनाथं भजेऽहं एकानेकफलप्रदं श्री

अनुपल्लवि

ओंकाररूपं शिवं ओषधिमूलं वरं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कालकालं हरं^{२५} कर्मभेदहरं

ज्ञानरूपसुतं गुरुगुह^{२६}नुतम्

चरणम्

पञ्चाक्षरमन्त्ररूपं प्रसन्नरूपं

प्रपञ्चातीतसद्योजातादिपञ्चमुखं सुमुखं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

प्रकटितकामकोटिपीठस्थितं

प्रसिद्धमूकादिनुतकामाक्षीसहितम्



^{२५}कालकालहरं

^{२६}गुरुगुहमुदम्

३४ एकाम्नेशनायकीम्

एकाम्नेशनायकीम्

रागं: चामरम् (५६) ताळं: अदि

पल्लवि

एकाम्नेशनायकीं ईश्वरीं भज रे रे मानस

अनुपल्लवि

मूकमुख्यवाक्प्रदायिनीं मुक्तिप्रदगुरुगुहपालिनीम्

चरणम्

काञ्चीनगरनिवासिनीं कैवल्यप्रदायिनीं नलिनीं

कलिकल्मषनाशिनीं प्रपञ्चप्रकाशिनीं भक्तविश्वासिनीम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वाञ्छितफलदायिनीं सदानन्दविलासिनीं शम्भुमोहिनीं

पञ्चदशाक्षरीं प्रसिद्धकामेश्वरीं कञ्जलोचनीम्



३५ एकाम्नेशनायिके

एकाम्नेशनायिके

रागं: शुद्धसावेरि (१) ताळं: आदि

पल्लवि

एकाम्नेशनायिके शिवे श्रीकामाक्षि पाहि माम्

अनुपल्लवि

एकाम्नेशगृहेश्वरि शङ्करि शातोदरि सङ्गतवशंकरि

चरणम्

कामजनकमोहितपूर्णफले कामकले विमले करकमले

(मध्यमकालसाहित्यम्)

पामरजनपालिनि गुरुगुहजननि शुद्धसावेरिनुतनन्दिनि



३६ एहि अन्नपूर्णे

एहि अन्नपूर्णे

रागं: पुन्नागवराळि (८) ताळं: आदि

पल्लवि

एहि अन्नपूर्णे सन्निदेहि सदा पूर्णे सुवर्णे

अनुपल्लवि

पाहि पञ्चाशद्वर्णे श्रियं देहि रक्तवर्णे अपर्णे

चरणम्

काशीक्षेत्रनिवासिनि कमललोचनविशालिनि वि-
श्वेशमनोल्लासिनि जगदीश गुरुगुह पालिनि विद्म

(मध्यमकालसाहित्यम्)

पाशिनि पुन्नागवराळि प्रकाशिनि षट्त्रिंशत्तत्त्ववि-
कासिनि सुवासिनि भक्तविश्वासिनि चिदानन्दविलासिनि



३७ कञ्जदळायताक्षि

कञ्जदळायताक्षि

रागं: कमलामनोहरि (३३) ताळं: आदि

पल्लवि

कञ्जदळायताक्षि कामाक्षि

कमलामनोहरि त्रिपुरसुन्दरि

अनुपल्लवि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कुञ्जरगमने मणिमण्डितमञ्जुळचरणे

मामव शिवपञ्जरशुकि पङ्कजमुखि

गुरुगुहरञ्जनि दुरितभञ्जनि निरञ्जनि

चरणम्

राकाशशिवदने सुरदने रक्षितमदने रत्नसदने

श्रीकाञ्चनवसने^{२७} सुरसने शृङ्गाराश्रयमन्दहसने

(मध्यमकालसाहित्यम्)

एकानेकाक्षरि भुवनेश्वरि एकानन्दामृतझरि भास्वरि

एकाग्रमनोलयकरि श्रीकरि एकाम्नेशगृहेश्वरि शङ्करि



^{२७}काञ्चीनिवसने, काञ्चीसदने

३८ कनकसभापतिम्

कनकसभापतिम्

रागं: माळवश्री (२२) ताळं: अदि

पल्लवि

कनकसभापतिं भज रे मानस
कमनीयचिदम्बरपुरीविलसितम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

सनकसनन्दनादिविनुतपदं शिवकामेश्वरीमनोल्लासकरं
(मध्यमकालसाहित्यम्)

दिनकरचन्द्राग्निलोचनं दीनार्तिहरं गुरुगुहमुदितम्



३९ कनकाम्बरि

कनकाम्बरि

रागं: कनकाम्बरि (१) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

कनकाम्बरि कारुण्यामृतलहरि

कामाक्षि मामव कामेश्वरि

अनुपल्लवि

दिनकरचन्द्रतेजःप्रकाशकरि देवि महात्रिपुरसुन्दरि शङ्करि

चरणम्

त्रैलोक्यमोहनादिचक्रेश्वरि त्रैपदब्रह्ममहिषि भास्वरि

सालोकादिमुक्तिप्रदानकरि सदाशिवकरि गुरुगुहो दयकरि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मूलादिनवाधारेश्वरि शुभकरि नीलालकधरि नित्यानन्दकरि

लीलाविश्वोत्पत्तिस्थितिलयकरि बाला परमेश्वरि पञ्चदशाक्षरि



४० कमलाम्बा संरक्षतु माम्

कमलाम्बा संरक्षतु माम्

(प्रथमावरणकीर्तनम्)

रागं: आनन्दभैरवि (२०) ताळं: तिश्र त्रिपुट

पल्लवि

कमलाम्बा संरक्षतु मां हृत्कमलानगरनिवासिनी अम्ब

अनुपल्लवि

सुमनसाराधिताब्जमुखी सुन्दरमनःप्रियकरसखी

कमल जानन्द बोधसुखी कान्तातारपञ्जरशुकी

चरणम्

त्रिपुरादिचक्रेश्वरी अणिमादिसिद्धीश्वरी

नित्यकामेश्वरी क्षितिपुरत्रैलोक्यमोहनचक्रवर्तिनी

प्रकटयोगिनी सुररिपुमहिषासुरादिमर्दिनी

निगमपुराणादिसंवेदिनी

(मध्यमकालसाहित्यम्)

त्रिपुरेशी गुरुगुह जननी त्रिपुरभञ्जनरञ्जनी

मधुरिपुसहोदरी तलोदरी त्रिपुरसुन्दरी महेश्वरी



४१ कमलाम्बां भज रे

कमलाम्बां भज रे

(द्वितीयावरणकीर्तनम्)

रागं: कल्याणि (६५) ताळं: आदि

पल्लवि

कमलाम्बां भजरे रे मानस कल्पितमायाकार्यं त्यज रे

अनुपल्लवि

कमलावाणीसेवितपाश्चां कम्बुजयग्रीवां नतदेवां^{२८}

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कमलापुरसदनां मृदुगदनां कमनीयरदनां कमलवदनाम्

चरणम्

सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिनीं परमशिवकामिनीं

दूर्वासार्चितगुप्तयोगिनीं दुःखध्वंसिनीं हंसिनीम्

निर्वाणनिजसुखप्रदायिनीं नित्य कल्याणीं कात्यायनीं

शर्वाणीं मधुपविजयवेणीं सद् गुरुगुह जननीं निरञ्जनीम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

गर्वितभण्डासुरभञ्जनीं कामाकर्षिण्यादिरञ्जनीं

निर्विशेषचैतन्यरूपिणीं उर्वीतत्वादिस्वरूपिणीम्



४२ कमलाम्बिकायास्तव भक्तोऽहम्

कमलाम्बिकायास्तव भक्तोऽहम्

(षष्ठ्यावरणकीर्तनम्)

रागं: पुन्नागवराळि (८) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

कमलाम्बिकायास्तव भक्तोऽहं

शङ्कर्याः श्रीकर्याः सङ्गीतरसिकायाः श्री

अनुपल्लवि

सुमशरेक्षुकोदण्डपाशाङ्कुशपाण्याः

अतिमधुरतरवाण्याः शर्वाण्याः कल्याण्याः

(मध्यमकालसाहित्यम्)

रमणीयपुन्नागवराळि विजितवेण्याः श्री

चरणम्

दशकलात्मकवह्निस्वरूपप्रकाशान्तर्दशार-

सर्वरक्षाकरचक्रेश्वर्याः त्रिदशादिनुत-

कचवर्गद्वयमयसर्वज्ञादिदशशक्तिसमेत-

मालिनीचक्रेश्वर्याः त्रिदशविंशद्वर्ण-

गर्भिणीकुण्डलिन्याः दशमुद्रासमाराधितकौळिन्याः

(मध्यमकालसाहित्यम्)

दशरथादिनुत गुरुगुहजनकशिवबोधिन्याः

दशकरणवृत्तिमरीचिनिगर्भयोगिन्याः श्री



४३ कमलाम्बिकायै

कमलाम्बिकायै

(चतुर्थावरणकीर्तनम्)

रागं: काम्भोजि (२८) ताळं: अट

पल्लवि

कमलाम्बिकायै कनकांशुकायै
कर्पूरवीटिकायै नमस्ते नमस्ते

अनुपल्लवि

कमलाकान्तानुजायै कामेश्वर्यै अजायै
हिमगिरितनुजायै ह्रींकरपूज्यायै
(मध्यमकालसाहित्यम्)

कमलानगरविहारिण्यै खलसमूहसंहारिण्यै
कमनीयरत्नहारिण्यै कलिकल्मषपरिहारिण्यै

चरणम्

सकलसौभाग्यदाय काम्भोज चरणायै
संक्षोभिण्यादिशक्तियुतचतुर्थावरणायै
प्रकटचतुर्दशभुवनभरणायै
प्रबल गुरुगुह संप्रदायान्तःकरणायै
अकळङ्करूपवर्णायै अपर्णायै सुपर्णायै
सुकरधृतचापबाणायै शोभनकरमनुकोणायै

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सकुङ्कुमादिलेपनायै चराचरादिकल्पनायै

चिकुरविजितनीलघनायै चिदानन्दपूर्णघनायै



कमलाम्बिके

(नवावरणध्यानकीर्तनम्)

रागं: तोडि (८) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

कमलाम्बिके आश्रितकल्पलतिके चण्डिके
कमनीयारुणांशुके करविधृतशुके मामव^{२९}

अनुपल्लवि

कमलासनादिपूजितकमलपदे बहुवरदे
कमलालयतीर्थवैभवे शिवे करुणार्णवे

चरणम्

सकललोकनायिके सङ्गीतरसिके
सुकवित्त्वप्रदायिके सुन्दरि गतमायिके
विकळेबरमुक्तिदाननिपुणे अघहरणे
वियदादिभूतकिरणे विनोदचरणे अरुणे

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सकळे गुरुगुह^{२९}करणे सदाशिवान्तःकरणे
अकचटतपादिवर्णे अखण्डैकरसपूर्णे



^{२९}मामव जगदम्बिके

४५ कमलासनवन्दित

कमलासनवन्दित

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: चतुरश्र एकम्

नोटुस्वर साहित्यम्

कमलासनवन्दितपादाब्जे कमनीयकरोदयसाम्राज्ये
कमलानगरे सकलाकारे कमलनयनधृतजगदाधारे
कमले विमले गुरुगुहजननि कमलापतिनुतहृदये माये
कमलशशिविजयवदनेऽमेये कमलेन्द्राणीवाग्देवीश्री-
गौरीपूजितहृदयानन्दे कमलाक्षि पाहि कामाक्षि
कामेश्वरवरसति कल्याणि



४६ करिकळभमुखम्

करिकळभमुखम्

रागं: सावेरि (१५) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

करिकळभमुखं ढुंढिगणेशं भज रे रे चित्त
कावेरीतटस्थितं सावेरी रागनुतम्

अनुपल्लवि

हरिहयादिसकलदेवताराधितपदाम्बुजं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

गिरिजातनुजं विजितमनसिजं गुरुगुहाग्रजम्

चरणम्

मूलाधारचतुर्दळपङ्कजमध्यस्थं

मोदकहस्तं मुनिजनहृत्कमलस्थम्

फालचन्द्रं सुमुखं करुणासान्द्रं

पाशाङ्कुशधरं पद्मकरं सुन्दरम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नीलग्रीवसुकुमारं नीरदशोभाहरं

पालितभक्तं धीरमपारं वारं वारम्



४७ कलावती कमलासनयुवती

कलावती कमलासनयुवती

रागं: कलावति (३१) ताळं: आदि

पल्लवि

कलावती कमलासनयुवती

कल्याणं कलयतु सरवती

अनुपल्लवि

बलाबलामन्त्रार्णरूपिणी भारती मातृकाशरीरिणी

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मलाळिविदारिणी वाग्वाणी मधुकरवेणी वीणापाणी

चरणम्

शरद्ज्योत्स्नाशुभ्राकारा शशिवदना काश्मीरविहारा

परा शारदा पराऽङ्कुशधरा वरदाभयपाशपुस्तककरा

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सुरार्चितपदाम्बुजा शोभना श्वेतपङ्कजासना सुरदना

पुरारिगुरुगुहहृदयरञ्जनी मुरारिस्रुषा निरञ्जनी



४८ काञ्चीशम्

काञ्चीशम्

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: तिश्र एकम्

नोटुस्वर साहित्यम्

काञ्चीशमेकाम्रनायकं नित्यमहं भजे

कामादिषट्चोरवृत्तिमहं त्यजे

पञ्चाक्षररूपमागमान्तसारं

पञ्चास्यमादिकारणं विश्वेश्वरं गुरुगुहम्



४९ कादम्बरीप्रियायै

कादम्बरीप्रियायै

रागं: मोहनम् (६५) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

कादम्बरीप्रियायै कदम्बकाननायै नमस्ते नमस्ते

अनुपल्लवि

माधुर्यवाक्प्रदनिपुणायै मधुकैटभभञ्जनायै

चरणम्

सदाचारप्रवर्तकायै सन्नुत गुरुगुह वैभवायै

(मध्यमकालसाहित्यम्)

विधितोषितसोमसुन्दरेश्वरसं मोहन कर्यै श्री



५० कामकोटिपीठवासिनि

कामकोटिपीठवासिनि

रागं: सौगन्धिनि (३७) ताळं: आदि

पल्लवि

कामकोटिपीठवासिनि सौगन्धिनि

मामव गुरुगुह जननि रञ्जनि

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

सामगानलोले श्रीबाले सद्गुणशीले कृपालवाले

(मध्यमकालसाहित्यम्)

श्यामळेऽतिकोमळेऽतिललिते

सकलभुवनजननि दुरितभञ्जनि



५१ कामाक्षि कामकोटि

कामाक्षि कामकोटि

रागं: सुमद्युति (५७) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

कामाक्षि कामकोटिपीठवासिनि मामव

अनुपल्लवि

कौमारि कुसुमद्युति हेमाभरणभूषणि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

समस्तसाम्राज्यदायिनि सद्गुरुगुहजननि

चरणम्

कमलेशसोदरि कमलाक्षि नारायणि

नादबिन्दुकलास्वरूपिणि कात्यायनि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कामकलाप्रदर्शिनि कल्याणगुणशालिनि



५२ कामाक्षि मां पाहि

कामाक्षि मां पाहि

रागं: शुद्धदेशि (२२) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

कामाक्षि मां पाहि करुणानिधे शिवे

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

कामकोटिपीठवासिनि गुरुगुह विश्वासिनि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कामादिफलप्रदे विशुद्धिचक्र^{३०}स्थिते

अति शुद्धदेशि रागनुते सकले सुरविनुते



५३ कामाक्षि वरलक्ष्मि

कामाक्षि वरलक्ष्मि

रागं: बिलहरि (२९) ताळं: आदि

पल्लवि

कामाक्षि वरलक्ष्मि कमलाक्षि जयलक्ष्मि श्री

अनुपल्लवि

कामजनकपूर्णफले सकले कामितार्थदायिनि^{३१} श्रीफले

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कामकले विमले करकमले कामकोटि बिलहरि नुतकमले

चरणम्

दिनकरकोटिप्रकाशकाये देदीप्यमानदिव्यच्छाये

वनजासनादिवन्दितमाये वासुदेवपरब्रह्मजाये

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मननध्यानध्यातृध्येये महनीयसाम्राज्यप्रदाये

सनकनन्दनादिभिर्ज्ञेये सरस गुरुगुह सहाये



^{३१}प्रदायिनि

५४ कामाक्षीं कल्याणीम्

कामाक्षीं कल्याणीम्

रागं: कल्याणि (६५) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

कामाक्षीं कल्याणीं भजेऽहं भजे

अनुपल्लवि

कामकोटिपीठवासिनीं निरञ्जनीम्

चरणम्

सामरस्य संप्रदायकुलोत्तीर्णयोगिनीं

संसारभयभञ्जनीं चिदानन्दविलासिनीम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कमलेशादिपालिनीं कञ्जदळलोचनीं

कुमारगुरुगुहजननीं सम्पत्करीं धनिनीम्



५५ कामेश्वरेण

कामेश्वरेण

रागं: श्री (२२) ताळं: आदि

पल्लवि

कामेश्वरेण संरक्षितोऽहं गणपति गुरुगुहादिकारणेन

अनुपल्लवि

कमलेशकृतकन्यकादानेन करुणामृतरसप्रवाहेन

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कामेश्वरिपाणिग्रहणेन कामादिमुक्तिकर^{३२}यशस्केन

चरणम्

अरुणकिरणकोटिप्रकाशेन अणिमाद्यष्टैश्वर्यप्रदेन

भेरीवीणादिगानलोलेन भागवतप्रमुखादिनुतेन

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वरलाजहोमादिप्रदक्षिणवसुमिश्रितपुष्पवर्षितेन

पुराणपुरुषपुरुहूतादिपूजितरत्नमण्डपस्थितमुदेन



५६ कायारोहणेशम्

कायारोहणेशम्

रागं: देवगान्धारम् (२२) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

कायारोहणेशं भज रे रे मानस

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कलिकल्मषापहं शिवराजधानिक्षेत्रस्थितम्

अनुपल्लवि

भयापहं दिक्कालकादिविनुतमहेश्वरं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मायामयजगदाधारं गुरुगुहो पचारम्

चरणम्

नीलायताक्षीमनोल्लासकरणं

नित्यशुद्धसत्वगुणं भुक्तिमुक्तिप्रदनिपुणम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

पालितभक्तं पञ्चाननं प्रणतगजाननं

बालचन्द्रशेखरं भवपाशमोचनं त्रिनयनम्



५७ कालभैरवम्

कालभैरवम्

रागं: भैरवम् (१६) ताळं: आदि

पल्लवि

कालभैरवं भजेऽहमनिशं काशीपुरवासं भूतेशम्

अनुपल्लवि

शूलचक्रपाशदण्डहस्तं शोकमोहवारणप्रशस्तम्

चरणम्

नारदादिनुतश्यामगात्रं नागयज्ञसूत्रविचित्रं

क्रूरतरपापदण्डनचतुरं गुरुगुहप्रियकरं दिगम्बरम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वारिजासनास्यकृन्तनं वाञ्छितार्थफलदानचिन्तनं

धीरतरं विधिकपालधरणं देवराजसेविताब्जचरणम्



५८ काशीविशालाक्षीम्

काशीविशालाक्षीम्

रागं: गमकक्रिया (५३) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

काशीविशालाक्षीम् भजेऽहं भजे श्री-

अनुपल्लवि

काशीविश्वेश्वरमनोल्लासकारिणीं

करुणारसलहरीं गुरुगुह विश्वासिनीम्

चरणम्

काशीपुरवासिनीं कामितफलदायिनीं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कलिकल्मषनाशिनीं गन्धर्वघोषितगमकक्रियामोदिनीम्

पाशमोचनीं कपालशूलिनीं पन्नगवेणीम्

दासजनमुकुन्दवरप्रदायिनीम्



५९ काशीविश्वेश्वर

काशीविश्वेश्वर

रागं: काम्भोजि (२८) ताळं: अट

पल्लवि

काशीविश्वेश्वर एहि मां पाहि
करुणानिधे सन्निधेहि मुदं देहि

अनुपल्लवि

काशीक्षेत्रसदृशाधिकफलदगर्ततीरवास भक्तविश्वास
(मध्यमकालसाहित्यम्)

देशिककटाक्षेण दर्शितदेवतासार्वभौम
महादेव देव देवनुत देवराजपूजित दक्षिण

चरणम्

भवरोगचतुरवैद्यलिङ्गविभो भद्रदाय काम्भोज करविभो
कुवलयादिपञ्चवदनस्वयभो कुष्टरोगापहगर्ततीर्थशम्भो
रविशशिवह्निनेत्र सुचरित्र विशालाक्षीकलत्र
कविजनादिसन्नुतिपात्र कमनीयगात्र चिन्मात्र
(मध्यमकालसाहित्यम्)

भुवनभरण भूतगणपते भवहर नतविधि श्रीपते
शिव गुरुगुह जनक पशुपते नवमणिविलसितचित्सभापते



६० कुमारस्वामिनम्

कुमारस्वामिनम्

रागं: असावेरि (८) ताळं: आदि

पल्लवि

कुमारस्वामिनं गुरुगुहं नमामि पदसरोरुहमहं श्री

अनुपल्लवि

हिमाद्रिजासुतं सुरपतिनुतं हिरण्यमणिकुण्डलालङ्कृतम्
(मध्यमकालसाहित्यम्)

भ्रमात्मकविश्वकरं सुरवरं भ्रान्तिहरचतुरतरं शुभकरम्
चरणम्

कार्तिकेयं बाहुलेयं काञ्चनमयदेहं शिखिवाहं
कार्तस्वरहारं श्रुतिसारं गर्वितशूरादिसंहारम्
(मध्यमकालसाहित्यम्)

पूर्तिविद्याप्रदं तत्पदं मूर्तिकरं मूलाज्ञानहरं
कीर्तिशालिनं विनतशूलिनं आर्तिभञ्जनमशेषरञ्जनम्



६१ कुम्भेश्वराय नमस्ते

कुम्भेश्वराय नमस्ते

रागं: कल्याणि (६५) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

कुम्भेश्वराय नमस्ते

श्रीमङ्गळाम्बासमेताय नमस्ते नमस्ते

अनुपल्लवि

तुम्बुरुनारदसन्नुतचरणाय उत्तुङ्गकमनीयवृषभारोहिताय

(मध्यमकालसाहित्यम्)

अम्बुधिकावेरीतीरस्थितसुखकराय शङ्कराय

चरणम्

कुमारगुरुगुहपूजिताय उमारमणाय

महेश्वराय हेमगिरिपीठस्थिताय

(मध्यमकालसाहित्यम्)

चर्माम्बरशशिशेखराय निर्मलहृदयविलसिताय

नित्यशुद्धबुद्धमुक्ताय नित्योत्सवनिरञ्जनाय



६२ कुम्भेश्वराय नमस्ते

कुम्भेश्वराय नमस्ते

रागं: केदारम् (२९) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

कुम्भेश्वराय नमस्ते श्रीमङ्गळाम्बासहिताय

अनुपल्लवि

मानित गुरुगुह वन्दिताय कुम्भजपूजितपङ्कजचरणाय

चरणम्

अम्बुजासनादिसन्नुतनीलकण्ठाय

कुजबुधादिगृहादिसंहिताय

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कुबेरप्रमुखाद्युपासितमुखाम्बुजाय शङ्कराय



६३ कुम्भेश्वरेण

कुम्भेश्वरेण

रागं: कल्याणि (६५) ताळं: आदि

पल्लवि

कुम्भेश्वरेण संरक्षितोऽहं कुम्भजादिमुनिपूजितवरेण

समष्टिचरणम्

कुम्भमासमखामहोत्सवेन कामकोटिपीटयतिनुतेन

(मध्यमकालसाहित्यम्)

इभवदन गुरुगुहानन्देन इन्दुधरमङ्गळाम्बायुतेन



६४ कुसुमाकरविमानारूढाम्

कुसुमाकरविमानारूढाम्

रागं: आहिरि (२०) ताळं: अदि

पल्लवि

कुसुमाकरविमानारूढां कुन्दमुकुळरदनां वन्देऽहम्

अनुपल्लवि

भासमानकामेश्वरानन्दां भक्तजनादिमङ्गळप्रदां

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वसुकोणदशारपीठस्थितां वारिजलोचनां परदेवताम्

चरणम्

वसुदेवनुतवीथिविटङ्कां वाणीशवन्दितवरशाकां

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वासवादि गुरुगुह सन्तोषां विचित्रविथीप्रवेशवेषाम्



६५ कुसुमाकरशोभित

कुसुमाकरशोभित

रागं: कुसुमाकरम् (७१) ताळं: रूपकम्^{३३}

पल्लवि

कुसुमाकर शोभितश्रीपुरगेहं

कुम्भजगुरुगुहनतं भावयेऽहम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

हसनजितत्रिपुरमवनतमुरहरं

अब्जशेखरं करुणाकरं हरम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

भसितोद्धूलनभरणं पन्नगवलयाभरणं

असमास्त्रगर्वहरणं अगराजसुतारमणम्



^{३३}तिश्र एकम्

६६ कृष्णानन्दमुकुन्दमुरारे

कृष्णानन्दमुकुन्दमुरारे

रागं: गौळिपन्तु (१५) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

कृष्णानन्दमुकुन्दमुरारे कृपां कुरु केशव शौरे हरे

अनुपल्लवि

तृष्णारहित गोपीजनवल्लभ

(मध्यमकालसाहित्यम्)

त्रिविक्रम नारायण वासुदेव गोविन्द पद्मनाभ

चरणम्

यादववंशपयोनिधिचन्द्र यमळार्जुनादिभञ्जनोपेन्द्र

माधव मामव विनतविधीन्द्र मायातीत करुणासान्द्र

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वेदनुत गौरीपान्त रङ्गादि गुरुगुह मोद

मुरळीनादभेदविनोद पङ्कजपाद मम प्रसीद श्रीधर



६७ कैलासनाथेन

कैलासनाथेन

रागं: काम्भोजि (२८) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

कैलासनाथेन संरक्षितोऽहं कैवल्यप्रदनिपुणतरेण श्री

अनुपल्लवि

कैलासगिरिविहारेण शैलराजात्मजामोहाकारेण

चरणम्

सद्गतिदाय काम्भोज चरणेन चारुशरच्चन्द्रकलाधरेण

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सद्गुरुगुह सन्नुतपदेन सत्यज्ञानानन्देन

सनकादिसंशयहरणेन चिदानन्दहृदयस्थितेन



६८ कैलासनाथम्

कैलासनाथम्

रागं: वेगवाहिनि (१६) ताळं: आदि

पल्लवि

कैलासनाथं भजेऽहं कामादिवृत्तिं त्यजेऽहम्

अनुपल्लवि

शैलराजात्मजापतिं पशुपतिं शङ्करं भक्तवशंकरम्

चरणम्

वालखिल्यादिपूजितगात्रं वसुप्रदनिपुणतरक्षेत्रं

कालकामहरणचरणनेत्रं कमलेशादिसन्नुतिपात्रम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नीलकण्ठगुरुगुहपुत्रं नित्यानन्दं परमपवित्रं

शूलपाणिमत्यद्भुतचित्रं स्वप्रकाशजितवह्निशशिमित्रम्



६९ कोदण्डरामम्

कोदण्डरामम्

रागं: कोकिलारवम् (११) ताळं: आदि

पल्लवि

कोदण्डराममनिशं भजामि कोकिलारव जानकीरमणम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

पादजपांसुपालिताहल्यं परमेश्वर गुरुगुह वात्सल्यं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वेदान्तवेद्यमतिकौशल्यं विश्वामित्रहितमकौटिल्यम्



७० कौमारी गौरी

कौमारी गौरी

रागं: गौरीवेळावळि (२३) ताळं: आदि

पल्लवि

कौमारी गौरीवेळावळी गानलोले सुशीले बाले

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

कामाक्षि कनकरत्नभूषणि कल्याणि गुरुगुह सन्तोषिणि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

हेमाम्बरि शातोदरि सुन्दरि हिमगिरिकुमारि ईशवशङ्करि



७१ गङ्गे मां पाहि

गङ्गे मां पाहि

रागं: जुञ्झटि (२८) ताळं: खण्ड एकम्

पल्लवि

गङ्गे मां पाहि गिरीशशिरस्थिते

गंभीरगाये गीतवाद्यप्रिये

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

अङ्गजतातमुदे असिवरुणामध्ये

अक्रूरपूजिते अखिलजनानन्दे

सकलतीर्थमूले सद्गुरुगुहलीले

वरजह्नुबाले व्यासादिकृपाले



७२ गजाधीशादन्यम्

गजाधीशादन्यम्

रागं: नाटकुरञ्जि (२८) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

गजाधीशादन्यं न जानेऽहं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

गुरुस्वरूपावतारिणो

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

निजानन्दानुभवनित्यविद्याप्रबोधिनी

निर्मलहृदयस्थितनिर्गुणरसरूपिणी

(मध्यमकालसाहित्यम्)

अजपाहंसनटनादिनिजभजनतृप्तगुरुगुह रूपिणी



७३ गजाननयुतम्

गजाननयुतम्

रागं: वेगवाहिनि (१६) ताळं: चतुरश्र एकम्

पल्लवि

गजाननयुतं गणेश्वरं भजामि सततं सुरेश्वरम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

अजेन्द्रपूजितविघ्नेश्वरं गणादिसन्नुतपदपद्मकरं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कुञ्जरभञ्जनचतुरतरकरं गुरुगुहाग्रजं प्रणवाकारम्



७४ गजाननाय नमस्ते

गजाननाय नमस्ते^{३४} (तान वर्णम्)

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

गजाननाय नमस्ते

गौरीकुमाराय

अनुपल्लवि

अजेन्द्राद्यमरादिनुताय

आगमसिद्धान्तप्रतिपादितवराय

चरणम्

गुरुगुह पूजितसुमुखाय



७५ गजाम्बा नायको

गजाम्बा नायको

रागं: जुंजूटि (२८) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

गजाम्बा नायको रक्षतु गुणिजनादिपूजितः सततम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

अजेन्द्राद्यमरादिसन्नुत अखिलभुवनादिसेनः

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सु जुंजूटि रागपानः सुन्दर गुरुगुह शिवसूनुः



७६ गणनायकम्

गणनायकम्

रागं: रुद्रप्रिया (२२) ताळं: आदि

पल्लवि

गणनायकं भजेऽहं भजे कमलेशनुतं कामरिपुसुतम्

अनुपल्लवि

अणिमादिसिद्धिदायकं सुमुखम्

चरणम्

वाणीरमणानन्दं वरदं वदने द्विरदं वरबालगुरुगुहम्



७७ गणपते महामते

गणपते महामते

रागं: कल्याणि (६५) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

गणपते महामते गौरीकुमार मां पाहि

अनुपल्लवि

अणिमाद्यष्टैश्वर्यप्रद गुरुगुह पूजित वर

चरणम्

सोमसूर्याग्निनेत्र सदाशिवानन्दपुत्र

वामदेवादिभद्र वारिजगम्भीरगात्र

(मध्यमकालसाहित्यम्)

हिमाद्रिजसुदामोद हिरण्मयपीठस्थित

पामरपण्डितनुत वर पङ्कजासनादिनुत



गणराजेन

रागं: आरभि (२९) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

गणराजेन रक्षितोऽहं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

गुणिजनादिनुतपल्लवपदेन

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

अणिमाद्यष्टसिद्धिप्रदेन माणिक्यमकुटादिधरेण

मन्त्रिणीपूजितसुमुखेन मानितगुरुगुहवन्दितेन

(मध्यमकालसाहित्यम्)

दिनकरकोटिप्रकाशेन विनताश्रितमन्दारेण

मनुपूजितपाशाङ्कुशेन काननस्थितब्रह्मचर्येण



७९ गणेशकुमार

गणेशकुमार

रागं: जुंजूटि (२८) ताळं: चतुरश्र एकम्

पल्लवि

गणेशकुमार पाहि मां गजमुख

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

(मम) मनोरथसिद्धिदायकागमपदादिनुत

भव श्री

(मध्यमकालसाहित्यम्)

गुरुगुह हित गजमुख



८० गानलोले

गानलोले

रागं: नागवराळि (८) ताळं: मिश्र चपु

पल्लवि

गानलोले बाले पञ्चदशाक्षरि पाहि माम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

नानाप्रपञ्चातीते नामरूपात्मके माये

मानित **गुरुगुहा** त्मके चारुचन्द्रहासिते

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सनकादिसमाराधिते **नागवराळि** वेणियुते



८१ गिरिजया अजया

गिरिजया अजया

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: आदि

पल्लवि

गिरिजयाऽजया अभयाम्बिकया

गिरीशजायया रक्षितोऽहम्

अनुपल्लवि

हरिहयादिदेवताराधितया आत्मस्वरूपप्रबोधितया

(मध्यमकालसाहित्यम्)

हरिहरगुरुगुहसम्मोदितया आदिक्षान्तवर्णवेदितया

चरणम्

समयविशेषनिर्याणमुखबीजनिर्बीजदीक्षाविषयकरण

समयाचरणोपयोगपूजासामग्रीसंग्रहान्तःकरण-

समयमतप्रतिपाद्यानुसरणसामान्यविशेषप्रजाचरण-

(मध्यमकालसाहित्यम्)

ममत्वनिराकरणक्रियायुतसद्भक्तानां धर्मार्थरूप-

समत्ववृत्तिवितरणनिपुणतरसाम्राज्यप्रदारुणचरणया



८२ गीतिचक्ररथस्थितायै

गीतिचक्ररथस्थितायै

रागं: कन्नड (२८) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

गीतिचक्ररथस्थितायै गुरुगुहनुतश्यामळायै

नमस्ते नमस्ते

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

गीतामृतानन्दितायै गीर्वाणवन्दितायै

हतविषङ्गसमूहायै कृतलोकोपकारायै

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नतभैरवादिसेनायै नवनवविधबाणकरायै



८३ गुणिजनादिनुत

गुणिजनादिनुत

रागं: गुज्जरि (१५) ताळं: आदि

पल्लवि

गुणिजनादिनुत गुरुगुहोदये गुज्जरि रागप्रियेऽव शिवे

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

मणिमयभूषणि मानवपोषणि मधुरभाषिणि मानसतोषिणि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

गणपतिफणिपतिशयनविधिनुते गजरथतुरगपदयुते ललिते



८४ गुरुगुहपदपङ्कज

गुरुगुहपदपङ्कज

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: तिश्च एकम्

नोटुस्वर साहित्यम्

गुरुगुह पदपङ्कजमतिगुप्तमनिशमाश्रये

निरतिशयनिजप्रकाशकनित्यसुखफलप्रदम्

नीरजनाभपुरन्दरमारारिवारिजसंभववेदितव्यं

अत्रिशुकवसिष्टवामदेवादितपोधनवन्दितम्



८५ गुरुगुहभवान्तरङ्गिणीम्

गुरुगुहभवान्तरङ्गिणीम्

रागं: चतुरङ्गिणि (६६) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

गुरुगुहभवान्तरङ्गिणीं चतुरङ्गिणीं विचिन्तयेऽहम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

अरुणकिरणसुचरणयुगळां हरिहयादिनुतकम्बुगळां

(मध्यमकालसाहित्यम्)

गरुडगमनपूजितबगळां करुणाकरीं शुभमङ्गळाम्



८६ गुरुगुह सरसिज

गुरुगुह सरसिज

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: चतुरश्र एकम्

नोटुस्वर साहित्यम्

गुरुगुह सरसिजकरपदशुभकरमूर्ते
सुरवर शिवसुत भुवनपते
मुरहरहरिहयविधिनुतबहुविधकीर्ते
नरपतिनतमुनिसुतसुमते
निरुपम जयकर निरतिशयसुखद
सरस सततमव स्थिततरशक्ते



८७ गुरुगुहस्वामिनि

गुरुगुहस्वामिनि

रागं: भानुमति (४) ताळं: खण्ड त्रिपुट

पल्लवि

गुरुगुहस्वामिनि भक्तिं करोमि
निरुपमस्वेमहिम्नि परंधाम्नि

अनुपल्लवि

करुणाकरचिदानन्दनाथात्मनि
करचरणाद्यवयवपरिणामात्मनि
तरुणोल्लासादिपूजितस्वात्मनि
धरण्याद्यखिलतत्वातीतात्मनि

चरणम्

निजरूपजितपावकेन्दु भानुमति
निरतिशयानन्दे हंसो विरमति
अजशिक्षणरक्षणविचक्षणसुमति
हरिहयादिदेवतागणप्रणमति

(मध्यमकालसाहित्यम्)

यजनादिकर्मनिरतभूसुरहिते
यमनियमाद्यष्टाङ्गयोगविहिते
विजयवल्लरीदेवसेनासहिते

वीरादिसन्नुते विकल्परहिते



८८ गुरुगुहादन्यम्

गुरुगुहादन्यम्

रागं: बलहंस (२८) ताळं: झम्प

पल्लवि

गुरुगुहादन्यं न जानेऽहं

गुप्तागमार्थतत्त्वप्रबोधिनो

अनुपल्लवि

अरुणोदयानन्दकोटिब्रह्माण्डाकार-

शिवादिधरान्ततत्त्वस्वरूपिणो

चरणम्

सहस्रदळसरसिजमध्यनिवासिनः

सकलचन्द्रभास्करतेजःप्रकाशिनः

सहजानन्दस्थितदासविश्वासिनः

सच्चित्सुखात्मकविश्वविलासिनो

(मध्यमकालसाहित्यम्)

अहरहःप्रबलहंसप्रकाशात्मनो

दहरविद्याप्रदायकपरमात्मनो

जहदजहल्लक्षणया जीवैक्यात्मनो

रहःपूजितचिदानन्दनाथात्मनो



८९ गुरुगुहाय

गुरुगुहाय

रागं: साम (२९) ताळं: आदि

पल्लवि

गुरुगुहाय भक्तानुग्रहाय कुमाराय नमो नमस्ते

अनुपल्लवि

गुरुगुहाय भक्तानुग्रहाय गुणातीताय रूपरहिताय
हरिहरविरिञ्चिरूपाय सच्चिदानादस्वरूपाय शिवाय

चरणम्

सकळागममन्त्रसारज्ञाय सत्सम्पत्प्रदाय सर्वज्ञाय
सकळनिष्कळप्रकाशकाय सामरस्य संप्रदायकाय

(मध्यमकालसाहित्यम्)

विकळेभरकैवल्यदानाय विकल्पहीनाय विज्ञानाय
शुकवामदेववन्दितपदाय शुकवामदेवमुक्तिप्रदाय



१० गुरुमूर्ते

गुरुमूर्ते

रागं : शङ्कराभरणम् (२९) ताळं : रूपकम्

पल्लवि

गुरुमूर्ते बहुकीर्ते सुरसेनाधिपते श्री

अनुपल्लवि

सुरसेवित शिवभावित सुमतेऽनिशमव मां श्री

चरणम्

सरसीरुहभववन्दित सकलागमनुतदेव

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सुरपतितनुजाधिपते सुरवर करुणाजलधे

गिरिजात्मज षण्मुखभव गुरुगुह शरवणभव श्री



११ गोकर्णेश्वर पाहि

गोकर्णेश्वर पाहि

रागं: सौराष्ट्रम् (१५) ताळं: आदि

पल्लवि

गोकर्णेश्वर पाहि पाहि मां
गोत्रभिदादिपूजितमूर्ते सुकीर्ते

अनुपल्लवि

श्रीकम्बुहेमगिरिकार्मुकधर श्रीपतिशर धरणीधर पुरहर
(मध्यमकालसाहित्यम्)

शोकहर हर शुभनिकराकर कोकनदपद गुरुगुहाकर

चरणम्

बालमण्डनतीर्थतीरवास भारतीशनुत भक्तविश्वास
नीललोहित विश्वविलास नित्यानन्दवल्लीमनोल्लास

(मध्यमकालसाहित्यम्)

पाञ्चाल सौराष्ट्र चोळदेशपालसेवित पाद मृकण्डु
बालदीर्घायुरारोग्यप्रद बालशशिधर वरद दक्षिण



१२ गोपालकृष्णाय नमस्ते

गोपालकृष्णाय नमस्ते

रागं: काम्भोजि (२८) ताळं: आदि

पल्लवि

गोपालकृष्णाय नमस्ते गानलोलाय गुरुगुहनुताय

अनुपल्लवि

गोपीजनमनोल्लासाय गरुडवाहाय गोपतोषाय

चरणम्

द्वारकावासदामोदराय दासजनाभीष्टवरप्रदाय

दारिद्र्यदुःखादिभञ्जनाय द्रौपदीमानसंरक्षकाय

(मध्यमकालसाहित्यम्)

धरणीधराय तत्वातीताय तामरसाक्षपदपङ्कजाय

परमभागवतप्रह्लादभक्तरक्षणाय पाण्डवहिताय



१३ गोवर्धनगिरीशम्

गोवर्धनगिरीशम्

रागं: हिन्दोळम् (२०) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

गोवर्धनगिरीशं स्मरामि अनिशं
गोपिकादिमनोहरं^{३५} गर्वितकंसादिहरम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

गोविन्दनामसारं गजेन्द्ररक्षणधीरं
कविजनहृन्मन्दारं कनकजितसुशरीरम्
(मध्यमकालसाहित्यम्)

रविशशिनयनविलासं रमणीयमुखाभासं
शिवगणादिविश्वासं श्रीगुरुगुहमनोल्लासम्



^{३५}गोपिकामनोहरं

१४ गोविन्दराजाय

गोविन्दराजाय

रागं: सुरटि (२८) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

गोविन्दराजाय नमस्ते नमस्ते श्री

अनुपल्लवि

गोवर्धनगिरिधराय गोपस्त्रीमनोहराय

चरणम्

देवकीसुकुमाराय दीनार्तिभञ्जनाय

देवराजपूजिताय देशिकनुतवरदाय

(मध्यमकालसाहित्यम्)

देवकनकसभेशहिताय गुरुगुहनुताय

वासवादिवन्दिताय वसुप्रदनिपुणतराय



१५ गोविन्दराजेन

गोविन्दराजेन

रागं: मेचबौळि (१५) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

गोविन्दराजेन रक्षितोऽहं सदा

अनुपल्लवि

गोवर्धनगिरिधरेण गोपस्त्रीमोहितेन

चरणम्

वसुदेवकुमारेण वासवादिवन्दितेन

कौस्तुभमणिभूषितेन करुणासागरवरेण

(मध्यमकालसाहित्यम्)

भासमानचिदम्बरपुरिविलसितेन

गुरुगुहमोदितमेचबौळिरागेण सन्तोषितेन



१६ गोविन्दराजमुपास्महे

गोविन्दराजमुपास्महे

रागः मुखारि (२०) ताळः मिश्र चापु

पल्लवि

गोविन्दराजमुपास्महे नित्यं श्री गुरुगुह विनुतचिदाकाशगृहे

अनुपल्लवि

देवराजपूजितदिव्यगात्रं दीनार्तिभञ्जननिपुणतरक्षेत्रं

देवकीवसुदेवपुत्रं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

देवकनकसभेशमित्रं देशिकनुतरमाकळत्रम्

चरणम्

नृपराजस्य कृकलासजन्मापहं

नृपतिं रुक्मिणीसत्यभामाब्जमधुलोलम्

भगवन्तं भक्तकल्पकधरणीरुहं

भद्रप्रदोद्युक्तपाणिसरोरुहम्

उरगशयनं अङ्घ्रिसरसीरुहं आननजलरुहम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नगधरं गोपिकामोहं नतभागवतादिसमूहं

खगराजतुरगारोहं करुणामृतरसप्रवहम्



१७ गौरि गिरिराजकुमारि

गौरि गिरिराजकुमारि

रागं: गौरि (१५) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

गौरि गिरिराजकुमारि गानवनमयूरि गंभीरकौमारि

अनुपल्लवि

दूरीकृतदुरितेऽतिललिते दुर्गालक्ष्मीसरस्वतीसहिते
शौरीशविरिञ्चादिमहिते शाम्भवि नमस्ते परदेवते

चरणम्

नवचक्रस्वरूपावतारे नादब्रह्मवाचकतारे
शिवपरमानन्दामृतधारे शृङ्गारादिनवरसाधारे
भवगुरुगुहगणपतिसंसारे भक्तिप्रदवेदागमसारे
पवनधरणयोगविचारे पालितभक्तजनमन्दारे

(मध्यमकालसाहित्यम्)

तव चरणपङ्कजोद्भवतत्वसमष्ट्यागारे
सुवर्णमणिमयादिपञ्चविंशतिप्राकारे
सुधासिन्धुमध्ये चिन्तामण्यागारे
शिवाकारमञ्चे परशिवपर्यङ्कविहारे



१८ गौरीशाय नमस्ते

गौरीशाय नमस्ते

रागं: आरभि (२९) ताळं: त्रिपुट

पल्लवि

गौरीशात्य नमस्ते श्रीगुरुगुहादिसन्नुतवराय

अनुपल्लवि

शौरिविधीन्द्रादिनुताय शङ्करीप्राणनाथाय

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सूरिजनोपासिताय शूलायुधधरशोभितकराय

चरणम्

शुकसनकादिदेवहिताय सुन्दरमायूरनाथाय

निर्मलहृदयविहाराय नित्यशुद्धबुद्धमुक्ताय

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सकलनिष्कळरूपाय चर्माम्बरधरशशिशेखराय

सुखतरप्रवर्तकाय शुद्धचक्रनिलयाय नित्याय



११ चन्द्रं भज मानस

चन्द्रं भज मानस

रागं: असावेरि (८) ताळं: मध्यम्
पल्लवि

चन्द्रं भज मानस साधुहृदयसदृशम्
अनुपल्लवि

इन्द्रादिलोकपालेडिततारेशं
(मध्यमकालसाहित्यम्)

इन्दुं षोडशकलाधरं निशाकरं
इन्दिरासहोदरं सुधाकरमनिशम्
चरणम्

शङ्करमौलिविभूषणं शीतकिरणं
चतुर्भुजं मदनच्छत्रं क्षपाकरम्
वेङ्कटेशनयनं विराण्मनोजननं
विधुं कुमुदमित्रं विधिगुरुगुहवक्त्रं श-
(मध्यमकालसाहित्यम्)

शाङ्कं गीष्पतिशापानुग्रहपात्रं
शरच्चन्द्रिकाधवळप्रकाशगात्रम्
कङ्कणकेयूरहारमकुटादिधरं
पङ्कजरिपुं रोहिणीप्रियकरचतुरम्



१०० चन्द्रशेखरम्

चन्द्रशेखरम्

रागं: मार्गहिन्दोळम् (२०) ताळं: आदि

पल्लवि

चन्द्रशेखरं सदा भजेऽहं शाम्भवीमनोहरं शङ्करम्

अनुपल्लवि

इन्द्रादिदेवसन्नुतपदं चिन्तितफलप्रदं गुरुगुहनुतम्

चरणम्

अष्टादशवाद्यादिप्रियं अतिशुद्धमद्दळवाद्यप्रियं

सङ्गीतशास्त्रादिसंयुतं सन् मार्गहिन्दोळं रागनुतम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

अष्टसिद्धिदायकं मुकुन्दं अष्टपाशहरतीर्थवैभवं

आनन्दकन्दं सोमास्कन्दं अजपानटनानन्दवैभवम्



१०१ चिदम्बरनटराजम्

चिदम्बरनटराजम्

रागं: केदारम् (२९) ताळं: आदि

पल्लवि

चिदम्बरनटराजमश्रयेऽहं

शिवकामीपतिं चित्सभापतिम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

चिदम्बरविहारं शङ्करं चिदानन्दकरं गुरुगुहवरं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

केदारेश्वरं विश्वेश्वरं कमलापतिनुतपदं शशिधरम्



१०२ चिदम्बरनटराजमूर्तिम्

चिदम्बरनटराजमूर्तिम्

रागं: तनुकीर्ति (६) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

चिदम्बरनटराजमूर्तिं चिन्तयाम्यतनुकीर्तिम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

मदम्बाशिवकामीपातिं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मदनजनकमहितपशुपतिम्

वदनकमलगुरुगुहविनुतिम्



१०३ चिदम्बरेश्वरम्

चिदम्बरेश्वरम्

रागं: धुनिभिन्नषड्जम् (९) ताळं: आदि

पल्लवि

चिदम्बरेश्वरं चिन्तयामि शिवानन्दगङ्गाधरं मृगधरम्

अनुपल्लवि

चिदानन्तनटनप्रकाशं शिवकामवल्लीमनःप्रियकरम्

चरणम्

वासुकिप्रमुखाद्युपासितं वासुदेवगुरुगुहादिवन्दितं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

भास्करशशिशेखरं त्रिनेत्रं भिन्नषड्जरागनुतप्रसिद्धम्



१०४ चिन्तय माकन्तमूलकन्दम्

चिन्तय माकन्तमूलकन्दम्

रागं: भैरवि (२०) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

चिन्तय माकन्दमूलकन्दं चेतः श्रीसोमास्कन्दम्

अनुपल्लवि

सन्ततं अखण्डसच्चिदानन्दं साम्राज्यप्रदचरणारविन्दम्

चरणम्

मङ्गलकरमन्दहासवदनं माणिक्यमयकाञ्चीसदनं

अङ्गसौन्दर्यविजितमदनं अन्तकसूदनं कुन्दरदनं उ-

(मध्यमकालसाहित्यम्)

तुङ्गकमनीयवृषतुरङ्गं भैरवीप्रसङ्गं पृथिवीलिङ्गम्



१०५ चिन्तये महालिङ्गमूर्तिम्

चिन्तये महालिङ्गमूर्तिम्

रागः परजु (१५) ताळः आदि

पल्लवि

चिन्तये महालिङ्गमूर्तिं चिद्रूपस्पूर्थिं सुकीर्तिम्

अनुपल्लवि

सन्ततं मध्यार्जुनपुरवासं बृहत्कुचाम्बासहवासं

अन्तरङ्गभक्तजनानामतिसमी पञ्चजु मार्गदर्शितं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

अन्तकान्तकं आधितारकं हत्यादिपापहरं पुरहरम्

चरणम्

पाकशासनादिदेवबृन्दं पालितदासजनादिमुकुन्दं

शोकादिहरणपदारविन्दं शुभकरं करुणारसकन्दम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

श्रीकमलापुरसोमास्कन्दं चिदम्बरेश्वरनटनानन्दं

श्रीकाळीशभैरवस्पन्दं शिवस्वामिशैल गुरुगुह स्कन्दम्



१०६ चिन्ययेऽहं सदा

चिन्ययेऽहं सदा

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: चतुरश्र एकम्

नोटुस्वर साहित्यम्

चिन्तयेऽहं सदा चित्सभानायकं
चिन्तितार्थदायकं जीवेश्वरभेदापहम्
चिन्तामणिस्वरूपं ताण्डवेश्वरं
शान्तं मुनिमहितं स गुरुगुहं शङ्करम्
सन्ततं साम्बमीशं मुधा भावयेऽ-
नन्तकोटिब्रह्माण्डनाथं विमलम्
आदिमध्यान्तवर्जं निराधारमाकाशनादान्तस्थं
सुन्दरं सुधांशुमौलिं शिवं भ्रान्तिवारणनिपुणम्
भानुकोटिभास्वरं दन्तिचर्माम्बरं धनदहितं
भारतीकान्तहरिनुतं करधृतमृगमेकान्तहृदये
शिवकामसुन्दरीपतिम्



१०७ चेतःश्रीबालकृष्णम्

चेतःश्रीबालकृष्णम्

रागं: जुजावन्ति (२८) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

चेतःश्रीबालकृष्णं भज रे

चिन्तितार्थप्रदचरणारविन्दं मुकुन्दम्

अनुपल्लवि

नूतननीरदसदृशशरीरं नन्दकिशोरं

पीतवसनधरं कम्बुकन्धरं गिरिधरम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

पूतनादिसंहारं पुरुषोत्तमावतारं

शीतलहृदयविहारं श्रीरुक्मिणीदारम्

चरणम्

नवनीतगन्धवाहवदनं मृदुगदनं

नलिनपत्रनयनं वटपत्रशयनं

नवचम्पकनासिकं अतसीसुमभासकं

नतेन्द्रादिलोकपालकं मृगमदतिलकम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नवतुलसीवनमालं नारदादिमुनिजालं

कुवल्यादिपरिपालं गुरुगुहनुतगोपलम्



१०८ छायावतीम्

छायावतीम्

रागं: छायावति (१७) ताळं: आदि

पल्लवि

छायावतीमानन्दवल्लीं चारुतरतञ्जपुरीश्वरीं भजेऽहम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

मायामयविश्वोत्पत्तिकरीं मारजनकसोदरीं सुन्दरीं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कायिकवाचिकमानसत्रिविधकरणोपासितगुरुगुहजननीम्



१०९ जगदीश गुरुगुह

जगदीश गुरुगुह

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: चतुरश्र एकम्

नोटुस्वर साहित्यम्

जगदीश गुरुगुह हरिविधिविनुतं
देहेन्द्रियविलक्षणमानन्दलक्षणम्
नित्यशुद्धं बुद्धं मुक्तं सत्यनिर्वि-
कल्पनिष्प्रपञ्चमानन्दमञ्ज श्री



११० जगदीशमनोहरि

जगदीशमनोहरि

रागं: ईशमनोहरि (२८) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

जगदीशमनोहरि जय करुणारसलहरि

जयकरि त्रिपुरसुन्दरि

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

नगराजप्रियकुमारि नादान्तविहारि गौरि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

भगवति हरिहरगुरुगुहपालिनि अखिलाण्डेश्वरि



१११ जम्बूपते

जम्बूपते

रागं: यमुनाकल्याणि (६५) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

जम्बूपते मां पाहि निजानन्दामृतबोधं देहि

अनुपल्लवि

अम्बुजासनादिसकलदेवनमनतुम्बुरुनुत हृदयतापोपशमन

अम्बुधिगङ्गाकावेरी यमुना कम्बुकण्ठखिलाण्डेश्वरीरमण

चरणम्

पर्वतजाप्रार्थिताब्लिङ्गविभो^{३६} पञ्चभूतमयप्रपञ्चप्रभो

सर्वजीवदयाकर शम्भो सामजाटवीनिलय स्वयम्भो

शर्व करुणासुधासिन्धो शरणागतवत्सलार्तबन्धो

अनिर्वचनीय नादबिन्दो नित्यमौलिविधृतगङ्गेन्दो

(मध्यमकालसाहित्यम्)

निर्विकल्पकसमाधिनिष्ठ शिव कल्पकतरो

निर्विशेषचैतन्य निरञ्जन गुरुगुह गुरो^{३७}



^{३६}अप्पुलिङ्गविभो

^{३७}मुरहरगुरो

११२ जयति शिवा भवानी

जयति शिवा भवानी

रागं: भवानि (४४) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

जयति शिवा भवानी जगज्जननी निरञ्जनी

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

दयारसप्रवाहिनी दण्डितासुरवाहिनी

(मध्यमकालसाहित्यम्)

भयकृद्भण्डमर्दिनी भासमानकपर्दिनी

जय गुरुगुह रञ्जनी जननादिखेदभञ्जनी



११३ तारकेश्वर

तारकेश्वर

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: आदि

पल्लवि

तारकेश्वर दयानिधे मां तारयाशु करुणानिधे श्री

अनुपल्लवि

तारानायकशेखर शङ्कर नारायणनुत नादान्तसार

(मध्यमकालसाहित्यम्)

शृङ्गार शिवावतार गुरुगुह तारोपदेशप्रकाशित

चरणम्

सूर्यकोटिसङ्काशशरीर सोमसुन्दर हसित मार-

कार्यकारणविश्वाधार कनकाङ्गदकेयूरहार

(मध्यमकालसाहित्यम्)

चर्यादिचतुष्टयचातुर्यहृदयविहार श्रितमन्दार

तुर्यातीत चिदानदाचार्य अभयाम्बिकाधर श्री



११४ तिरुवटीश्वरम्

तिरुवटीश्वरम्

रागं: गमकक्रिया (५३) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

तिरुवटीश्वरं नमामि सन्ततं चिन्तयामि श्री

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

मारकोटिस्वरूपिणं मरकतमणिभूषणं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

चम्पकवल्लरीरमणं चम्पकपुष्पाभरणं

सम्पत्प्रदाननिपुणं सुगुरुगुहान्तःकरणम्



११५ त्यागराज पालयाशु

त्यागराज पालय

रागं: गौळ (१५) ताळं: आदि

पल्लवि

त्यागराज पालयाशु मां नित्यानन्दकर

सोमास्कन्द वीथिविटङ्ग

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

नागराजमणिभूषालङ्कृत नगराजसुतार्धाङ्ग गौळाङ्ग

भोगादिप्रद श्रीनगरस्थित भूसुरादिनुतवल्मीकलिङ्ग

(मध्यमकालसाहित्यम्)

श्रीगुरुगुह पूजितवृषतुरङ्ग श्रितजनरक्षणनिपुणान्तरङ्ग

भोगियुतचरण करधृतकुरङ्ग योगिविदिताजपानटनरङ्ग



११६ त्यागराज महध्वजारोह

त्यागराज महध्वजारोह

रागं: श्री (२२) ताळं: आदि

पल्लवि

त्यागराज महध्वजारोहतारकब्रह्मस्वरूपमाश्रये
गणेश गुरुगुह भक्तभैरवसोममयं श्री

अनुपल्लवि

आगमसिद्धान्तप्रतिपाद्यं आनन्दचन्द्रशेखरवेद्यं
नागस्वरमद्वळादिवाद्यं नामरूपातीतमनाद्यम्
(मध्यमकालसाहित्यम्)

यागशालाद्युत्सवचोद्यं यमाद्यष्टाङ्गयोगमाद्यं
भोगरागभेदरोगवैद्यं बोधामृतमहानैवेद्यम्

चरणम्

सृष्टिस्वरूपवसन्तवैभवमष्टध्वजेन्द्रविमानभूत -
समष्टिगजवृषभकैलासवाहमाश्लेषमहारथस्थितम्
विशिष्टहरं कृष्णगन्धधरणं शिष्टसेविताजपानर्तनं
अष्टपाशहरतीर्थप्रभावं अनुग्रहात्मकपाददर्शनम्
(मध्यमकालसाहित्यम्)

इष्टफलप्रदकल्याणसुन्दरेशनाममाचार्यप्रभावं^{३८}

^{३८}प्राभवं

अष्टसिद्धिदायकाम्बिकोत्सव^{३९}मारूढचण्डेश्वरं शिवम्



११७ त्यागराजयोगवैभवम्

त्यागराजयोगवैभवम्

रागं: आनन्दभैरवि (२०) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

त्यागराजयोगवैभवं सदाशिवं
त्यागराजयोगवैभवं सदाश्रयामि
त्यागराजयोगवैभवं अगाराजयोगवैभवं
राजयोगवैभवं योगवैभवं वैभवं भवं वम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

नागराजविनुतपदं नादबिन्दुकलास्पदं
योगिराजविदितपदं युगपद्भोगमोक्षप्रदम्
योगरूढनामरूपविश्वसृष्ट्यादिकरणं
युगपरिवृत्याब्दमासदिनघटिकाद्यावरणम्
(मध्यमकालसाहित्यम्)

श्री गुरुगुह गुरुं सच्चिदानन्दभैरवी शं
शिवशक्त्यादिसकलतत्त्वस्वरूपप्रकाशम्
शं प्रकाशं स्वरूपप्रकाशं
तत्त्वस्वरूपप्रकाशं सकलतत्त्वस्वरूपप्रकाशं
शिवशक्त्यादिसकलतत्त्वस्वरूपप्रकाशम्



११८ त्यागराजादन्यं न जाने

त्यागराजादन्यं न जाने

रागं: दर्बार् (२२) ताळं: आदि

पल्लवि

त्यागराजादन्यं न जाने

गुरुगुहा दिसमस्तदेवतास्वरूपिणः श्री

अनुपल्लवि

रागादिवृत्तिरहितस्वानुभोगानन्दस्फूर्तिविशेषात् ४०

(मध्यमकालसाहित्यम्)

भूगन्धवाहवह्निजलगगनपुष्पवद्यज्वमयमूर्तेः श्री

चरणम्

सत्त्वरजस्तमोगुणातीतसत्यज्ञानानन्दरूपिणो ४१

द्वित्वादिभेदन ४२ कर्तनपरमाद्वैतस्वात्मानन्दरूपिणो

त्रित्वपरिच्छेदराहित्यत्रैपदपरमाद्वैतरूपिणो

तत्त्वंपदार्थशोधनशेषिततत्पदलक्ष्यार्थस्वरूपिणो

(मध्यमकालसाहित्यम्)

तत्त्वसमष्टिव्यष्टिरूपलयतारकब्रह्मरूपात्मनो

४० विशेष

४१ नन्दस्वरूपिणो

४२ भेदमर्दन

तत्त्वं स्वातिरिक्तासहनतत्सक्तमान^{४३}रूपात्मनः श्री



११९ त्यागराजाय नमस्ते

त्यागराजाय नमस्ते

रागं: बेगड (२९) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

त्यागराजाय नमस्ते नमस्ते

कात्यायनीपते पशुपते सिंहासनपते

अनुपल्लवि

वागीशाद्यखिलदेववन्दितपदपङ्कजाय

योगीश्वरमानससंयुक्तवदनवारिजाय

(मध्यमकालसाहित्यम्)

भोगमोक्षदानवामभागस्थितशैलजाय

योगगुरुगुहात्मजाय त्यागध्वजाय अजाय

चरणम्

मुकुन्दादिपूजितसोमास्कन्दमूर्तये

मुचुकुन्दादिभक्तजनमनोरथपूर्तये ४४

मुकुरबिम्बप्रतिबिम्बितमुखस्फूर्तये

मुनिपक्षिमृगकीटादिमुक्तिप्रदकीर्तये

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सकलागममन्त्रतन्त्रसारज्ञानुरक्तये

अकथादित्रिरेखात्मकाधारप्रवृत्तये

४४ स्फूर्तये

सकलनिष्कलस्वरूपसच्चित्सुखव्याप्तये
विकल्पभेदयुक्तये विटङ्करूपशक्तये



१२० त्यागराजे

त्यागराजे

रागं: सारङ्गा (६५) ताळं: झम्प

पल्लवि

त्यागराजे कृत्याकृत्यमर्पयामि विदेहकैवल्यं यामि

अनुपल्लवि

भोगयोगात्मके भुक्तिमुक्त्यात्मके

त्यागरागात्मके तत्त्वंपरात्मके

चरणम्

प्रकृतिपुरुषात्मके पञ्चभूतात्मके

प्रकृति^{४५} विकृतात्मके पञ्चीकृतात्मके

सुकृतिहृदयात्मके सूर्यचन्द्रात्मके

विकृतिभेदात्मके विश्वेश्वरात्मके

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सुकृतिपूर्णात्मके सुरगुरुगुहात्मके

सकृदसकृदात्मके सच्चित्सुखात्मके श्री



१२१ त्यागराजेन संरक्षितोऽहम्

त्यागराजेन संरक्षितोऽहम्

रागं: साळगभैरवि^{४६} (२२) ताळं: आदि

पल्लवि

त्यागराजेन संरक्षितोऽहं दयासुधासागरेण श्री

अनुपल्लवि

यागशालादिमहोत्सवेन यतिवराद्युपासितेन भवेन

(मध्यमकालसाहित्यम्)

भोगभोग्यप्रपञ्चोत्भवेन भुक्तिमुक्तिप्रदपरमशिवेन

चरणम्

श्रीरमणादिपूजितचरणेन सृष्ट्यादिपञ्चकृत्यकरणेन

हारकटकमकुटादिभरणेन हाटकक्षेत्राधिकरणेन

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वीरखड्गखेडादिधरणेन विकल्पविरहितान्तःकरणेन

मारकालत्रिपुरादिहरणेन महादेवगुरुगुह^{४६}स्मरणेन



१२२ त्यागराजो विराजते

त्यागराजो विराजते

रागं: अठाण (२८) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

त्यागराजो विराजते महाराजराज श्री
त्यागराजो विराजते श्रीमत्यागराजो विराजते

अनुपल्लवि

वागर्थमयभुवनराजो हरिवाञ्छितार्थप्रदराजो
हरश्री गुरुगुह गणेशराजो संसेवितराजाधिराजो अजो

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नागरखण्डाख्यपुराणप्रतिपादितराजो
योगिनीगणराजो योगिराजराजः श्री

चरणम्

कलिराहित्यनगरवासो नीलोत्पलनायिकासहवासो अति-
ललितहंसलास्योल्लासो ^{४७}अखिलागमशिरोनुतविलासो अति-
विलसितहाटकावभासो अनेकलीलाविचित्रविकासो रक्यो-
त्पलकुसुमादिविश्वासो परिपालितहरिहयादिदासो ^{४८} नि-

(मध्यमकालसाहित्यम्)

र्मलहृदयराजहंसो महापरमहंसो

^{४७}निखिलागम

^{४८}हरिहरादिदासो

विकल्प^{४९}तत्त्वप्रशंसः शशिकलावतंसः श्री



१२३ त्यागराजं भज रे

त्यागराजं भज रे

रागं: यदुकुलकाम्भोजि (२८) ताळं: मिश्र चापु^{५०}

पल्लवि

त्यागराजं भज रे रे चित्त तापत्रयं त्यज रे रे चित्त

अनुपल्लवि

योगिराजहृदयाब्जनिलयं भोगिराजनुतचरणकिसलयं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नागराजमणिवलयं रजतागराजं मुखकुवलयम्

चरणम्

पौलोमीशादिदिक्पालपूजितगात्रं

नीलोत्पलाम्बानुकूलतरकलत्रम्

त्रैलोक्यगुरुगुह^{५०}तातं त्रिनेत्रं

सालोकादिकैवल्यप्रदचरित्रम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नीलकण्ठमनेकफलदं शूलपाणिमशोकशुभदं

मूलभूतममूल्यवरदं कालकालमखण्डसुखदम्



^{५०}त्रिपुट, मिश्रजाति एक

१२४ त्यागराजं भजेऽहम्

त्यागराजं भजेऽहम्

रागं: नीलाम्बरि (२९) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

त्यागराजं भजेऽहं सततं

अहं सततं त्यागराजं भजेऽहम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

योगि नारायणाद्युपासितं प्रभासितं

योगभोगवितरणनिपुणतरकरं दयाकरम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नागरखण्डाख्यपुराणप्रतिपाद्यमनाद्यं

नामरूपमयचोद्यं नारदगुरुगुहवेद्यम्



१२५ त्यागेशं भज रे

त्यागेशं भज रे

रागं: रुद्रप्रिय (२२) ताळं: आदि

पल्लवि

त्यागेशं भज रे रे मानस तापार्तिं त्यज रे रे मानस

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

योगीशविहितं भोगीशमहितं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

श्रीगुरुगुह विदितं सुरमुदितं

सिंहासनपतिं पशुपतिम्



१२६ त्रिपुरसुन्दरि नमोस्तु ते

त्रिपुरसुन्दरि नमोस्तु ते

रागं: देवमनोहरि (२२) ताळं: आदि

पल्लवि

त्रिपुरसुन्दरि नमोस्तु ते दीनजनाभीष्टदायिनि श्री

अनुपल्लवि

त्रैपदपरब्रह्मरूपिणि तत्पदलक्ष्यार्थस्वरूपिणि

चरणम्

वेदशास्त्रादिविनुतस्फूर्ते विधिगुरुगुहादिपूजितमूर्ते
कामितफलप्रदनिपुणकीर्ते कमनीयकामकलाप्रदर्शिते

(मध्यमकालसाहित्यम्)

माधवसोदरि महिषासुरादिमर्दनि महादेवमनोहरि

महाकैलासवासप्रियकरि महाकामेश्वरि सम्पत्करि



१२७ त्रिपुरसुन्दरि शङ्करि

त्रिपुरसुन्दरि शङ्करि

रागं: साम (२९) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

त्रिपुरसुन्दरि शङ्करि गुरुगुहजननि मामव

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

त्रिपुरादिचक्रेश्वरि साम्राज्यप्रदकरि

सामगानप्रियकरि सच्चिदानन्दसुखकरि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

त्रिपुरसुरादिभञ्जनि श्रीपुरवासनिरञ्जनि

वेदशास्त्रविश्वासिनि विधिपूजितविनोदिनि



१२८ त्रिलोचनमोहिनीम्

त्रिलोचनमोहिनीम्

रागं: भैरवि (२०) ताळं: आदि

पल्लवि

त्रिलोचनमोहिनीं त्रिपुराणीं त्रिपुरसुन्दरीं सदा भजेऽहम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

त्रिलोकजननीं त्र्यम्बकरमणीं त्रितापहारिणीं त्रिपदरूपिणीं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सालोक्यादिमुक्तिदायिनीं सद्गुरुगुहसन्तोषकारिणीम्



१२९ दण्डनाथया रक्षितोऽहम्

दण्डनाथया रक्षितोऽहम्

रागं: खमास् (२८) ताळं: आदि

पल्लवि

दण्डनाथया रक्षितोऽहं दैत्यकुलादिजितचतुरया श्री

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

भण्डसोदरविशुक्रहरया बुधनुतगिरिचक्ररथस्थितया

(मध्यमकालसाहित्यम्)

चण्डोच्चण्डसेनाराज्ञ्या चण्डिकेशनुत गुरुगुह धरया



१३० दण्डायुधपाणिम्

दण्डायुधपाणिम्

रागं: आनन्दभैरवि (२०) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

दण्डायुधपाणिं दण्डितदैत्यश्रेणिं
दयानिधिं भज रे हृदय सततं सुरविनुतं

अनुपल्लवि

चण्डांशुशतकोटिसंकाशं जगदीश -
मखण्डरूपंअण्डजमणिमण्डलमयकुण्डलादि -

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मण्डिताङ्गसुकुमारम् खण्डिततारकशूरं
पण्डिततर नववीरं चण्डिकेशावतारम्

चरणम्

मन्दस्मितवदनारविन्दं मातुलगो -
विन्दं शरणागतसुरबृन्दं बहुमानितमुनि -
बृन्दं परिपालितमुचुकुन्दं प्रणतविरिञ्चिमु -
कुन्दम् अधरमधुरमकरन्दं मृदुतरवचनम -
निन्दं^{५१} मायामूलकन्दं स्कन्दं
शन्दं पृथिव्यात्मकगन्धम् गगनात्मकसुम -
गन्धं वायुमयधूपगन्धं वह्निमयदीप -

^{५१}वचनमनन्तम्

बृन्दं अमृतात्मकरसबृन्दम् श्रीगुरुगुहमानन्दं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सुन्दरकरचरणारविन्दं रथगजतुरग^{५२} -

वृन्दं सत्यज्ञानानन्दमतिस्वच्छन्दम्



१३१ दक्षिणामूर्ते

दक्षिणामूर्ते

रागः शङ्कराभरणम् (२९) ताळः झम्प

पल्लवि

दक्षिणामूर्ते विदळितदासार्ते श्री
चिदानन्दपूर्ते सदा मौनकीर्ते

अनुपल्लवि

अक्षयसुवर्णवटवृक्षमूलस्थिते रक्ष मां सनकादिराजयोगिस्तुते
(मध्यमकालसाहित्यम्)

रक्षितसद्भक्ते शिक्षितदुर्युक्ते अक्षरानुरक्ते अविद्याविरक्ते

चरणम्

निखिलसंशयहरणनिपुणतरयुक्ते निर्विकल्पसमाधिनिद्राप्रसक्ते
अखंडैकरसपूर्णारूढशक्ते अपरोक्षनित्यबोधानन्दमुक्ते

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सुखतरप्रवृत्ते स्वाज्ञाननिवृत्ते स्वगुरुगुहोत्पत्ते स्वानुभोगतृप्ते



१३२ दाशरथे

दाशरथे

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: तिश्च एकम्

नोटुस्वर साहित्यम्

दाशरथे दीनबन्धो दानवभीकर दामोदर
केशव मामव सीताधव केयूरहार रघुवीर
कोमलपादाब्ज कोदण्डराम श्यामळविग्रह संपूर्णकाम
नामकीर्त्तने सदामोद नारदवीणाह्लादाह्लाद



१३३ दाक्षायणि

दाक्षायणि

रागं: तोडि (८) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

दाक्षायणि अभयाम्बिके वरदाभयहस्ते नमस्ते श्री

अनुपल्लवि

दीक्षासन्तुष्टमानसे दीनावनहस्तसारसे
कांक्षितार्थप्रदायिनि कामतन्त्रविधायिनि
साक्षिरूपप्रकाशिनि समस्तजगद्विलासिनि

चरणम्

सकलनिष्कळस्वरूपतेजसे सकललोकसृष्टिकरणभ्राजसे
सकलभक्तसंरक्षणयशसे सकलयोगिमनोरूपतत्त्वतपसे

(मध्यमकालसाहित्यम्)

प्रबलगुरुगुहोदये पञ्चाननहृदालये
भरतमतङ्गादिनुते भारतीशपूजिते



१३४ दिवाकरतनुजं शनैश्वरम्

दिवाकरतनुजं शनैश्वरम्

रागं: यदुकुलकाम्भोजि (२८) ताळं: चतुरश्र एकम्

पल्लवि

दिवाकरतनुजं शनैश्वरं धीरतरं सन्ततं चिन्तयेऽहम्

अनुपल्लवि

भवाम्बुनिधौ निमग्नजनानां भयङ्करं अतिक्रूरफलदं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

भवानीशकटाक्षपात्रभूतभक्तिमतामतिशयशुभफलदम्

चरणम्

कालाञ्जनकान्तियुक्तदेहं कालसहोदरं काकवाहं

नीलांशुकपुष्पमालावृतं नीलरत्नभूषणालंकृतम्

मालिनीविनुत गुरुगुहमुदितं मकरकुम्भराशिनाथं^{५३}

तिलतैलमिश्रितान्नदीपप्रियं दयासुधासागरं निर्भयम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कालदण्डपरिपीडितजानुं कामितार्थफलदकामधेनुं

कालचक्रभेदचित्रभानुं कल्पितच्छायादेवीसूनुम्



१३५ दीनबन्धो

दीनबन्धो

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: तिश्च एकम्

नोटुस्वर साहित्यम्

दीनबन्धो दयासिन्धो सुधीमणे मे मुदं देहि सदा देहि

जानकीनायकाम्भोजानन साधुसंरक्षणा -

पाङ्गाखिलदेवतासार्वभौमादिवन्द्य



१३६ देवि जगदीश्वरि

देवि जगदीश्वरि

रागं: भैरवि (२०) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

देवि जगदीश्वरि दीनजनावनशङ्करि

अनुपल्लवि

देवराजपूजिते देशकालप्रवर्तिते

(मध्यमकालसाहित्यम्)

भावरगताळयुते भैरविभार्गविविनुते

चरणम्

महादेवमोहिते मामव ललिते वरदे

महात्रिपुरवासिते महनीयसंपदे

(मध्यमकालसाहित्यम्)

महापापविमोचिते मानितगुरुगुहमहिते

मङ्गळवरप्रदे वशिन्यादिवाग्देवते



१३७ धर्मसंवर्धनि

धर्मसंवर्धनि

रागं: मध्यमावति (२२) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

धर्मसंवर्धनि दनुजसंमर्दिनि^{५४}

धराधरात्मजे अजे दयया मां पाहि पाहि

अनुपल्लवि

निर्मलहृदयनिवासिनि नित्यानन्दविलासिनि

कर्मज्ञानविधायिनि काङ्क्षितार्थप्रदायिनि

चरणम्

माधवसोदरि सुन्दरि मध्यमावति शङ्करि

माधुर्यवाग्विजृम्भिणि महादेवकुटुम्बिनि

साधुजनचित्तरञ्जनि शाश्वतगुरुगुहजननि

बोधरूपिणि निरञ्जनि भुवनेशदुरितभञ्जनि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

पादजविश्वविलासिनि पञ्चनदीशोल्लासिनि

वेदशास्त्रविश्वासिनि विधिहरिहरप्रकाशिनि



१३८ नन्दगोपाल

नन्दगोपाल

रागं: यमुनाकल्याणि (६५) ताळं: आदि

पल्लवि

नन्दगोपाल मुकुन्द गोकुलनन्दन्न यमुनातीरविहार

अनुपल्लवि

मन्दरगिरिधर मामव माधव मुरलीधर मधुसूधन हरे

चरणम्

मन्दहासवदन मञ्जुळचरण अरविन्दलोचन आश्रितरक्षण

पीताम्बरधर पन्नगशयन कलिकल्मषहरण करुणापूरण

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वन्दितमुनिबृन्द गुरुगुहा नन्द वैकुण्ठस्थितानन्द-

कन्द गोवर्धनोद्धार गोपस्त्रीजार गोविन्द



१३९ नभोमणिचन्द्राग्निनयनम्

नभोमणिचन्द्राग्निनयनम्

रागं: नभोमणि (४०) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

नभोमणि चन्द्राग्निनयनं नगजासहितबृहदीश्वरं

नमाम्यहं सततं सततम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

शुभोदयकरणनिपुणङ्गिं शुद्धस्फटिकसंकाशं

शरभेन्द्रसंसेवितचरणं राजशेखरं भयहरणं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

ऋभुप्रभृतिमुनिहृत्सदनं त्रिभुवनकरणमदनमथनम्



१४० नमस्ते परदेवते

नमस्ते परदेवते

रागं: देवराञ्जि (१५) ताळं: तिश्च एकम्

पल्लवि

नमस्ते परदेवते शिवयुवते कामाक्षि नमस्ते नमस्ते

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

समस्तविश्वोदयस्थितिलयमूलप्रकृते

साधुजनचित्तवृत्ते सङ्गीतशास्त्रयुक्ते

(मध्यमकालसाहित्यम्)

विमल गुरुगुहो त्पत्ते विनोदकरसम्पत्ते

समस्त देवरञ्जि तसच्चिदानन्दमूर्ते



१४१ नमो नमस्ते गीर्वाणि

नमो नमस्ते गीर्वाणि

रागम् गीर्वाणि (४३) : ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

नमो नमस्ते गीर्वाणि नादबिन्दुकलाश्रेणि

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

सुमनोपासितकल्याणि सुरासुरनुते ब्रह्माणि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

उमापतिरमापतिविदिते कुमारगुरुगुहसंमुदिते



१४२ नरसिंहाऽऽगच्छ

नरसिंहाऽऽगच्छ

रागं: मोहनम् (६५) ताळं: चापु

पल्लवि

नरसिंहाऽऽगच्छ परब्रह्मपुच्छ स्वेच्छ स्वच्छ

अनुपल्लवि

हरिहरब्रह्मेन्द्रादिपूजितात्यच्छ

परमभागवतप्रह्लादभक्त्यच्छ

चरणम्

धीरतरघटिकाचलेश्वर सौरतरहेमकोटीश्वर

वीरवर मोहनविभास्वर मार वरमानवहरीश्वर

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मुरहरनगधर सरसिजकर परमपुरुष पवनजशुभकर

सुरुचिरकरिगिरिवरद विचर सरसगुरुगुह हृदयसहचर



१४३ नरहरिमाश्रयामि

नरहरिमाश्रयामि

रागं: जयशुद्धमाळवि (१८) ताळं: त्रिपुट

पल्लवि

नरहरिमाश्रयामि सततं नारदादिमुनिविनुतं श्री

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

परामभागवतप्रह्लादवरदं जयशुद्धमाळवी -

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कुरुपाञ्चालादिविहारं गुरुगुहमोदितमतिधीरम्



१४४ नर्मदाकावेरी

नर्मदाकावेरी

रागं: नामदेशि (५०) ताळं: त्रिपुट

पल्लवि

नर्मदाकावेरीतीरनिलये मणिवलये कलये

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

धर्मसंवर्धनि धनिनि दनुजसंमर्दिनि जननि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

निर्मदगुरुगुहविश्वासिनि निर्मल हृदयाब्जनिवासिनि

कर्मज्ञानयोगरूपिणि धर्मादिपुरुषार्थदायिनि



१४५ नवरत्नमालिनीम्

नवरत्नमालिनीम्

रागं: गमकक्रिया (५३) ताळं: खण्ड एकम्

पल्लवि

नवरत्नमालिनीं नतजनपालिनीं
नमाम्यहं निजगुरुगुहाद्वाराधिनीम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

भवानीशभक्तजनदुःखध्वंसिनीं
भगमालीनकुलीभिः पूजितजननीम्
(मध्यमकालसाहित्यम्)

नवविधविषाद्याभिचारादिनाशिनीं
नवमणिरथारोहितयुद्धरङ्गिणीम्



१४६ नवरत्नविलासविभवप्रदे

नवरत्नविलासविभवप्रदे

रागं: नवरत्नविलासम् (२०) ताळं: आदि

पल्लवि

नवरत्नविलास विभवप्रदे नतशुभप्रदे बहुवरदे जय जय

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

भवरोगपरिहारिणि शर्वाणि भवमोहनकररूपिणि भवानि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नवचक्रबिन्दुपीठनिवासिनि नारायणि गुरुगुह विश्वासिनि



१४७ नागगान्धारीरागनुते

नागगान्धारीरागनुते

रागं: नागगान्धारि (२०) ताळं: आदि

पल्लवि

नागगान्धारी रागनुते नगजानन्दिते मामव

अनुपल्लवि

नागराजविनुते सुरहिते वागीशादि गुरुगुह वन्दिते

(मध्यमकालसाहित्यम्)

भागवतादिनुतपरदेवते परमतत्वार्थबोधिते शिवे

चरणम्

परमशान्तस्वरूपाकारे पादपङ्कजे पद्मकरे

(मध्यमकालसाहित्यम्)

निरतिशयसुखकरे सुरुचिरे ५५ सशरचापपाशाङ्कुशधरे



१४८ नागलिङ्गं नमामि

नागलिङ्गं नमामि

रागं: मोहनम् (६५) ताळं: आदि

पल्लवि

नागलिङ्गं नमामि सततं नामरूपप्रपञ्चातीतलिङ्गम्

अनुपल्लवि

नागराजमणिभूषितलिङ्गं श्रीनगरस्थितवल्मीकलिङ्गम्

चरणम्

आगमवेदान्तसारलिङ्गं आदिमध्यान्तरहितलिङ्गं

मूलभूतकारणात्मलिङ्गं नीलकण्ठस्वयंप्रकाशलिङ्गम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नागेन्द्रादिविनुतशङ्करलिङ्गं नारदादिनुतनन्दितुरङ्गं

वागीशवर गुरुगुह वन्दितसुन्दरशिव मोहन करलिङ्गम्



१४९ नागलिङ्गं भजेऽहम्

नागलिङ्गं भजेऽहम्

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: आदि

पल्लवि

नागलिङ्गं भजेऽहं अनादिलिङ्गं भजेऽहम्

अनुपल्लवि

नागवल्लीप्रसङ्गं नगजार्धाङ्गं नन्दितुरङ्गं

आगमशास्त्रपुराणप्रसङ्गं अविद्याभङ्गं अतिधवळाङ्गम्

चरणम्

स्थूलसूक्ष्मकारणात्मलिङ्गं सुखप्रदायकसुन्दरलिङ्गं

मूलभूतप्राकृतलिङ्गं मुनिगणाष्टनागार्चितलिङ्गम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नीलकण्ठगुरुगुहान्तरङ्गं नित्यशुद्धकरविधृतकुरङ्गं

कालहरं शिरोविधृतगङ्गं करुणापाङ्गं विजितानङ्गम्



१५० नागाभरणम्

नागाभरणम्

रागं: नागाभरणम् (३०) ताळं: आदि

पल्लवि

नागाभरणं नगजाभरणं नमामि भयहरणं भवतरणम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

भोगिराजशयनार्चितचरणं भुक्तिमुक्तिदप्रपञ्चभरणं^{५६}

(मध्यमकालसाहित्यम्)

योगिराजगुरुगुहप्रकाशं त्यागराजरूपं बृहदीशम्



१५१ निषदादि

निषदादि

रागं: निषदम् (६०) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

निषदादिदेशाधिपतिनुतनीलकण्ठेश पालय माम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

वृषभवाहन विश्वमोहन

(मध्यमकालसाहित्यम्)

विषयवासनादिविदारण वीरगुरुगुहोदयकारण



१५२ नीरजाक्षि कामाक्षि

नीरजाक्षि कामाक्षि

रागं: हिन्दोळम् (२०) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

नीरजाक्षि कामाक्षि नीरदचिकुरे त्रिपुरे

अनुपल्लवि

शारदारमानयने सारसचन्द्रानने

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वारिजपादे वरदे तारय मां तत्वपदे

चरणम्

गौरी हिन्दोळद्युतिहीरमणिमयाभरणे

शौरिविरिञ्चिविनुतशिवशक्तिमयनवावरणे

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नारीमण्याद्यर्चितनवनाथान्तःकरणे

सूरिजनसंसेवितसुन्दरगुरुगुहकरणे



१५३ नीलकण्ठ महादेव

नीलकण्ठ महादेव

रागं: वसन्त (१५) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

नीलकण्ठ महादेव निखिललोकलसत्प्रताप

अनुपल्लवि

फालचन्द्रशेखर हर पार्वतीमनोहर

चरणम्

धवलितकैलासक्षेत्र सामवेदगीतस्तोत्र

अवनिब्रह्मकपालक्षेत्र कामदहनविलासनेत्र



१५४ नीलकण्ठाय नमो नमस्ते

नीलकण्ठाय नमो नमस्ते

रागं: नादरामक्रिय (१५) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

नीलकण्ठाय नमो नमस्ते

(मध्यमकालसाहित्यम्)

निखिलागमसन्नतवराय नीरजासनादिपूजिताय

अनुपल्लवि

पालितदासजनमुकुन्दाय पन्नगाभरणभूषिताय^{५७}

चरणम्

बालार्कशशिवह्निनेत्रधराय बालगुरुगुहसेविताय

बालकुचाम्बासहवासाय

(मध्यमकालसाहित्यम्)

बालगीर्वाणगीत नादरामक्रियामोदिताय

श्रीनाथचिदानन्दानन्दसहिताय दक्षिणकाशीस्थिताय



१५५ नीलकण्ठं भजेऽहम्

नीलकण्ठं भजेऽहम्

रागं: केदारगौळ (२८) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

नीलकण्ठं भजेऽहं सततं नीरजासनादिनुतम्

अनुपल्लवि

बालकुचाम्बासहितं बालचन्द्रसेवितं

शील **गुरुगुह** पूजितं श्रीकदम्बवननाथम्

चरणम्

अक्षयरूपाखण्डकावेरीतीरोत्तराभिमुखं

पञ्चमुखं रक्षितभक्तप्रमुखं नक्षत्रेशशेखरम्

नामरूपविचित्रतरदक्षतरमीश्वरं **केदारगौळ** प्रियकरं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

दक्षिणकाशीपुरं दण्डितकामत्रिपुरं

दक्षाध्वरहरं हरं दयाकरं कमलकरम्



१५६ नीलाङ्गम्

नीलाङ्गम्

रागं: नीलाम्बरि (२९) ताळं: खण्ड एकम्

पल्लवि

नीलाङ्गं हरिं नित्यं स्मरामि

अनुपल्लवि

नीलाम्बरा नुजं निरुपमपदाम्बुजं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नीलकण्ठपिञ्छमौळिं दासाळिम्

चरणम्

कारुण्यसागरं कमनीयकन्धरं मारजयसुन्दरं माधवं नगधरं

सारसकरं वरं सरससुगुणाकरं श्रीरुक्मिणीवरं शृङ्गारशेखरं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वीरं गुरुगुहोपचारं नवनीतचोरं गोपस्त्रीजारं धीरतरम्



१५७ नीलाचलनाथम्

नीलाचलनाथम्

रागं: सुमद्युति (५७) ताळं: आदि

पल्लवि

नीलाचलनाथं भजेऽहं निखिललोकजगत्प्रसिद्धेश्वरम्^{५८}

अनुपल्लवि

नीलाम्बिकामनोल्लासकरं निरन्तरं भक्तवशङ्करम्

चरणम्

इन्द्रनीलपर्वतस्थितप्रसिद्धं इन्द्रादिपूजितवरप्रदं

माधवाद्यमरबृन्दसन्नुतं मानित **गुरुगुह** वन्दितवरम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

चन्द्रशेखरं कृपाकरं गङ्गाधरं शूलादिधरं

अर्जुनतपोमहितपाशुपतास्त्रप्रदं त्रिपुरादिहरम्



^{५८}निखिललोकजगत्प्रसिद्धेश्वरम्

१५८ नीलोत्पलाम्बा जयति

नीलोत्पलाम्बा जयति

रागं: नारायणगौळ (२९) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

नीलोत्पलाम्बा जयति नित्यशुद्धशुभदायिका श्री

अनुपल्लवि

मूलाज्ञानहर गुरुगुह जननी

(मध्यमकालसाहित्यम्)

फाललोचनी पुराणी पन्नगवेणी नतवाणी

चरणम्

शिवकामेश्वरी शङ्करी शृङ्गाररसकरी

पाशाङ्कुशधरी परमदयाकरी

(मध्यमकालसाहित्यम्)

भवरोगहरनिपुणवरदायिन्यां नारायणगौळ रागमोदिन्यां

भुक्तिमुक्तिमच्चित्तं विलयतु



१५९ नीलोत्पलाम्बाम्

नीलोत्पलाम्बाम्

रागं: नारीरीतिगळ (२०) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

नीलोत्पलाम्बां भज रे रे चित्त
वीथिविटङ्कत्यागराजान्तरङ्गां श्री

अनुपल्लवि

मूलकूटत्रयकलेबरशोभारुणां मुचुकुन्दादिनुतपङ्कजचरणां
(मध्यमकालसाहित्यम्)

मूलविद्यादाननिपुणां विधिपूजितविनोदकिरणाम्
चरणम्

कमलानगरनिवासिनीं गुरुगुहमार्गं रीतिकौळिनीं
कमनीयकामकलाप्रदर्शिनीं कादिहाद्यादिमनुविश्वासिनीम्
(मध्यमकालसाहित्यम्)

सामगानशिरःकम्पिनीं अखिलमहादुरितभञ्जनीं
कोमळकुचकचभराङ्गिणीं मुकुन्दसोदरीं पुराणीम्



१६० नीलोत्पलाम्बिकया

नीलोत्पलाम्बिकया

रागं: कन्नडगौळ (२२) ताळं: आदि

पल्लवि

नीलोत्पलाम्बिकया निर्वाणसुखप्रदया रक्षितोऽहम्

अनुपल्लवि

वल्लीश गुरुगुह पूजितया वरलक्ष्मीवाणीसेवितया

(मध्यमकालसाहित्यम्)

हल्लीशलास्यसन्तुष्टया आरक्तवर्णशोभितकरया

चरणम्

काशी कन्नडगौळ देशादिवासदासजनावनतोषितया

वासवादिवन्दितवागीशवासुदेवाद्याराधितया

(मध्यमकालसाहित्यम्)

श्रीशिवपुराणप्रतिपादितया शिवशङ्करनायिकया श्री



१६१ नीलोत्पलाम्बिकायाम्

नीलोत्पलाम्बिकायाम्

रागं: पूर्वगौळ (२९) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

नीलोत्पलाम्बिकायां भक्तिं करोमि श्री

अनुपल्लवि

नीलोत्पलनायकसमेतायां निखिलागमसन्नुतायां

नीलाम्बरपुष्पमालावृतायाम्

चरणम्

कविजनादिमोदिन्यां कमलेशपालिन्यां

सूर्यकोटिप्रकाशिन्यां सूरिजनोपासित पूर्वगौळ प्रकाशिन्याम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

अविद्याविद्यास्वरूपिण्यां आरक्तवर्णरूपिण्यां

इभवदन गुरुगुहा दिजनन्याम्



१६२ नीलोत्पलाम्बिकायाः परम्

नीलोत्पलाम्बिकायाः परम्

रागं: गौळ (१५) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

नीलोत्पलाम्बिकायाः परं नहि रे रे चित्त

अनुपल्लवि

सालोकादिमुक्तिदायिन्याः सुरपति गुरुगुह सन्नुतचरणायाः

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नीलरत्नमणिभूषिण्याः निरञ्ज्याः

चरणम्

स्थूलसूक्ष्मकारणरूपिण्याः बालचन्द्रसेवितवरदायिन्याः

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कैलासविलसितकुळ कौळमार्गयोगिन्याः



१६३ नीलोत्पलाम्बिकायास्तव

नीलोत्पलाम्बिकायास्तव

रागं: मायामाळवगौळ (१५) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

नीलोत्पलाम्बिकायास्तव दासोऽहं श्री

अनुपल्लवि

नीलाम्बरानुजाया: निरुपमपदाम्बुजाया:

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नीलकण्ठार्धशरीरिण्या: निखिललोकजनन्या:

चरणम्

मायामाळवगौळा दिदेशप्रकाशिन्या:

मातङ्गवदनेन्द्रादिपूजितवरदायिन्या:

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मायामयविश्वोत्पत्तिस्थितिलयकारणाया:

माधुर्यामृतधारमहादेव गुरुगुह पाशिन्या:



१६४ नीलोत्पलाम्बिकायै

नीलोत्पलाम्बिकायै

रागं: केदारगौळ (२८) ताळं: आदि

पल्लवि

नीलोत्पलाम्बिकायै नमस्ते जगदम्बिकायै

अनुपल्लवि

मूलाधारक्षेत्रस्थितायै मुचुकुन्दवरप्रदायै

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मूलमन्त्रात्मिकायै मूलाज्ञानहरगुरुगुहवरदायै

चरणम्

कामसञ्जीविन्यै कमलावाणीसेवितायै

कलिकल्मषनाशिन्यै करुणामृतरसप्रवाहिन्यै

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कामेश्वरमोहितकौळिन्यै कामतन्त्रवितरणनलिन्यै

कमलेशपूजितत्रिकोणायै कामितार्थफलप्रदनिपुणायै



१६५ नीलोत्पलाम्बिके

नीलोत्पलाम्बिके

रागं: छायागौळ (१५) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

नीलोत्पलाम्बिके नित्यशुद्धात्मिके मामव

अनुपल्लवि

त्रिलोकजननि त्रिभुवनमोहिनि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

त्रैलोक्यचक्रवासिनि सद्गुरुगुह विश्वासिनि

चरणम्

मायाप्रपञ्जातीतस्वरूपिणि

मुचुकुन्दभक्तपालिनि वरदायिनि

छायागौळ रागमोदिनि निरञ्जनि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सायुज्यादिदायिनि सच्चिदानन्दरूपिणि



१६६ नी साटि दैवमेन्तुलेदनि

नी साटि दैवमेन्तुलेदनि

रागं: श्रीरञ्जनि (२२) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

नी साटि दैवमेन्तुलेदनि मरुलु कोण्डिरा

नी दानरा नन्नेलरा म्रोक्केर

अनुपल्लवि

वासवाद्यमरुलेल्ल वम्रिस्वरूप

मेत्ति वासुदेवगर्वमनचिवरुसगानमरु

श्रीपुरवास दास चिद्विलास वल्लिकेश जगदीश

मुक्तायिस्वर साहित्यम्

नी मीदने मिगुलवलपु सोलपुगलुपुगोलुपु

मनम्बुतो निजम्बुगा बयलुदेरि होयलुमीरि

चेलिमिकोरि वलचिनानु बिरानबहु वरालोसगु



१६७ पङ्कजमुख

पङ्कजमुख

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: तिश्च एकम्

नोटुस्वर साहित्यम्

पङ्कजमुख शङ्करहित सङ्कटहर

वेङ्कटगिरिवास नारायणा-

नन्त गोविन्द दामोदरानन्द संरक्षकाश्रित-

वात्सल्य पादाम्भोरुह पाहि मां दीनबन्धो



१६८ पञ्चमातङ्गमुखगणपतिना

पञ्चमातङ्गमुखगणपतिना

रागं: मलहरि (१५) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

पञ्चमातङ्गमुखगणपतिना परिपालितोऽहं सुमुखेन श्री

अनुपल्लवि

पञ्चभूतात्मकप्रपञ्चोदयादिकरण-

(मध्यमकालसाहित्यम्)

विरिञ्चिहरिरुद्रनुतेन पञ्चवक्त्रशिवसुतेन

चरणम्

वरदाभयपाशसृणिकपालदन्तमोदकमु-

ङ्गराक्षमालाकरेण कमलापुरविहारेण

पुरुहूताद्यखिलदेवपूजितविघ्नेश्वरेण

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वरगुरुगुहसोदरेण सुरुचिरलम्बोदरेण

करुणार्द्रगौरतरेण कलि मलहरणचतुरेण



१६९ पञ्चभूतकिरणावलिम्

पञ्चभूतकिरणावलिम्

रागं: किरणावलि (२१) ताळं: खण्ड एकम्

पल्लवि

पञ्चभूत किरणावलिं चन्द्रमौलिं

भावयामि गुरुगुह तातं सन्ततम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

पञ्चीकृतप्रपञ्चातीतमगणितं फणिराजाभरणं पल्लवजयचरणं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वाञ्छितफलप्रदं बृहन्नायकीशं बृहदीशं जगदीशं स्वयंप्रकाशम्



१७० पञ्चाशत्पीठरूपिणि

पञ्चाशत्पीठरूपिणि

रागं: देवगान्धारम् (२२) ताळं: आदि

पल्लवि

पञ्चाशत्पीठरूपिणि मां पाहि श्री राजराजेश्वरि

अनुपल्लवि

पञ्चदशाक्षरि पाण्ड्यकुमारि पद्मनाभसहोदरि शङ्करि

चरणम्

देवि जगज्जननि चिद्रूपिणि देवादिनुत गुरुगुह रूपिणि

देशकालप्रवर्तिनि महादेवमनोल्लासिनि निरञ्जनि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

देवराजमुनिशापविमोचिनि देवगान्धार रागतोषिणि

भावरगतताळविश्वासिनि भक्तजनप्रियफलप्रदायिनि



१७१ पन्नगशयन पद्मनाभ

पन्नगशयन पद्मनाभ

रागं: मध्यमावति (२२) ताळं: आदि

पल्लवि

पन्नगशयन पद्मनाभ परिपालय मां पङ्कजनाभ

अनुपल्लवि

उन्नतपाण्ड्यकेरळनिवास श्रीनिवास चिदानन्दविलास

चरणम्

पायसान्नप्रियकर श्रीकर परशुरामक्षेत्रप्रभाकर

परमभक्तप्रह्लादादिविनुत प्रसिद्ध गुरुगुह हितोपकार

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मायातीत मन्दरगिरिधर करधृतशङ्खचक्रगदादिधर

तोयजासनादिसंसेवित दामोदर दयाकर वरदकर



१७२ परदेवता बृहत्कुचाम्बा

परदेवता बृहत्कुचाम्बा

रागं: धन्याशि (२०) ताळं: आदि

पल्लवि

परदेवता बृहत्कुचाम्बा संरक्षतु मां श्रीजगदम्बा

अनुपल्लवि

शारदारमासन्नुतसकळा शरच्छ्राम्पेयपुष्पपदयुगळा

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वर **गुरुगुह** जननी चिन्मालिनी स्थिरतरसम्पत्प्रदानधनिनी

चरणम्

चराचरात्मकप्रपञ्चजननी चारुचन्द्रहासिनी सुवासिनी

चिदानन्दमहालिङ्गमोहिनी चिद्रूपिणी भक्तविश्वासिनी

(मध्यमकालसाहित्यम्)

करुणारसप्रवाहिनी कौळिनी कलिकल्मषनाशिनी हंसिनी

कलामालिनी कात्यायनी कञ्जलोचनी भवपाशमोचनी



१७३ परदेवते नमस्ते

परदेवते नमस्ते

रागं: आनन्दभैरवि (२०) ताळं: आदि

पल्लवि

परदेवते नमस्ते पाहि मां ललिते वरदे

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

सुरसेविते नित्यशुद्धविद्ये सरससदये सङ्गीतप्रिये

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सरसिजपदयुगळे सकले गुरुगुहो दये विजये त्रिपुरे



१७४ परदेवते भक्तपूजिते

परदेवते भक्तपूजिते

रागं: हुशानि (२२) ताळं: आदि

पल्लवि

परदेवते भक्तपूजिते भद्रं देहि आशु मां पाहि

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

चिरतरसंपत्प्रदश्रीविद्ये चिदग्निकुण्डोदयशुभनित्ये

(मध्यमकालसाहित्यम्)

हरिहयादिनुत गुरुगुह विदिते हिरण्यमणिमयमन्दिरस्थिते



१७५ परदेवते भक्तभवमोदिनि

परदेवते भक्तभवमोदिनि

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: रूपकम्

नोटुस्वर साहित्यम्

परदेवते भवभक्तमोदिनि पाहि मां पालिनि
हंसिनि करुणाकरि कमलाक्षि सुन्दरि कामिनि
कौळिनि शङ्करि परिशुद्धचित्तरञ्जनि मालिनि
पादपङ्केरुहपद्मिनि गुरुशिष्यरूपधारिणि
कोमळाकारिणि मन्त्रिणि योगिनि श्री



१७६ परमशिवात्मजम्

परमशिवात्मजम्

रागं: यमुनाकल्याण् (६५) इ ताळं: आदि

पल्लवि

परमशिवात्मजं नमामि सततं पालितभक्तं सदा भजेऽहम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

सुरसैन्यनाथं वल्लीसनाथं वरशिखिवाहनं वारिजलोचनं

शूरतारकादिहरं शिवकरं क्रूरपापहरं कुमारगुरुगुहम्



१७७ परमेश्वर जगदीश्वर

परमेश्वर जगदीश्वर

रागं: चलनाट (३६) ताळं: अदि

पल्लवि

परमेश्वर जगदीश्वर शङ्कर पाहि मां प्रणतार्तिहर श्री

अनुपल्लवि

पुरहर मृगधर सुन्दरेश्वर धर्मसंवर्धनीमनोहर

चरणम्

पञ्चनदीश्वर गङ्गाधरेश्वर पन्नगाभरण भक्तजनावन

पञ्चब्रह्महत्यादिपापहर परशिवतत्त्वार्थबोधितचतुर

(मध्यमकालसाहित्यम्)

पञ्चनदक्षेत्रप्रभाकर पालित गुरुगुह भवभयहर

वीर क्षेत्रपालविनुतचरण विचित्रयमभयादिनिवारण



१७८ परमेश्वरेण

परमेश्वरेण

रागं: पूर्ववराळि (३) ताळं: आदि

पल्लवि

परमेश्वरेण पालितोऽस्म्यहम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

परमदयाकरगुरुगुहवरेण पार्वतीमनोल्लासकरणेन

(मध्यमकालसाहित्यम्)

परमशान्तस्वरूपात्मकेन पूर्ववराळिरागमुदितेन



१७९ पराशक्ति ईश्वरि

पराशक्ति ईश्वरि

रागं: गौरिवेलावलि (२३) ताळं: आदि

पल्लवि

पराशक्ति ईश्वरि जगज्जननि

अनुपल्लवि

परादिचत्वारिवाक्स्वरूपिणि परात्परि पाहि मां शङ्करि

चरणम्

मुरारिप्रमुखाद्युपासिनि मूलमन्त्रयन्त्रस्वरूपिणि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

गौरीशसुन्दरेश्वरमोहिनि गुरुगुह जननि गानलोलिनि

✠ ✠ ✠ ✠ ✠

१८० पराशक्तिम्

पराशक्तिम्

रागं: रुद्रप्रिय (२२) ताळं: आदि

पल्लवि

पराशक्तिं भजरे पामर

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

परमार्थरूपिणीं पापविमोचनीं भक्तजनपालिनीं भण्डमर्दिनीम्

गुरुगुह रूपिणीं गुणत्रयरूपिणीं गुरुमण्डलवासिनीं कौळिनीम्



१८१ परिमळरङ्गनाथम्

परिमळरङ्गनाथम्

रागं: हमीर् कल्याणि (६५) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

परिमळरङ्गनाथं भजेऽहं वीरनुतं

परिपालितभक्तं पुण्डरीकवल्लरीनाथम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

हरिमप्राकृताकृतिं मत्स्यादिदशाकृतिं

अन्तरङ्गशयनमब्जनयनं नारायणम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

गुरुगुहविदितं सततं गुणिजनमुदितं सततं

परमेश्वरं रमेश्वरं मेश्वरं ईश्वरम्



१८२ परिमलरङ्गनाथम्

परिमलरङ्गनाथम्

रागं: हमीर् कल्याणि ताळं: रूपकम्

पल्लवि

परिमलरङ्गनाथं भजेऽहं वीरनुतं
परिपालितभक्तं पुण्डरीकवल्लीनाथम्

अनुपल्लवि

हरिं अम्बरीषशीतांशुवेदादिपूजितं
मुरहरं भयहरं नरहरिं धृतगिरिं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सुरनरमुनिजनमुदितं पुरहरं गुरुगुहं विदितम्

चरणम्

सुगन्धविपिनान्तरङ्गशयनं रविशशिनयनं
शुकशौनकादिहृत्सदनं सरसिजवदनम्
खगराजतुरङ्गं कमनीयशुभाङ्गं
कनकाम्बरकौस्तुभमणिधरं कम्बुकन्धरम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

गगनसदृशमब्जकरं गजराजक्षेमकरं
नगपतिसुतासोदरं नरवरददामोदरम्



१८३ परंज्योतिष्मती पार्वती

परंज्योतिष्मती पार्वती

रागं: ज्योति (६८) ताळं: आदि

पल्लवि

परंज्योतिष्मती पार्वती परमेश्वरयुवती महाभगवती

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

निरञ्जनी निखिललोकजननी निरङ्कुशकृपाद्भुतरञ्जनी

(मध्यमकालसाहित्यम्)

निरन्तरं गुरुगुह संरक्षणी निरंशतत्वलक्षणी विचक्षणी



१८४ परंधामवती

परंधामवती

रागं: धामवति (५९) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

परंधामवती जयति पार्वती परमेशयुवती

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

परंज्योतिर्विकासिनी परमात्मप्रकाशिनी

(मध्यमकालसाहित्यम्)

निरन्तरं गुरुगुह जननी बृहदीशरञ्जनी



१८५ पर्वतराजकुमारि

पर्वतराजकुमारि

रागं: श्रीरञ्जनि (२२) ताळं: आदि

पल्लवि

पर्वतराजकुमारि श्रीपार्वति पाहि मां परमेश्वरि

अनुपल्लवि

सर्वानन्दमयचक्रवासिनि सद्गुरुगुहजननि श्रीरञ्जनि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

शर्वाणि शंभुमोहिनि शरच्चन्द्रिकाधवळप्रकाशिनि

चरणम्

कैलासपुरविलसितप्रसिद्धकामेश्वरि कञ्जलोचनि

कविहृदयावेशिनि पाशमोचिनि पाकशासनादिदेवपालिनि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कौळिनि त्रिपुरादिमर्दिनि कन्दर्पजनकापाङ्गवीक्षिणि

कैवल्यप्रदायिनि काव्यालापविनोदिनि मन्दहासिनि



१८६ पर्वतवर्धनि पाहिमाम्

पर्वतवर्धनि पाहिमाम्

रागं: साम (२९) ताळं: अदि

पल्लवि

पर्वतवर्धनि पाहिमां परशिवतत्वस्वरूपिणि श्री

अनुपल्लवि

पर्वतराजनुतप्रसादिनि प्रसिद्धगुरुगुहवरप्रसादिनि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सर्वपापप्रशमनि शङ्करि सामगानविनोदिनि धनिनि

चरणम्

रामनाथमनोल्लासिनि रामचन्द्रपूजितविलासिनि

कोटितीर्थलावण्यशालिनि कोमळतरचरणयुगळनळिनि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कामजनकविधीन्द्रतोषिणि कनत्कनकताटङ्कभूषणि

कविजनादिनुतसेतुमध्यगन्धमादनपर्वतविहारिणि



१८७ पवनात्मजागच्छ

पवनात्मजागच्छ

रागं: चलनाट (३६) ताळं: झम्प

पल्लवि

पवनात्मजागच्छ परिपूर्णस्वच्छ
परमात्मपुच्छ पाहि मां जय जय^{५९}

अनुपल्लवि

नवव्याकरणनिपुण नवविधान्तःकरण
शिवरामहरिकृष्णश्री गुरुगुह स्मरण
चरणम्

कपटवानरवेष काव्य नाट कतोष
कपियूथपरिपोष कमनीयभाष
अपगताखिलदोष हतराक्षसाशेष
उपनिषत्पदघोष उदितमित्रद्वेष
(मध्यमकालसाहित्यम्)

अभिरूपमणिभूष रिपुजयबलविशेष
जपसमाध्यभिलाष अपरिमितसन्तोष



^{५९}जय जय नवनवनव जय जय

१८८ पवनात्मजम्

पवनात्मजम्

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: आदि

पल्लवि

पवनात्मजं भज रे चित्त परमशान्तं सुरगुरुगुहमहितम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

भुवनत्रयव्यापकमतिललितं भूसुरादिसेवितरामदूतं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

श्रवणरामनामप्रभावं शाश्वतसञ्जीविन्यौषदकरम्



१८९ पशुपतीश्वरम्

पशुपतीश्वरम्

रागं: शिवपन्तुवराळि (४५) ताळं: आदि

पल्लवि

पशुपतीश्वरं प्रणौमि सततं पालितभक्तं सदा भजेऽहम्

अनुपल्लवि

पश्चिमकाश्मीरराजविनुतं पन्नगाभरणधरं सुशोभितम्

चरणम्

पाकशासनादिदेवबृन्दं पञ्चाननं प्रणतमुनिबृन्दं

परशिवतत्वबोधितानन्दं वरगुरुगुहनुतं सोमास्कन्दम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

शोकहरं शुभफलप्रदकरं परशुमृगधरं शूलादिधरं

शुकशौनकादितोषित शिवपन्तुवराळि रागप्रियमतिचतुरम्



१९० पामरजनपालिनि

पामरजनपालिनि

रागं: सुमद्युति (५७) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

पामरजनपालिनि पाहि बृहन्नायकि

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

कामितार्थफलदायिनि कारुण्यामृतवाहिनि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कोमळहृदयनिवासिनि गुरुगुहमतिप्रकाशिनि

सीमन्तिनि नतमन्त्रिणि श्रीमहादेवरञ्जनि



१९१ पार्वतीकुमारम्

पार्वतीकुमारम्

रागं: नाटकुरञ्जि (२८) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

पार्वतीकुमारं भावये सततं शरवणभवगुरुगुहं श्री

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

मार्गसहायप्रियसुतं माधवाद्यमरादिनुतं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

माणिक्यमकुटशोभितमानितगुणवैभवम्



१९२ पार्वतीपतिम्

पार्वतीपतिम्

रागं: हंसध्वनि (२९) ताळं: अदि

पल्लवि

पार्वतीपतिं प्रणौमि सततं आश्रितजनमन्दारं शशिधरम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

पर्वतराजनुतपदाम्बुजं भद्रप्रदकैलासविराजं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

गर्वितत्रिपुरादिहरचतुरं गुरुगुहं वन्दितशिवशङ्करम्



१९३ पार्वतीपते

पार्वतीपते

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: चतुरश्र एकम्

नोटुस्वर साहित्यम्

पार्वतीपते सदा पालयाशु शम्भो
पादसरोजानन्दनटनधीर विभो श्रीप्रभो
गर्वितदानवभीकर शङ्कर देवदेव गोक्षीर भङ्गीतर
वर्णरूपाकार कामाक्षीश एकाम्रपते गुरुगुह



१९४ पार्वतीश्वरेण

पार्वतीश्वरेण

रागं: भूषावति (६४) ताळं: आदि

पल्लवि

पार्वतीश्वरेण रक्षितोऽहं परमार्थतत्त्वबोधितशिवेन

अनुपल्लवि

पर्वतराजात्मजारमणेन भक्तजनावन गुरुगुहनुतेन

चरणम्

गङ्गाधरेश्वरेण वरेण गन्धर्वसेवितपदाम्बुजेन

सूर्यचन्द्राग्निनयनविलासेन कार्यकारणात्मकप्रवृत्तेन

(मध्यमकालसाहित्यम्)

पङ्कजासनाद्यर्चितपदेन परमशान्तस्वरूपात्मकेन

सङ्कटहरणेन सदाशिवेन नित्यशुद्धबुद्धमुक्तेन श्री



१९५ पालय मां परमेश्वरि

पालय मां परमेश्वरि

रागं: तरङ्गिणि (२६) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

पालय मां परमेश्वरि कृपाकरि शङ्करि

अनुपल्लवि

नीलमेघश्यामळे सकले सकलकले

चरणम्

सदाशिवमनोहरि सच्चिदानन्दलहरि

सामरस्य निदर्शिनि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सदाचारप्रवर्त्तिनि सद्गुरुगुहा न्तरङ्गिणि



१९६ पालय मां पार्वतीश

पालय मां पार्वतीश

रागं: कन्नड (२८) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

पालय मां पार्वतीश भक्तजनावन जगदीश

अनुपल्लवि

मलयध्वजपाण्ड्यराजपूजितपङ्कजचरण

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वल्लभेश गुरुगुह सूनो^{६०} शिव भयहरणनिपुण

चरणम्

गानामृतरसपान कलिकल्मषविनाशन

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सनकादिमुदित शम्भो सदानन्दस्वयंभो



१९७ पालय मां बृहदीश्वर

पालय मां बृहदीश्वर

रागं: नायकि (२२) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

पालय मां बृहदीश्वर पालितभुवनेश्वर

अनुपल्लवि

विलसिततञ्जपुरीश्वर बृहन्नायकीमनोहर

चरणम्

दीनजनावन शङ्कर दिवाकराग्निशशिनेत्र

दानवसुरसेवित वरदाननिपुणमहेश्वर

(मध्यमकालसाहित्यम्)

गानविद्याप्रदेश्वर मानित गुरुगुह सोदर

सन्नुतानन्दकर परमेश्वर शुभकर हर हर



१९८ पालय मां बृहदीश्वरि

पालय मां बृहदीश्वरि

रागं: तोडि (८) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

पालय मां बृहदीश्वरि भक्तजनावनशङ्करि

अनुपल्लवि

बालचन्द्रशेखरि बालापरमेश्वरि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वल्लीश गुरुगुहा दिवन्दितवरदाभयकरि

चरणम्

बृहदीश्वरमोहिनि बृहन्नायकि धनिनि

परमहंसस्वरूपिणि परमशान्तप्रकाशिनि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

महेन्द्राद्युपासिते ललिते मंगळवरदे

सहस्रदळपद्मस्थिते सदानन्दसहिते



११९ पाहि दुर्गे

पाहि दुर्गे

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: चतुरश्र एकम्

नोटुस्वर साहित्यम्

पाहि दुर्गे भक्तं ते पद्मकरे विजयचिच्छक्ते

एहि देहि सर्वज्ञे यतिनुतगणपतिगुरुगुहजननि माम्



२०० पाहि मां जनकीवल्लभ

पाहि मां जनकीवल्लभ

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: तिश्च एकम्

नोटुस्वर साहित्यम्

पाहि मां जानकीवल्लभ श्रीहरे भारतीशप्रियानन्तमूर्ते
देहि मे संपदं दीनचिन्तामणे देव देवोत्तमानन्दकीर्ते
एहि काकुत्स्थ कोदण्डहस्त ईप्सितार्थप्रदाह्लादचित्त



२०१ पाहि मां पार्वति परमेश्वरि

पाहि मां पार्वति परमेश्वरि

रागं: मोहनम् (६५) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

पाहि मां पार्वति परमेश्वरि श्री

अनुपल्लवि

मोहन सुन्दरस्वरूपिणि शङ्करि

मोदककर गुरुगुह भक्तजनावनशङ्करि

चरणम्

पञ्चाननहृदयेश्वरि परमेश्वरमोहिनि

सर्वेश्वरि सर्वानन्दमयचक्रवासिनि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वाञ्छितार्थफलप्रदायिनि वारिजासनादिनुत-

चरणनळिनि संप्रदायकुलोत्तीर्णयोगिनि



२०२ पाहि मां रत्नाचलनायक

पाहि मां रत्नाचलनायक

रागं: मुखारि (२०) ताळं: आदि

पल्लवि

पाहि मां रत्नाचलनायक भक्तजनशुभप्रदायक

अनुपल्लवि

मोहजाराळकेशि वरधव मुक्तिप्रद नतविरिञ्चिमाधव

(मध्यमकालसाहित्यम्)

रोहिणीशशिरविवह्निनयन भवरोगहरणनिपुणतरचरण शिव

चरणम्

सद्योजातादिपञ्च मुखारि षड्वर्गरहितहृत्सञ्चार

विद्योदयवियदादिप्रपञ्चकल्पातीत तत्वविचाराऽ-

विद्यात्मक श्रीचक्राकार विचित्रनवरत्नगिरिविहार

गद्यानुविद्धपद्यादिविनुत गङ्गाधरागमसार

(मध्यमकालसाहित्यम्)

अद्याप्यार्यवंशजाततुर्यजातिभृताखण्डकावेरी-

नद्योदकाभिषिक्तशरीर अनादि गुरुगुह कुमार मारहर



२०३ पीतवर्णम्

पीतवर्णम्

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: तिश्च एकम्

नोटुस्वर साहित्यम्

पीतवर्णं भजे भैरवं भूतवेताळसंसेव्यमानं

पीतवस्त्रं सुवर्णप्रदं वीतरागं गुरुगुहात्मजम्



२०४ पुरहरनन्दन

पुरहरनन्दन

रागं: हमीर् कल्याणि (६५) ताळं: आदि

पल्लवि

पुरहरनन्दन रिपुकुलभञ्जन शिखीन्द्रवाहन महेन्द्रपालन

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

करुणामृतरससागर तरुणामृतकरशेखर

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सुरवैरिकाल पुरवैरिबाल गुरुगुह सरसिजकर स्कन्दलील



२०५ पूर्णचन्द्रबिम्बविजयवदने

पूर्णचन्द्रबिम्बविजयवदने

अष्ट (षड्) रागमालिका ताळः रूपकम्

पूर्णचन्द्रिका रागः

पूर्णचन्द्र बिम्बविजयवदने कमलाम्बिके
पाहि मां वरदे गुरुगुह जननि श्री

नारायणी रागः

पुण्यजनपूजिते नारायणी जगदम्बिके

सरस्वतीमनोहरि रागः

पूर्णफलप्रदचरणे सरस्वतीमनोहरे

शुद्धवसन्त रागः

पुष्पित शुद्धवसन्ते पुण्डरीकसदृशकरे

६१ केदर रागः

केदारे शसहाये गुरुगुह वेदितहृदये

बिलहरि रागः

भण्डप्राण बिलहरि भक्तजनानन्दकरि

हंसध्वनि रागः

अहर्निशंप्रकाशमान हंसध्वनि विराजिते

नागध्वनि रागः

^{६१}चरणद्वयम् (५, ६) मुद्रितेषु कोशेषु नास्ति

अपर्णे कुण्डलिनि नागध्वनि सहिते
ध्वनिसहिते सहिते हिते ते



२०६ प्रणतार्तिहराय नमस्ते

प्रणतार्तिहराय नमस्ते

रागं: सामन्त (३०) ताळं: आदि

पल्लवि

प्रणतार्तिहराय नमस्ते वरधर्मसंवर्धनीसहिताय

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

प्रणतगणपति गुरुगुह ताताय प्रसिद्धक्षेत्रपालसेविताय

(मध्यमकालसाहित्यम्)

घृणिशशिवह्निनयनाय नन्दितुरगाय चिदानन्दनाथाय

पञ्चनदक्षेत्रप्रकाशाय पाकशासननुतपदाम्बुजाय



२०७ प्रणतार्तिहरम्

प्रणतार्तिहरम्

रागं: नायकि (२२) ताळं: आदि

पल्लवि

प्रणतार्तिहरं नमामि सततं पञ्चनदक्षेत्रप्रकाशितम्

अनुपल्लवि

गणनायकादिसकलसुरनुतं गीतवाद्यादिमुदितमनन्तम्

चरणम्

वसन्तऋतुमेषमासोत्सवं वीरक्षेत्रपालप्रभावं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वासुदेवनतसप्तस्थानं विचित्रयमभयादिनिवारणम्

वासुकिकार्कोटकादिधरणं वरधर्मसंवर्धनीरमणं

दासजनादिधनधान्यप्रदं धीरतरगुरुगुहपूजितपदम्



२०८ प्रत्यङ्गिराभगवतीम्

प्रत्यङ्गिराभगवतीम्

रागं: नादरामक्रिय (१५) ताळं: चापु

पल्लवि

प्रत्यङ्गिराभगवतीं सदा नमाम्यहं प्रबलसिंहवाहनारूढाम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

नित्यं शिवभक्तवरदां निखिलजनादिनुतनिजपादां

नित्यशुद्धपरमानन्दां निजगुरुगुहमोदकुमुदाम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

शक्त्यादिसमूहाकारां शरभेशमदहरणचतुरां

क्षित्यादितत्वान्तरूपां क्षंकारानन्दविलेपाम्



२०९ प्रसन्नवेङ्कटेश्वरम्

प्रसन्नवेङ्कटेश्वरम्

रागं: वाटीवसन्तभैरवि (१४) ताळं: त्रिपुट

पल्लवि

प्रसन्नवेङ्कटेश्वरं भज रे वाटीवसन्तभैरवी नुतं श्री

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

प्रसिद्धतञ्जनगरस्थितं प्रबल गुरुगुह वेद्यमाद्यं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वसिष्ठवामदेवविदितं वरालमेलुमङ्गाश्रितं

रसिकशेखरं कृपाकरं रक्षितभक्तानन्दकरम्



२१० बालकुचाम्बिके

बालकुचाम्बिके

रागं: सुरटि (२८) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

बालकुचाम्बिके मामव वरदायिके श्री

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

बालेन्दुशेखरि भक्तजनावनशङ्करि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नीलकण्ठमनोरञ्जनि गुरुगुह जननि

नीरजासनादिपोषिणि कदम्बवनवासिनि



२११ बालकृष्णं भावयामि

बालकृष्णं भावयामि

रागं: गोपिकावसन्तम् (२०) ताळं: आदि

पल्लवि

बालकृष्णं भावयामि बलरामानुजं वसुदेवजम्

अनुपल्लवि

नीलमेघगात्रं स्तुतिपात्रं नित्यानन्दकन्दं मुकुन्दम्

चरणम्

कमललोचनं कर्ममोचनं कपटगोपिकावसन्तं

अमरार्चितचरणं भवतरणं अर्जुनसारथिं करुणानिधिम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

ममतारहितं गुरुगुहविहितं माधवं सत्यभामाधवं

कमलेशं गोकुलप्रवेशं कंसभञ्जनं भक्तरञ्जनम्



२१२ बालगोपाल

बालगोपाल

रागः भैरवि (२०) ताळः आदि

पल्लवि

बालगोपाल पालयाशु मां भक्तवत्सल कृपाजलधे हरि

अनुपल्लवि

नीलनीरदशरीर धीरतर नीरजकर निरुपमानन्दकर

(मध्यमकालसाहित्यम्)

लीलया गोपवेषधर मुरलीधर श्रीधर दामोदर वर

चरणम्

चाणूरमल्लहरणनिपुणतर चरणनिहतशकटासुर मुरहर

माणिक्यमकुटहारवलयधर मत्तेभकुम्भभेदनपटुतर

६२वाणीशार्चितपीताम्बरधर वैजयन्तीवनमालाधर

आणवादिविजयमानसाकर अपहतकंसासुर नतभूसुर

(मध्यमकालसाहित्यम्)

द्रोणकर्णदुर्योधनादिहर द्रौपदीमानसंरक्षणकर

वैणिकगायक गुरुगुहनुत पुरवैरिविहित गोपिकामनोहर



२१३ बालसुब्रह्मण्यम्

बालसुब्रह्मण्यम्

रागं: सुरटि (२८) ताळं: आदि

पल्लवि

बालसुब्रह्मण्यं भजेऽहं भक्तकल्पभूरुहं श्री

अनुपल्लवि

नीलकण्ठहृदानन्दकरं नित्यशुद्धबुद्धमुक्ताम्बरम्

चरणम्

वेलायुधधरं सुन्दरं वेदान्तार्थबोधचतुरं

फालाक्षगुरुगुहावतारं पराशक्तिसुकुमारं धीरम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

पालितगीर्वाणादिसमूहं पञ्चभूतमयमायामोहं

नीलकण्ठवाहं सुदेहं निरतिशयानन्दप्रवाहम्



२१४ बालाम्बिकया

बालाम्बिकया

रागं: श्रीरञ्जनि (२२) ताळं: एकम्

पल्लवि

बालाम्बिकया कटाक्षितोऽहं बुधजनादिनुतत्रिकूटवरया

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

नीलमेघजितवेणीयुतया नीलकण्ठगुरुगुहमोदितया

(मध्यमकालसाहित्यम्)

लीलया भण्डकुमारहरया शूलचक्रादिशोभितकरया



२१५ बालाम्बिकायाः तव

बालाम्बिकायाः तव

रागं: केदारगौळ (२८) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

बालाम्बिकायाः तव भक्तोऽहं

भगमालिनीनकुलिनीपूजितायाः श्री

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

वेलायुधधरवल्लीश गुरुगुह जनन्याः

कालकालहरवैद्यपतिमोहिन्याः लीलाविग्रहधारिण्याः



२१६ बालाम्बिकायाः परम्

बालाम्बिकायाः परम्

रागं: कानड (२२) ताळं: आदि

पल्लवि

बालाम्बिकायाः परं नहि रे रे चित्त

भारतीरमासेवितायाः श्री

अनुपल्लवि

बालेन्दुजितमुखपङ्कजायाः भानुकोटिकोटिलावण्यायाः

चरणम्

भूसुरादिसहस्रमुनीश्वरपूजितपरदेवतायाः

भवरोगहरवैद्यपतीश्वरसुखकर्याः गुरुगुहजनन्याः

(मध्यमकालसाहित्यम्)

भासमानवैद्यपुरीश्वर्याः वाञ्छितफलप्रदेश्वर्याः

फुल्लकल्हारमालादिधारिण्याः निरञ्जन्याः



२१७ बालाम्बिकायै

बालाम्बिकायै

रागं: नाटकुरञ्जि (२८) ताळं: रुपकम्

पल्लवि

बालाम्बिकायै नमस्ते वरदायै श्री

अनुपल्लवि

बालादिनामरूपायै भक्तचित्तकेकीघनाघनायै

(मध्यमकालसाहित्यम्)

बालचन्द्रसेवितायै भारतीशपूजितायै

चरणम्

हाटकाभरणायै हंसनादमुदितायै

हरिद्रान्नरसिकायै गुरुगुह स्वरूपायै

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नाटकुरञ्जी रागप्रियानन्दकर्यै

नटेश्वर्यै वैद्यपतिमनोल्लासकर्यै



२१८ बालाम्बिके पाहि

बालाम्बिके पाहि

रागं: मनोरञ्जनि (५) ताळं: मद्यम्

पल्लवि

बालाम्बिके पाहि भद्रं देहि देहि

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

सालोकादिमुक्तिसाम्राज्यदायिनि

शङ्करनारायण मनोरञ्जनि धनिनि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नीलकण्ठ गुरुगुह नित्यशुद्धविद्ये



२१९ बुधमाश्रयामि सततम्

बुधमाश्रयामि सततम्

रागं: नाटकुरञ्जि (२८) ताळं: झम्प

पल्लवि

बुधमाश्रयामि सततं सुरविनुतं चन्द्रतारासुतम्

अनुपल्लवि

बुधजनैर्वेदितं भूसुरैर्मोदितं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मधुरकविताप्रदं महनीयसम्पदम्

चरणम्

कुङ्कुमसमद्युतिं गुरुगुहमुदाकृतिं

कुजवैरिणं मणिमकुटहारकेयूरकङ्कणादिधरणम्

कमनीयतरमिथुनकन्याधिपं पुस्तककरं नपुंसकं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

किङ्करजनमहितं किल्बिषादिरहितं

शङ्करभक्तहितं सदानन्दसहितम्



२२० बृहदम्बा मदम्बा

बृहदम्बा मदम्बा

रागं: भानुमति (४) ताळं: आदि

पल्लवि

बृहदम्बा मदम्बा जयति ब्रह्माण्डस्वरूपजगदम्बा

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

महादेवयुवती भानुमती मद्गुरुगुह जननी निरञ्जनी

(मध्यमकालसाहित्यम्)

महेश्वरी राजराजेश्वरी महात्रिपुरसुन्दरी शङ्करी



२२१ बृहदम्बिकायै

बृहदम्बिकायै

रागं: वसन्त (१५) ताळं: चापु

पल्लवि

बृहदम्बिकायै नमस्ते नमस्ते

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

बृहदीशमोहितब्रह्माण्डस्वरूपायै

ब्राह्म्यादिशक्तिसंसेवितवैभवायै

(मध्यमकालसाहित्यम्)

बहुविधनामरूपायै ब्रह्मात्मैकस्वरूपायै

भानुकोटिलावण्यायै बालगुरुगुहपूजितायै



२२२ बृहदीशकटाक्षेण

बृहदीशकटाक्षेण

रागं: जीवन्तिका (४८) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

बृहदीशकटाक्षेण प्राणिनो जीवन्ति

(मध्यमकालसाहित्यम्)

अहमहमित्यात्मरूप

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

महदादिप्रवृत्तेन मायिकादिनिवृत्तेन

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सहजानन्दस्थितेन सद्गुरुगुहसन्नुतेन



२२३ बृहदीश्वराय

बृहदीश्वराय

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: आदि

पल्लवि

बृहदीश्वराय नमस्ते ब्रह्मानन्दाय बलेश्वराय

अनुपल्लवि

बृहन्नायकीमनोल्लासाय भासमानचर्माम्बरधराय

चरणम्

चारुचन्द्रशेखराय वराय चारुस्मितसरसीरुहपदाय

चराचरात्मकप्रपञ्चकाय सद्गुरुगुहसहितसदाशिवाय

(मध्यमकालसाहित्यम्)

करुणारसपूरिताय कैवल्यप्रदाय तञ्जपुरीश्वराय

हरिहयाद्यमरवन्दिताय आरक्तवर्णशोभिताकाराय



२२४ बृहदीश्वरो रक्षतु

बृहदीश्वरो रक्षतु

रागं: गानसामवराळि (३) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

बृहदीश्वरो रक्षतु मां हरिब्रह्मेन्द्रपूजितस्सततम्

समष्टिचरणम्

बृहन्नायकीसहितानन्दयुतो भ्रान्तिस्वरूपप्रपञ्चातीतो

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सहज गानसामवराळि विनुतो सदाशिवो विनतगणेश गुरुगुहो



२२५ बृहदीश्वरं भज रे

बृहदीश्वरं भज रे

रागं: नागध्वनि (२९) ताळं: अदि

पल्लवि

बृहदीश्वरं भज रे रे चित्त ब्रह्मेन्द्रादिपूजितं श्री

अनुपल्लवि

बृहन्नायकीमनःप्रियकरं भक्तजनावनभयहरनिपुणम्

चरणम्

योगिराजाद्यर्चितचरणं युगपद्भोगादिप्रदनिपुणं

नागराजविनुतं नागध्वनिनादबिन्दुकलास्पदं वरनिपुणम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

श्रीगुरुगुहोपचारिणं विचित्रनामरूपप्रपञ्चधारिणं

विश्वसृष्ट्यादिकारणं विशुद्धिचक्र^{६३}स्थितं विनोदकारिणम्



२२६ बृहदीश्वरीं भजरे

बृहदीश्वरीं भजरे

रागं: ललितपञ्चमम् (१४) ताळं: आदि

पल्लवि

बृहदीश्वरीं भज रे चित्त ब्रह्मेन्द्रादिनुतजगज्जननीम्

अनुपल्लवि

बृहदीशमनोल्लासकारिणीं ब्रह्माण्डस्वरूपाकारिणीं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

महात्रिपुरसुन्दरीं श्रीकरीं ललितपञ्चम रागोदयकरीम्

चरणम्

नीरजदलनयनीं मृदुचरणीं निरञ्जनीं तञ्जपुरिविहारिणीं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

निरतिशयसुखप्रदायिनीं नित्यानन्दगुरुगुह रूपिणीम्



२२७ बृहन्नायकि वरदायकि

बृहन्नायकि वरदायकि

रागं: आन्धाळि (२८) ताळं: आदि

पल्लवि

बृहन्नायकि वरदायकि ब्रह्मादिजननि

एहि मुदं देहि मां पाहि

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

अहन्तास्वरूपिणि चिद्रूपिणि आन्धाळि हरणचणप्रतापिनि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सहस्रदळसरसीरुहवासिनि सदानन्द गुरुगुह विश्वासिनि



२२८ बृहस्पते तारापते

बृहस्पते तारापते

रागं: अठाण (२८) ताळं: त्रिपुट

पल्लवि

बृहस्पते तारापते ब्रह्मजाते नमोऽस्तु ते

अनुपल्लवि

महाबलविभो गीष्पते मञ्जुधनुर्मीनाधिपते

महेन्द्राद्युपासिताकृते माधवादिविनुत धीमते

चरणम्

सुराचार्यवर्य वज्रधर शुभलक्षण जगत्रयगुरो

जरादिवर्जिताक्रोध कचजनकाश्रितजनकल्पतरो

पुरारि गुरुगुह संमोदित पुत्रकारक दीनबन्धो

परादिचत्वारिवाक्स्वरूपप्रकाशक दयासिन्धो

(मध्यमकालसाहित्यम्)

निरामयाय नीतिकर्त्रे निरङ्कुशाय विश्वभर्त्रे

निरञ्जनाय भुवनभोक्त्रे निरंशाय मखप्रदात्रे



२२९ ब्रह्मविद्याम्बिके

ब्रह्मविद्याम्बिके

रागं: कल्याणि (६५) ताळं: आदि

पल्लवि

ब्रह्मविद्याम्बिके श्रीश्वेतारण्येशनायिके

श्रीशिवे संरक्ष मां श्री

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

ब्रह्मानन्द गुरुगुह जननी परब्रह्मस्वरूपिणि नळिनि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सोमशेखरशोभितवदने सुरनरमुनिगणसुखकरनयने

कामकले कम्बुजयगळे कल्याणि सकलनिष्कळे



२३० भक्तवत्सलम्

भक्तवत्सलम्

रागं: वंशवति (५४) ताळं: आदि

पल्लवि

भक्तवत्सलमभिषेकवल्लीयुतं भजेऽहं नित्यम्

अनुपल्लवि

भक्तिमतां चित्तप्रत्यक्षं पाकशासनादिसुराध्यक्षं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

भुक्तिमुक्तिप्रदायकदक्षं भूसुराद्यखिलजनसंरक्षम्

चरणम्

दशाकृतिं कृष्णमङ्गलक्षेत्रपतिं लक्ष्मीविवाहोत्सवं

विशालवेदसागरमण्डपं विराजस्य महाविभवप्रदम्

विशिष्टाद्वैतप्रतिपाद्यं विरूपाक्षगुरुगुहसंवेद्यं

विशेषफलप्रदं विधुदुरितनिवृत्तिकरं मुनिजनप्रियकरम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

शशाङ्कगुरुतल्पदोषहरदर्शपुष्करिणीतटपश्चिमभागं

सुशोभितोत्पलावतकस्थितं सुरमयमधुमक्षिकाराधितम्



२३१ भजरे रे चित्त

भजरे रे चित्त

रागं: कल्याणि (६५) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

भजरे रे चित्त बालाम्बिकां भक्तकल्पलतिकाम्

अनुपल्लवि

निजरूपदानदक्षचरणां अरुणां नित्य कल्याणीं शर्वाणीम्

चरणम्

श्रीवाग्भवकूटजातचतुर्वेदस्वरूपिणीं

शृङ्गारकामराजोद्भवसकलविश्वव्यापिनीम्

देवीं शक्तिबीजोद्भवमातृकार्णशरीरिणीं

देवनुत भवरोगहरवैद्यपतिहृदयविहारिणीम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

भावरारागताळमोदिनीं भक्ताभीष्टप्रदायिनीं

सेवकजनपालन गुरुगुह रूपमुत्तुकुमारजननीम्



२३२ भारति

भारति

रागं: देवमनोहरि (२२) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

भारति मद्धिषणाजाड्यापहे त्वद्-
भक्तकल्पकमहीरुहे मुखाम्भोरुहे श्री

अनुपल्लवि

कारुण्यसुधालहरि कञ्जज देवमनोहरि
शारदे वागधीश्वरि शशिकुन्दधवळभास्वरि

चरणम्

वल्लकीपुस्तकाभयवरदकोमलतरकरे
पल्लवाङ्घ्रियुगळमणिप्रकाशमञ्जीरधरे
फुल्लसरसिजाक्षि श्रीपुरस्वपीठान्तरे
वल्लभेशविधिहरिहरवाञ्छितार्थप्रदे वरे

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मल्लिकादिसुमार्चिते मायाकार्यवर्जिते
वल्लीश गुरुगुह नुतेऽवादिक्षान्तार्णयुते



२३३ भूषापतिम्

भूषापतिम्

रागं: भूषावति (६४) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

भूषापतिं मन्जुभाषापतिं भजेऽहम्

अनुपल्लवि

शेषाङ्गशयननुतं अशेषदेवसन्नुतम्

चरणम्

विराट्स्वरूपाकारं विश्वसृष्टिकर्तारं

पराशराद्युपचारं परमाद्वैतविचारम्

विराजमानशरीरं वेदवेदान्तसारं

धरादिभूताधारं धातारं मणिहारम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

पुरन्दराद्यधिकारं पूर्णफलदातारं

सरोजासनं धीरं सद्गुरुगुहप्रचारम्



२३४ भूषावतीम्

भूषावतीम्

रागं: भूषावति (६४) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

भूषावतीं मञ्जुभाषावतीं भजेऽहम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

तोषकरशेखरीं दुर्गां बृहन्नायकीं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

शेषाद्रीशसोदरीं शिवगुरुगुहप्रियकरीम्



२३५ भोगच्छायानाटकप्रिये

भोगच्छायानाटकप्रिये

रागं: भोगच्छायनाट (३४) ताळं: आदि

पल्लवि

भोगच्छायानाटकप्रिये बोधं देहि बृहदीशजाये

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

श्रीगुरुगुहजननि निरञ्जनि श्रितजनरक्षणि शिवसन्तोषिणि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

भोगमोक्षवितरणनिपुणतरे भूसुरादिसन्नुतकमलकरे



२३६ मङ्गलदेवतया

मङ्गलदेवतया

रागं: धन्याशि (२०) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

मङ्गलदेवतया त्वया बहुमानितोऽहं श्री

अनुपल्लवि

पुङ्गवकमलालयया भोगभोग्यालयया

जङ्गमस्थावरलोकजननस्थितिलययाऽजया

चरणम्

हरिद्राकुङ्कुमवस्त्रालङ्कृतविग्रहया

दरिद्रदुःखादिमूर्धन्याशि वनिग्रहया

वरदराजगोपालहृदयसरसिजगृहया

वरलक्ष्म्या हरिहय^{६४} गुरुगुह भक्तानुग्रहया

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सुरार्चितपदाम्बुजया सुधासागरात्मजया

सुरविनुतशिवानुजया मायाबीजया विजय i



२३७ मङ्गळदेवते

मङ्गळदेवते

रागं: मार्गदेशि (१५) ताळं: आदि

पल्लवि

मङ्गळदेवते परदेवते मङ्गळं भवतु नतदेवते

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

अङ्गजपुरकालवैरिसहिते अनाद्यविद्याप्रपञ्चरहिते

(मध्यमकालसाहित्यम्)

पुङ्गव गुरुगुहादिमहिते सत्सङ्गमार्गदर्शिते सुरहिते



२३८ मङ्गळाम्बायै नमस्ते

मङ्गळाम्बायै नमस्ते

रागं: माळवश्री (२२) ताळं: झम्प

पल्लवि

मङ्गळाम्बायै नमस्ते श्रीवाञ्छलिङ्गनिजशक्ते

विलीनचिच्छक्ते श्री

अनुपल्लवि

सङ्गीतसाहित्यसारज्ञसन्नुते मङ्गळालयगुप्तगङ्गातटस्थिते अ-

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नङ्गाद्युपासिते शृङ्गारादियुते

चरणम्

मन्दस्मितानने माळवश्री जने इन्दिरालोकने ईश्वराराधने

इन्दीवरासनादीडितशिवाङ्गने सिन्दूरकस्तूरिचन्दनालेपने

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कुन्दमुकुळरदने गुरुगुह हृत्सदने

सुन्दरि मृदुगगने सुखतरकरमदने



२३१ मङ्गळं जयमङ्गळम्

मङ्गळं जयमङ्गळम्

रागं: वसन्त (१५) ताळं: आदि

पल्लवि

मङ्गळं जयमङ्गळं मामव राजमातङ्गि जय जय

मङ्गळं मङ्गळं मङ्गळम्

चरणम्

गङ्गाधरयुवति परमेश्वरि मङ्गळवरदायिनि जगदीश्वरि

सङ्कटनाशिनि जयमङ्गळं सद्गुरुगुहजननि जयमङ्गळम्

सद्गुरुगुहजननि शुभमङ्गळम्



२४० मत्स्यावतार

मत्स्यावतार

रागं: भिन्नपञ्चमम् (३) ताळं: आदि

पल्लवि

मत्स्यावतार मामव मधुसूदन गुरुगुहा दिनुत

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

मत्स्यकूर्मादिदशावतार माधुर्यसुधाधार दयाकर

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वत्सलाविवाहकारण शुभकर शार्ङ्गधर भिन्नपञ्चम प्रियकर



२४१ मधुराम्बा जयति

मधुराम्बा जयति

रागं: परजु (१५) ताळं: चापु

पल्लवि

मधुराम्बा जयति मरकताङ्गी जयति

अनुपल्लवि

माधवसोदरि महात्रिपुरसुन्दरि शङ्करि शातोदरि

चरणम्

पाकारिप्रमुखोपासितपल्लवपदकरनळिनीं चिन्तयेऽहं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मूकमुख्यवाक्प्रदायिनीं मुक्तिप्रदगुरुगुहजननीम्



२४२ मधुराम्बा संरक्षतु

मधुराम्बा संरक्षतु

रागं: देवक्रिय (२८) ताळं: आदि

पल्लवि

मधुराम्बा संरक्षतु मां श्री
मनुत्रिकोणरूपिणी त्रिलोचनी

अनुपल्लवि

वेदवेदान्ततत्वबोधिनी विधिगुरुगुहसंमोदिनी

(मध्यमकालसाहित्यम्)

श्रीदेवक्रियामोदिनी दैत्यहन्त्री दीनरक्षणी

चरणम्

हिमाचलकुमारी सुन्दरी हिरण्यकुण्डलशोभाकरी
हालास्यनाथमनःप्रियकरी हंसनादवशंकरी श्रीकरी

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वामाचारप्रियकरी वशिन्याद्वाराधितवरदाभयकरी
वाग्वादिन्यादिमातृकासेवितानन्दकदम्बकादम्बरी



२४३ मधुराम्बायाः

मधुराम्बायाः

रागं: बेगड (२९) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

मधुराम्बायास्तव दासोऽहं मरकतमणिभूषणायाः श्री

अनुपल्लवि

मधुकरवेण्याः मधुरतरवाण्याः

चरणम्

मातृकावर्णरूपिण्याः मारजनकगुरुगुहमोदिन्याः

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कदम्बवनपालिन्याः काव्यकलालापिन्याः

कामकलाप्रदर्शिन्याः कामितार्थप्रदायिन्याः



२४४ मधुराम्बां भज रे

मधुराम्बां भज रे

रागं: स्तवराजम् (४४) ताळं: आदि

पल्लवि

मधुराम्बां भज रे मानस मदनजनकादिगुरुगुहसेवित

अनुपल्लवि

मधुरापुरिनिवासिनीं धनिनीं मनुकुबेरादिमनोल्लासिनीं

चरणम्

मतङ्गतनयां मधुकरवेणीं माधवाद्यभयवरप्रदायिनीं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

भक्तविश्वासिनीं सुवासिनीं श्रीस्तवराजनुतिप्रसादिनीम्



२४५ मधुराम्बिकायाम्

मधुराम्बिकायाम्

रागं: देशीसिंहारवम् (५८) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

मधुराम्बिकायां सदा भक्तिं करोमि श्री

अनुपल्लवि

चिदानन्दरसिकायां श्रीगुरुगुहसेवितायां

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कदम्बवनवासिन्यां कविजननुतयोगिन्याम्

चरणम्

सकलागमविनुतायां सामरस्य विभवायां

कादिविद्यादायिकायां कामेश्वरमोहितायाम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सकलकलारूपायां सदाशिवपतिव्रतायां

स्थूलसूक्ष्मकारणायां सुखतरप्रवर्तनायाम्



२४६ मरकतलिङ्गम्

मरकतलिङ्गम्

रागं: वसन्त (१५) ताळं: अदि

पल्लवि

मरकतलिङ्गं चिन्तयेऽहं माणिक्यवल्ल्यम्बासमेतम्

अनुपल्लवि

गौरीवल्लभगणेशसन्नुतं गुरुगुह पूजितवृषारोहिताम्

चरणम्

महाबिल्ववनमध्यविहारं मालाकपालशूलादिधरं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

महनीयसाम्राज्यादिप्रदं मानितवैश्रवणादिवरदम्



२४७ मरकतवल्लरीम्

मरकतवल्लरीम्

रागं: काम्भोजि (२८) ताळं: आदि

पल्लवि

मरकतवल्लरीं मनसा स्मरामि ^{६५}मदनजनकादिदेवपालिनीम्

समष्टिचरणम्

^{६६}हरिहृदयावेशिनीं मोहिनीं हरिहरपुत्रजननीं नलिनीं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

क्रूरदैत्यादिबृन्दमर्दिनीं गुरुगुहा दिनुतवह्निवासिनीम्



^{६५}मदनजनन्यादि

^{६६}हरिहृदय

२४८ महागणपतिम्

महागणपतिम्

रागं: नाट (३६) ताळं: चतुरश्र एकम्

पल्लवि

महागणपतिं मनसा स्मरामि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वसिष्ठवामदेवादिवन्दितम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

महादेवसुतं गुरुगुहनुतं मारकोटिप्रकाशं शान्तं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

महाकाव्य नाट कादिप्रियं मूषिकवाहनमोदकप्रियम्



२४९ महागणपतिं वन्दे

महागणपतिं वन्दे

रागं: तोडि (८) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

महागणपतिं वन्दे माधवाद्यमरवृन्दम्

अनुपल्लवि

अहन्तादिरहितं शक्तिसहितं आनन्ददं तमेकदन्तम्

चरणम्

त्रिपुरवधार्थं शिवेन त्र्यम्बकेनार्चितं

उपनिषत्प्रतिपादितं उमामहेश्वरसुतम्

कपिलवसिष्ठादिनतं कञ्जजादिभिरीडितं

कपिलं कृष्णपूजितं करिवदनसुशोभितम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सुपर्णवाहसेवितं सुरगुरुगुहभावितं

कपित्थाम्रपनसजम्बूकदलीफलभक्षितम्



२५० महागणपते

महागणपते

रागं: नटनारायणि (२८) ताळं: आदि

पल्लवि

महागणपते पालयाशु मां मायामयवल्लभापते श्री

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

महा नटनारायणी नन्दन मानितदेवदेवकीनन्दन

(मध्यमकालसाहित्यम्)

महेश्वर गुरुगुह भक्तचन्दन मातङ्गवदनेन्द्रादिवन्दन



२५१ महात्रिपुरसुन्दरी

महात्रिपुरसुन्दरी

रागं: मध्यमावति (२२) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

महात्रिपुरसुन्दरी मामव जगदीश्वरि

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

महेश्वरि माधवसोदरि राजराजेश्वरि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

महादेवमोहिनि मद्गुरुगुहजननि

महिषासुरमर्दिनि निरञ्जनि धनिनि



२५२ महादेवेन

महादेवेन

रागं: देवमनोहरि (२२) ताळं: आदि

पल्लवि

महादेवेन पालितोस्म्यहं महनीयसाम्रज्यप्रदेन

अनुपल्लवि

महाकैलासगिरिविहारेण मानित **गुरुगुह** सन्नुतपदेन

चरणम्

पञ्चाक्षरमन्त्रस्वरूपेण पार्वतीमनोल्लासकरणेन

परशिवतत्वबोधितनिपुणेन परमशान्तस्वरूपात्मकेन

(मध्यमकालसाहित्यम्)

पञ्चभूतप्रपञ्चात्मकेन वाञ्छितफलप्रदचतुरतरेण

पञ्चमहापापोपशमनेन पङ्कजासनुतगङ्गाधरेण



२५३ महालक्ष्मि करुणारसलहरि

महालक्ष्मि करुणारसलहरि

रागं: माधवमनोहरि (२२) ताळं: आदि

पल्लवि

महालक्ष्मि करुणारसलहरि मामव

माधवमनोहरि श्री

अनुपल्लवि

महाविष्णुवक्षस्थलवासिनि महादेवव्गुरुगुह इश्वासिनि

महापापप्रशमनि मनोन्मणि मारजननि मङ्गळप्रदायिनि

चरणम्

क्षीरसागरसुते वेदनुते क्षितीशादिमहिते शिवसहिते

भारतीरतिशचीपूजिते भक्तियुतमानसविराजिते

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वारिजासनाद्यमरवन्दिते नारदादिमुनिबृन्दनन्दिते

नीरजासनस्थे सुमनस्थे सारसहस्ते सदा नमस्ते



२५४ महालिङ्गेश्वराय

महालिङ्गेश्वराय

रागं: अठाण (२८) ताळं: आदि

पल्लवि

महालिङ्गेश्वराय नमस्ते श्री मध्यार्जुनपुरिविलसिताय

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

बृहत्कुचाम्बासमेताय क्रूरपञ्चहत्यादिपापशमनाय

(मध्यमकालसाहित्यम्)

ब्रह्मादिगुरुगुहपूजिताय महादेवजगदीश्वरशिवाय



२५५ महालिङ्गेश्वरम्

महालिङ्गेश्वरम्

रागं: परजु (१५) ताळं: आदि

पल्लवि

महालिङ्गेश्वरं मद्यार्जुनमहालिङ्गेश्वरं नमामि

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

महाब्रह्महत्यादिपापहरं कालहरं पुरहरं शङ्करं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

बृहत्कुचाम्बारमणं गुरुगुहान्तःकरणं भवभयहरनिपुणम्



२५६ महासुरं केतुमहं भजामि

महासुरं केतुमहं भजामि

रागं: चामरम् (५६) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

महासुरं केतुमहं भजामि छायाग्रहवरम्

अनुपल्लवि

महाविचित्रमकुटधरं मङ्गलवस्त्रादिधरं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नरपीठस्थितं सुखं नवग्रहयुतं सखम्

चरणम्

केतुं-कृण्वन्-मन्त्रिणं क्रोधनिधिजैमिनं

कुलुत्थादिभक्षणं कोणध्वजपताकिनम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

गुरुगुह चामरभरणं गुणदोषजिताभरणं

ग्रहणादिकार्यकारणं ग्रहापसव्यसञ्चारिणम्



२५७ महिषासुरमर्दिनि

महिषासुरमर्दिनि

रागं: गौळ (१५) ताळं: खण्ड चापु

पल्लवि

महिषासुरमर्दिनि मां पाहि मध्यदेशवासिनि

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

महादेवमनोल्लासिनि मावाणी गुरुगुहा दिवेदिनि

मारजनकपालिनि सहस्रदळसरसिजमध्यप्रकाशिनि

सुरुचिरनळिनि शुम्बनिशुम्बादिभञ्जनि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

इहपरभोगमोक्षप्रदायिनि इतिहासपुराणादि-

विश्ववासिनि गौरहासिनि



२५८ महिषासुरमर्दिनीम्

महिषासुरमर्दिनीम्

रागं: नारायणि (२९) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

महिषासुरमर्दिनीं नमामि महनीयकपर्दिनीम्

अनुपल्लवि

महिषमस्तकनटनभेदविनोदिनीं मोदिनीं

मालिनीं मानिनीं प्रणतजनसौभाग्यदायिनीम्^{६७}

चरणम्

शङ्खचक्रशूलाङ्कुशपाणीं शक्तिसेनां मधुरवाणीं

पङ्कजनयनां पन्नगवेणीं पालितगुरुगुहां पुराणीम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

शङ्करार्धशरीरिणीं समस्तदेवतारूपिणीं

कङ्कणालङ्कृताब्जकरां कात्यायनीं नारायणीम्



^{६७}सौभाग्यजननीम्

२५९ मातङ्गि मरकताङ्गि

मातङ्गि मरकताङ्गि

रागं: धौतपञ्चमम् (६९) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

मातङ्गि मरकताङ्गि मां पालय कृपालये

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

धौतपञ्चमप्रिये त्र्यम्बकमोदितहृदये

(मध्यमकालसाहित्यम्)

शीताद्रिसुते ललिते श्रीशिवगुरुगुहविनुते

पूतचरिते बुधहिते पुरुहूतादिसेविते



२६० मातङ्गि श्रीराजराजेश्वरि

मातङ्गि श्रीराजराजेश्वरि

रागं: रमामनोहरि (५२) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

मातङ्गि श्रीराजराजेश्वरि मामव

अनुपल्लवि

मातङ्गवदनादि गुरुगुह जननि धनिनि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मन्दस्मितमहादेवमनोल्लासिनि नळिनि

चरणम्

रमामनोहरि राकेन्दुशेखरि सुखकरि

रणत्किङ्किणिमेखलाभास्वरि सुन्दरि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वाममार्गप्रियकरि शङ्करि सर्वेश्वरि



२६१ माधवो मां पातु

माधवो मां पातु

दशावतार रागमालिका ताळं: रूपकम्

नाट रागः

माधवो मां पातु मत्स्यावतारो

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वेदस्तेयदुष्टहरो वेदादिरक्षणः श्री

गौळ रागः

गोविन्दं नमाम्यहं गुरुगुहनुतकूर्मावतारं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

देवराजादिपूजितं दिव्यामृतप्रदम्

श्री रागः

श्रीधरेण रक्षितोऽहं भूमिपालसूकरेण

(मध्यमकालसाहित्यम्)

हितदेवोपकारेण हयासुरहतिनिपुणेन

आरभि रागः

नरसिंहाय नमस्ते प्रह्लादप्रार्थिताय

(मध्यमकालसाहित्यम्)

हिरण्यप्राणहराय हरिहयादिवन्दिताय

वराळि रागः

वामनादन्यं न जानेऽहं नरवररूपिणः

(मध्यमकालसाहित्यम्)

शुक्रबलिराजादिश्रुतिज्ञानप्रबोधिनी

केदार रागः

परशुरामस्य दासोऽहं सीतापतिं शरणागतस्य

(मध्यमकालसाहित्यम्)

क्षत्रियकुलभीकरस्य जमदग्निऋषिपुत्रस्य

वसन्त रागः

रामचन्द्रस्वामिनि भक्तिं करोमि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

दशरथसुकुमारात्मनि दशवदनभङ्गनात्मनि

सुरटि रागः

बलराम मां कलय भोगिशायि^{६८}सोदर

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मुरळीगानानन्दमुकुन्दादिसदालोल

सौराष्ट्र रागः

श्रीकृष्णं भजरे चित्त श्रीरुक्मिणीपतिं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

^{६८}भोगीशादि

शिशुपालकंसादिहरं पाण्डवादिरक्षितवरम्

मध्यमावति रागः

कलियुगवरवेङ्कटेशं खलसमूह^{६९}हतसुरेशं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

अलमेलुमङ्गेशं अच्युतादि भजेऽहमनिशम्



२६२ मानसगुरुगुह

मानसगुरुगुह

रागं: आनन्दभैरवि (२०) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

मानसगुरुगुह रूपं भज रे रे
मायामयहृत्तापं त्यज रे रे

अनुपल्लवि

मानवजन्मनि संप्राप्ते सति
परमात्मनि निरतिशयसुखं व्रज रे रे

चरणम्

सत्त्वगुणोपाधिसहितसदाशिवं स्वाविद्यासमेतजीवोद्भवम्
तत्त्वं तामसयुतविश्ववैभवं तारकेश्वरमानन्दभैरवम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नत्वा श्रीगुरुचरणं कृत्वा नामस्मरणं
जित्वा मोहावरणं मत्वा त्वदेकशरणम्



२६३ मामव पट्टाभिराम

मामव पट्टाभिराम

रागं: मणिरङ्गु (२२) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

मामव पट्टाभिराम जय मारुतिसन्नुत नाम राम

अनुपल्लवि

कोमलधरपल्लवपदकोदण्डराम घनश्यामल

विग्रहाब्जनयन संपूर्णकाम रघुराम कल्याणराम राम

चरणम्

छत्रचामरकरधृतभरतलक्ष्मण -

शत्रुघ्नविभीषणसुग्रीवप्रमुखादिसेवित

अत्रिवसिष्टाद्यनुग्रहपात्र दशरथपुत्र मणिरङ्गु वल्याद्यलङ्कृत

नवरत्नमणिमण्टपे विचित्रमणिमयसिंहासने

सीतया सह संस्थित सुचरित्र परमपवित्र

गुरुगुह मित्र पङ्कजमित्रवंशसुधाम्बुधिचन्द्र

मेदिनीपाल रामचन्द्र



२६४ मामव मीनाक्षि

मामव मीनाक्षि

रागं: वराळि (३९) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

मामव मीनाक्षि राजमातङ्गि

माणिक्यवल्लकीपाणि मधुरवाणि वराळिवेणि

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

सोमसुन्दरेश्वरसुखस्फूर्तिरूपिणि

श्यामे शङ्करि दिग्विजयप्रतापिनि

हेमरत्नाभरणधारिणि ईशगुरुगुहहृदागारिणि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कामितार्थवितरणधोरिणि कारुण्यामृतपरिपूरणि

कामक्रोधादिनिवारिणि कदम्बकाननविहारिणि



२६५ मामव रघुवीर

मामव रघुवीर

रागं: माहुरि (२८) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

मामव रघुवीर मर्त्यावतार

मामव रघुवीर माधव धीर

अनुपल्लवि

त्वा माहुरी शादयस्तत्वमिति करुणानिधे दीनम्

चरणम्

मामकहृदयनिवास श्रीनिवास मारुतिप्रभृतिदासविश्वास^{७०}

भूमिजासहवास इहपरभुक्तिमुक्तिवितरणविलास

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कामजनक कनकाम्बरधर तामरसाक्षवदनपदकर^{७१}

पामरपण्डितपावनकरनामधेय गुरुगुहनुत वर



^{७०}दासजनविश्वास

^{७१}वदनपङ्कज

२६६ मायूरनाथम्

मायूरनाथम्

रागः धन्याशि (२०) ताळः मिश्र चापु

पल्लवि

मायूरनाथमनिशं भजामि मायामयधरणीशं त्यजामि

अनुपल्लवि

केयूरहाराद्यलङ्कृतदेहं केकीपूजिताम्रवनगेहं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

आयुरारोग्यैश्वर्यदं सायुज्यादिमुक्तिप्रदम्

चरणम्

आदित्यकोटिप्रकाशं नन्दिकेशमप्रमेयमभयाम्बिकेशं

महेशं मेदिन्यादिपञ्चभूतावकाशं मीनध्वजारिं पुरारिम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वेदनुत गुरुगुह निवासं भेदयुतविश्वविलासं

७२ मोदरूपमनोविलासं नादमयनवनवोल्लासम्



२६७ माये चित्कले

माये चित्कले

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: तिश्च एकम्

नोटुस्वर साहित्यम्

माये चित्कले जय रमे मङ्गळकर -
रङ्गरमणि मारजननि विष्णुजाये
देहि श्रियं अब्जमालिनि दृश्यविश्वविलासे
एहि वरलक्ष्मि सुन्दरि दीप्यमान -
पादतले पद्मे दिव्यतेजोमयि रक्ष मां
रञ्जनि देवतापूजितश्री गुरुगुहे



२६८ माये त्वं याहि

माये त्वं याहि

रागं: तरङ्गिणि (२६) ताळं: आदि

पल्लवि

माये त्वं याहि मां बाधितुं का हि

अनुपल्लवि

७३ध्याये ध्येये त्वमेहि मुदं देहि मां पाहि

चरणम्

गाये गेये याहि काहि एहि देहि पाहि

उपाये पेये सरसकाये रसकाये सकाये अये

समुदाये गुरुगुहो दये सुधा तरङ्गिणि अन्तरङ्गिणि



२६९ मारकोटिकोटिलावण्य

मारकोटिकोटिलावण्य

रागं: आरभि (२९) ताळं: झम्प

पल्लवि

मारकोटिकोटिलावण्य मां पालय

धीराग्रगण्य वासुकीवलय

अनुपल्लवि

दारुकावनतपोधनतरुणीमोहाकार भिक्षाटनवेषधर शङ्कर

चरणम्

विरक्तानां विदेहकैवल्यदानविचक्षण भक्तानामभयप्रदान

विरिञ्चादिसकलदेवोपास्यमान विभूतिरुद्राक्षाभिमान

(मध्यमकालसाहित्यम्)

परशुमृगाग्निकपालडमरुकं दधान परमाद्वैततात्पर्यसन्धान

परवामदेवादिसकलविराजमान

परमेश्वर गुरुगुहसमान भासमान



२७० माररतिप्रियम्

माररतिप्रियम्

रागं: रतिप्रिय (६२) ताळं: आदि

पल्लवि

माररतिप्रियं भक्तप्रियं मङ्गलदेवतेशं भावये

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

भारतीशजनकं नतजनकं भावरागताळस्वरूपकं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

जारचोरचतुरगोविन्दराजं पदाब्जं गुरुगुह उतमजम्



२७१ मारुवकादिमालिनि

मारुवकादिमालिनि

रागं: मारुव (१५) ताळं: आदि

पल्लवि

मारुवकादिमालिनि शूलिनि मामव कल्याणगुणशालिनि

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

चारुस्मितमुखाम्बुजकपालिनि जगज्जीवेश गुरुगुहपालिनि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वारिजनयनविलासिनि कौळिनि

वाञ्छितार्थफलदायिनि हंसिनि



२७२ मार्गसहायेश्वरम्

मार्गसहायेश्वरम्

रागं : काशीरामक्रिय (५१) ताळं : मिश्र चापु

पल्लवि

मार्गसहायेश्वरं भजेऽहं मरकतवल्लीमनोल्लासकरम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

दुर्गालक्ष्मीभारतीभिः पूजितं दीनजनादिबृन्दसेवितं

दीर्घायुःप्रदकृपालवालं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

निर्गुणरसपूर्णशरीरं नित्यगुरुगुहानन्दवरं

विरिञ्चिपुरमध्यविहारं वीरसिंहतीर्थोपचारम्



२७३ मार्गहिन्दोळरागप्रिये

मार्गहिन्दोळरागप्रिये

रागं: मार्गहिन्दोळम् (२०) ताळं: आदि

पल्लवि

मार्गहिन्दोळरागप्रिये मरकतवल्लरी मां कलय

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

मार्गसहायेश्वरप्रणयिनी मधुकैटभदमनी मदशमनी

(मध्यमकालसाहित्यम्)

दुर्गाद्यखिलशक्तिपरिपालिनी दुःखध्वंसिनी गुरुगुहजननी



२७४ मीनाक्षि मे मुदम्

मीनाक्षि मे मुदम्

रागं: गमकक्रिया (५३) ताळं: आदि

पल्लवि

मीनाक्षि मे मुदं देहि मेचकाङ्गि राजमातङ्गि

अनुपल्लवि

मानमातृमेये माये मरकतच्छ्राये शिवज्याये

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मीनलोचनि पाशमोचनि मानिनि कदम्बवनवासिनि

चरणम्

मदुरपुरिनिलये मणिवलये मलयध्वजपाण्ड्यराजतनये

विधुविडम्बनवदने विजये वीणागानदशगमकक्रिये

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मधुमदमोदितहृदये सदये महादेवसुन्दरेशप्रिये

मधुमुररिपुसोदरि शातोदरि विधिगुरुगुहवशङ्करि शङ्करि



२७५ मुचुकुन्दवरद

मुचुकुन्दवरद

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: तिश्च एकम्

नोटुस्वर साहित्यम्

मुचुकुन्दवरद त्यागराज सुन्दरकर
पादारविन्द सरसमन्दहासवदन जय विभो
मुकुन्दपूजिताङ्गधवलसुन्दरतर
नन्दीशनन्दित सुरबृन्दवन्दित गुरुगुह गुरो



२७६ मुरहरेण मुकुन्देन

मुरहरेण मुकुन्देन

रागं: शुद्धमुखारि (१) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

मुरहरेण मुकुन्देन केशवेन रक्षितोऽहम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

पुरन्दरादिपूजितमुनिपुङ्गवसन्नुतेन

(मध्यमकालसाहित्यम्)

परमभागवतप्रणतप्रसिद्धगुरुगुहनुतेन

परमशुद्धमुखारिरागतोषितेन वरेण



२७७ मूलाधारचक्रविनायक

मूलाधारचक्रविनायक

रागं: श्री (२२) ताळं: आदि

पल्लवि

७४ मूलाधारचक्रविनायक अमूल्यवरप्रदायक

अनुपल्लवि

मूलाज्ञानशोकविनाशक मूलकन्दमुक्तिप्रदायक श्री

चरणम्

सकळीकृतदेवादिदेव शबळीकृतसर्वज्ञस्वभाव ७५

प्रकटीकृतवैखरीस्वभाव पराभव प्रसिद्धगजग्रीव

(मध्यमकालसाहित्यम्)

विकट षट्शतश्वासाधिकार विचित्राकार भक्तोपकार

अकळङ्कविभास्वर विघ्नेश्वर हर गुरुगुह सोदर लम्बोदर



७४ श्रीमूलाधार

७५ सर्वज्ञभाव

२७८ मोहननाटरागप्रिये

मोहननाटरागप्रिये

रागं: मोहननाट (९) ताळं: आदि

पल्लवि

मोहननाट रागप्रिये ललिते पाहि मां परदेवते

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

महादेवेशमनःप्रियकरि मानित गुरुगुह जननि शङ्करि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

महापापप्रशमनि महिषासुरमर्दनि मधुसूदनि श्री



२७९ रक्तगणपतिम्

रक्तगणपतिम्

रागं: मोहनम् (६५) ताळं: आदि

पल्लवि

रक्तगणपतिम् भजेऽहं रत्नसिंहासनपतिं सुरपतिम्

अनुपल्लवि

रक्ताम्बरधरं रागद्वेषादिहरं^{७६} पार्वतीप्रियकरं मोहनकरम्

चरणम्

परशुरामक्षेत्रप्रभावं पायसान्नहोमादिविभावं

पञ्चकृत्यातीतस्वभावं भक्तजनादिसमूहवैभवम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सकलकार्यार्थसिद्धिदं स्थिरं^{७७} वामदेवादिपूजितं वरं

वारिजभववन्दितवल्लभेशं गुरुगुहनुतं परमशिवसुतम्



^{७६}रागद्वेषहरं
^{७७}वरं

२८० रङ्गनायकम्

रङ्गनायकम्

रागं: नायकि (२२) ताळं: आदि

पल्लवि

रङ्गनायकं भावये रङ्गनायकीसमेतं श्री

अनुपल्लवि

अङ्गजतातमनन्तमतीतं अजेन्द्राद्यमरनुतं सततं

उत्तुङ्गविहङ्गतुरङ्गं कृपापाङ्गं रमान्तरङ्गम्

चरणम्

प्रणवाकारदिव्यविमानं प्रह्लादादिभक्ताभिमानं

गणपतिसमानविष्वक्सेनं गजतुरगपदातिसेनम्

दिनमणिकुलभवराघवाराधनं मामकविदेहमुक्तिसाधनं

मणिमयसदनं शशिवदनं फणिपतिशयनं पद्मनयनम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

अगणितसुगुणगणनतविभीषणं घनतरकौस्तुभमणिविभूषणं

गुणिजनकृतवेदपारायणं गुरुगुहमुदितनारायणम्



२८१ रङ्गपुरविहार

रङ्गपुरविहार

रागं: बृन्दावनसारङ्ग (२२) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

रङ्गपुरविहार जय कोदण्ड-

(मध्यमकालसाहित्यम्)

रामावतार रघुवीर श्री

अनुपल्लवि

अङ्गजजनकदेव बृन्दावनसारङ्गेन्द्रवरद रमान्तरङ्ग

(मध्यमकालसाहित्यम्)

श्यामळाङ्ग विहङ्गतुरङ्ग सदयापाङ्ग सत्सङ्ग

चरणम्

पङ्कजाप्तकुलजलनिधिसोम वर-

पङ्कजमुख पट्टाभिराम पद-

पङ्कजजितकाम रघुराम

वामाङ्गगतसीतावरवेष शे-

षाङ्गशयन भक्तसन्तोष ए-

णाङ्गरविनयन मृदुतरभाष अक-

ळङ्कदर्पणकपोलविशेष मुनि-

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सङ्कटहरण गोविन्द वेङ्कटरमण मुकुन्द

सङ्कर्षणमूलकन्द शङ्कर गुरुगुहानन्द



२८२ राजगोपालम्

राजगोपालम्

रागं: मोहनम् (६५) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

राजगोपालं भजेऽहं रमालीलम्

अनुपल्लवि

तेजोमयमोहनकरं दिव्याम्बरादिधरं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

गजराजपूजितपदं गुणिजननतगोविन्दम्

चरणम्

नारदादिकृतभजनं नादलययुतसदनं

हरिद्रानदीतीरं हत्यादिपापहरम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

पारिजाततरुमूलं पङ्कजनयनविशालं

गुरुगुहहितवनमालं गोपीजनमालोलम्



२८३ राजराजेन्द्रचोल

राजराजेन्द्रचोल

रागं: गुण्डक्रिय (१५) ताळं: त्रिपुट

पल्लवि

राजराजेन्द्रचोलप्रतिष्ठितं बृहदीश्वरं भज रे श्री

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

राजाधिराजसमार्चितं रमणीयहृदयविराजितं

राजीवलोचनं गुरुगुह रञ्जित गुण्डक्रिया प्रियं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

राजराजेन्द्रचोलधरं राजधरं बृहदीश्वरं भज



२८४ राजीवलोचनम्

राजीवलोचनम्

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: तिश्च एकम्

नोट्टुस्वर साहित्यम्

राजीवलोचनं रामचन्द्रं रामानुजाग्रं राजेन्द्रं
सद्गुणसान्द्रं कृपापाङ्गं सद्गुरुगुहमुदितं शान्तम्
रावणान्तकं जनकसुतारमणं भक्तभरणं
परमघनश्यामळं श्रीरघुकुलतिलकाभरणम्
भरतशत्रुघ्नसोदरं विभीषणविनुतपदं
सुग्रीवप्रमुखादिनुतपादपङ्कजं कौसल्यात्मजम्
कोदण्डकरं अहल्यादेवीशापविमोचनसुचरित्रं
कौस्थुभधारिणं कैवल्यप्रदं दशरथात्मजं भजेऽहम्



२८५ रामकृष्णेन संरक्षितोहम्

रामकृष्णेन संरक्षितोहम्

रागं: सहान (२२) ताळं: आदि

पल्लवि

रामकृष्णेन संरक्षितोहं रामायणभागवतप्रियेण

अनुपल्लवि

उमापतिवाणीपतिमहितेन कौसल्यायशोदाबालेन

चरणम्

अयोध्याद्वारकासुसदनेन अमरेश गुरुगुहा दिविदितेन

जयसीतालक्ष्मीमोहितेन जननादिमुक्तिप्रदचरणेन

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मायामारिचकं सह तेन मानितविभीषणाक्रूरेण

पयोनिधिचन्द्रेण भरतबलरामसोदरेण प्रकटकीर्तनेन



२८६ रामचन्द्रभक्तम्

रामचन्द्रभक्तम्

रागं: गेयहेज्जज्जि (१३) ताळं: आदि

पल्लवि

रामचन्द्रभक्तं भज^{७८} मानस

राक्षसान्तकं हनुमन्तं श्री

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

आमिषीकृतदिवाकरं गेयहेज्जज्जि रागप्रीतिकरं

सामदानभेददण्डचतुरं सद्गुरुगुह संमोदितं वरम्



२८७ रामचन्द्रस्य दासोऽहम्

रामचन्द्रस्य दासोऽहम्

रागं: धामवति (५९) ताळं: आदि

पल्लवि

रामचन्द्रस्य दासोऽहं

श्रीसीतानायकस्य गुरुगुह हितस्य

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

सामदानभेदादिचतुरस्य सज्जनपालस्य दुष्टहरस्य

(मध्यमकालसाहित्यम्)

समयाचारसंप्रदायकस्य शबरीमोक्षप्रदस्य वरस्य



२८८ रामचन्द्रादन्यम्

रामचन्द्रादन्यम्

रागं: धन्याशि (२०) ताळं: खण्ड चापु

पल्लवि

रामचन्द्रादन्यं न जानेऽहं श्री हरिहरात्मरूपिणो

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

कामजनकात्कठिनसुबाहुमारीचखर-

दूषणादिमदहरणान्तकरूपिणः

(मध्यमकालसाहित्यम्)

समस्तसुरसन्नुतशरचापपाणिनः

सरसगुरुगुहसङ्गीततत्वबोधिनिः



२८९ रामचन्द्राय नमस्ते

रामचन्द्राय नमस्ते

रागं: तोडि (८) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

रामचन्द्राय नमस्ते राजीवलोचनाय वराय

अनुपल्लवि

सामगानलोलाय साधुजनादिपालाय^{७९}

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कोमळतरगुरुगुहनुताय^{८०} कोटिमारलावण्याय

चरणम्

दशरथराजकुमाराय दण्डकारण्यविहाराय

कौशिककृतमखरक्षकाय कनकमणिमालाधराय

(मध्यमकालसाहित्यम्)

दशग्रीवप्राणहराय दासविभीषणपालकाय

कुशलवसीतासमेताय कपिवृन्दादिमनोहराय



^{७९}साधुजनादिवन्दिताय

^{८०}गुरुगुहमुदाय

२१० रामचन्द्रेण संरक्षितोऽहम्

रामचन्द्रेण संरक्षितोऽहम्

रागं: माञ्जि (२०) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

रामचन्द्रेण संरक्षितोऽहं सीता-

अनुपल्लवि

रमाभारतीगौरीरमणस्वरूपेण श्री

चरणम्

कामकोटिसुन्दरेण कमनीयकन्धरेण

कोमलघनश्यामेन कोदण्डरामेण

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मामकहृदयस्थितेन मारुतिगीतामृतेन

मञ्जीरमणिमण्डितमद्गुरुगुहमानितेन



२११ रामचन्द्रं भावयामि

रामचन्द्रं भावयामि

रागं: वसन्त (१५) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

रामचन्द्रं भावयामि रघुकुलतिलकमुपेन्द्रम्

अनुपल्लवि

भूमिजानायकं भुक्तिमुक्तिदायकं

नामकीर्तनतारकं नरवरं गतमायिकम्

चरणम्

साकेतनगरे निवसन्तं साम्राज्यप्रदहनुमन्तं

राकेन्दुवदनं भगवन्तं रमणीयकल्याणगुणवन्तं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

काकुस्थं धीमन्तं कमलाक्षं श्रीमन्तं

नाकेशनुतमनन्तं नरगुरुगुहविहरन्तम्



२१२ रामचन्द्रं राजीवाक्षम्

रामचन्द्रं राजीवाक्षम्

रागं: शङ्कराभरणम् (२१) ताळं: चतुरश्र एकम्

नोटुस्वर साहित्यम्

रामचन्द्रं राजीवाक्षं श्यामलाङ्गं शाश्वतकीर्तिं
कोमलहस्तं कोसलराजं मामकहृत्कमलागारम्
मारुतियुक्तं धीमन्तं मानितभक्तं श्रीमन्तं
कौमारवरं गुरुगुहमित्रं कारुण्यनिधिं दशरथपुत्रम्
भूमिसुतापं भूपतिरूपं कोमलपल्लवपादं मोदं
कामगुरुं सीतारामं कौस्तुभभूषं वन्देऽहम्



२१३ राम जनार्दन

राम जनार्दन

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: तिश्च एकम्

नोटुस्वर साहित्यम्

रामजनार्दन रावणमर्दन रामानुजाग्रज राजविभो
पामरमोचन पङ्कजलोचन भक्तजनप्रिय पालय माम्
भूमिजानायक भुक्तिप्रदायक भूसुरपालन भूमिपते
श्यामळविग्रह शान्त गुरुगुहसंमत श्रीरामचन्द्रप्रभो



२१४ रामनाथं भजेऽहम्

रामनाथं भजेऽहम्

रागं : काशीरामक्रिय (५१) ताळं : रूपकम्

पल्लवि

रामनाथं भजेऽहं रामचन्द्रपूजितम्

अनुपल्लवि

कामितफलप्रददेवं कोटितीर्थप्रभावं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कुमारगुरुगुहविदितं कपिवृन्दादिसन्नुतम्

चरणम्

सेतुमध्यगन्धमादनपर्वतविहारं

सदा पर्वतवर्द्धिनीमनोल्लासकरम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

हस्तामलकनतवरं हाटकमयहारधरं

हत्यादिपापहरं हंसस्सोऽहाकारम्



२१५ रामराम कलिकलुषविराम

रामराम कलिकलुषविराम

रागं: रामकलि (१५) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

राम राम कलि कलुषविराम धराभृल्ललाम^{५१}

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

श्रीमहिजाकाम सुगुणधाम परन्धाम श्याम

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मामव शिव गुरुगुह सुत्राम विबुधविनुतनाम



२१६ रामे भरतपालित

रामे भरतपालित

रागं: ज्योति (६८) ताळं: खण्ड चापु

पल्लवि

रामे भरतपालितराज्यमर्पयामि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

राजाधिराजपूजितचरणं नमामि

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

अमरेशादिसकलदेवतामोदने

अन्तरङ्गगुरुगुहा नन्दमृदुगदने

(मध्यमकालसाहित्यम्)

समस्तमुनिगणसाधुजनादिवन्दने

सानन्दयुतसीतामनोहरमदने



२१७ रुद्रकोपजात

रुद्रकोपजात

रागं: रुद्रप्रिय (२२) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

रुद्रकोपजातवीरभद्रमाश्रये सदा हृदये

अनुपल्लवि

भद्रकाळीरमणं भवतरणं भद्रप्रदाननिपुणचरणं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

रुद्राक्षमालाभरणं क्षुद्रादिनिवारणं भक्तभरणम्
चरणम्

विजितविधिहरिहयं वीराधिवीरमभयं

रजतपर्वताश्रयं रविविधुतेजोमयम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

गजमुखगणेशरक्षं अजवदन^{५२}दक्षशिक्षं

निजरूपदानदक्षं निजगुरुगुह^{५३}स्वपक्षम्



२१८ रूपमु जूचि

रूपमु जूचि (चौक वर्णम्)

रागं: तोडि (८) ताळं: आदि

पल्लवि

रूपमु जूचि वलचि वच्चितिनि

कोपमु सेतुरा सामि इन्त

अनुपल्लवि

तापत्रय हरुडै वेलयु श्री

त्यागराज सामी इदेमि

चरणम्

मारकोटि सुन्दराकार



२१९ रेणुकादेवि संरक्षितोऽहम्

रेणुकादेवि संरक्षितोऽहम्

रागं: कन्नडबङ्गाळ (१५) ताळं: झम्प

पल्लवि

रेणुकादेवि संरक्षितोऽहमनिशम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

वेणुवाद्यादियुतविजयनगरस्थिते

माणिक्यभूषणि मधुररसभाषिणि

बाणसदृशाक्षिणि परशुरामजननि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कोणत्रयवासिनि गुरुगुह विश्वासिनि

कन्नडबङ्गाळे गान्धर्वभञ्जनि



३०० लम्बोदराय नमस्ते

लम्बोदराय नमस्ते

रागं: वराळि (३९) ताळं: खण्ड चापु

पल्लवि

लम्बोदराय नमस्ते श्री

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

कुम्भजपूजिताय इभवदनवरदाय

अभयवरप्रदाय अम्बुजासननुताय

(मध्यमकालसाहित्यम्)

साम्बशिवात्मजाय जम्बूकदलीफल-

सारभक्षिताय गुरुगुहाग्रजाय



३०१ ललितापरमेश्वरी

ललितापरमेश्वरी

रागं: सुरटि (२८) ताळं: आदि

पल्लवि

ललितापरमेश्वरी जयति लक्ष्मीवाणीनुतजगदम्बा

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

कोलाहलकामेश्वरयुवती कोटिमारलावण्यभगवती

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कैलासगिरिविहारतोषिणी कैवल्यप्रद गुरुगुह जननी



३०२ ललिताम्बिकाम्

ललिताम्बिकाम्

रागं: देवक्रिय (२८) ताळं: आदि

पल्लवि

ललिताम्बिकां चिन्तयाम्यहं श्रीगुरुगुहपूजितपराम्बिकाम्

अनुपल्लवि

त्रिलोकराज्ञीं दीनरक्षिणीं त्रिकोणवासिनीं भण्डमर्दिनीम्

चरणम्

कलारूपिणीं कात्यायनीं कञ्जलोचनीं कनकमालिनीं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

पालितमन्त्रिण्यादिसमूहां पशुपतिहृदयानन्दकरमोहाम्



३०३ ललिताम्बिकायै

ललिताम्बिकायै

रागं: भैरवि (२०) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

ललिताम्बिकायै लक्षकोट्यण्डनायिकायै

ललनायै नमस्ते नमस्ते

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

बालिकानामरूपायै फालचन्द्रधरायै

जालन्धरपीठायै ज्वलज्वालामालायै

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नीललोहितपूजितायै नटभैरवीनर्तनायै

कलानिधिवदनशोभायै काञ्चनमयगुरुगुहनुतायै



वदान्येश्वरम्

रागं: देवगान्धारि (२९) ताळं: आदि

पल्लवि

वदान्येश्वरं भजेऽहं सदा मदादिवृत्तिं त्यजेऽहं मुदा

अनुपल्लवि

पदारविन्दं आनन्दकन्दं पालितदेवगान्धारबृन्दं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सदार्चितं विनतविधिमुकुन्दं सद्गुरुगुहचिदानन्दं सदा

चरणम्

पशुपाशमोचनं त्रिलोचनं पञ्चाननं प्रणतगजाननं

शिशुबालगोपविदितं मुदितं शिवं बिल्ववनवैभवं भवम्

विशुद्धादिनिलयं मणिवलयं विगतविकल्पकं श्रितकल्पकं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

पशुपतिं ज्ञानाम्बिकापतिं परशुमृगधरं नीलकन्धरं

अशुभक्षयकरं अभयवरदकरं अनाद्यविद्याहरं शङ्करम्



३०५ वन्दे मीनाक्षि

वन्दे मीनाक्षि

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: चतुरश्र एकम्

नोटुस्वर साहित्यम्

वन्दे मीनाक्षि त्वां सरसिजवक्त्रेऽपर्णे दुर्गे
नतसुरबृन्देऽसक्ते गुरुगुहपालिनि जलरुहचरणे
सुन्दरपाण्ड्यानन्दे माये सूरिजनाधारे
सुन्दरराजसोदरि गौरि शुभकरि सततमहम्



३०६ वरदराज पहि

वरदराज पहि

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: तिश्च एकम्

नोटुस्वर साहित्यम्

वरदराज पाहि विभो करिगिरीश विश्वप्रभो
सुरपतिनुत नगधर नवनीतचोर गुरुगुहा दिविहित
मुरहर मुकुन्द श्री विहित मुरहर मुकुन्द श्री



३०७ वरदराजमुपास्महे

वरदराजमुपास्महे

रागं: सारङ्ग (६५) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

वरदराजमुपास्महे वनजासनादिपूजितम्

अनुपल्लवि

मुरळीधरशोभाकरं मुरखरादिदुष्टहरम्

चरणम्

नीलमेघजितशरीरं निरतिशयानन्दकरं

काञ्चीनगरविहारं काळीरक्षितचोरम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कलिदोषहरतीर्थप्रभावगुरुगुहा दिनतं

कपिलशुकादिसन्नुतगरुडवाहारोहम्



३०८ वरदराजाऽवाव

वरदराजाऽवाव

रागं: गङ्गातरङ्गिणि (३३) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

वरदराजाऽवाव वाञ्छिताधिकफलप्रद

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

द्विरदराजपरिपालन द्विजाद्यमरपरिपोषण

(मध्यमकालसाहित्यम्)

गरुडतुरङ्गसङ्ग गङ्गातरङ्ग दयापाङ्ग

गुरुगुहान्तरङ्ग भुजङ्गभरिताङ्ग श्रीरङ्ग



३०९ वरलक्ष्मीं भज

वरलक्ष्मीं भज

रागं: सौराष्ट्रम् (१५) ताळं: आदि

पल्लवि

वरलक्ष्मीं भज रे रे मानस

वाञ्छितार्थफलप्रदां वरदां वनजपदाम्

समष्टिचरणम्

चराचरात्मकप्रपञ्चजननीं सौराष्ट्रदेशपतिनुतधनिनीं

निरामयमहाविष्णुमानिनीं निरञ्जनीं निखिलाघभञ्जनीम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सुरार्चितपदाम्बुजविकासिनीं निरालम्बमानसोल्लासिनीं

मुरारिवक्षःस्थलनिवासिनीं पुरारिगुरुगुहचिद्विलासिनीम्



३१० वरशिवबालम्

वरशिवबालम्

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: चतुरश्र एकम्

नोटुस्वर साहित्यम्

वरशिवबालं वल्लीलोलं वन्देऽनन्तं
हरिहरमोदं हंसानन्दं हसितमुखम्
गुरुगुह रूपं गुप्ताकारं गोरक्षं तं
सुरपतिसेनं सुब्रह्मण्यं सुरविनुतम्



३११ वल्लभानायकस्य

वल्लभानायकस्य

रागं: बेगड (२९) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

वल्लभानायकस्य भक्तो भवामि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वाञ्छितार्थदायकस्य वरमूषिकवाहनस्य

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

पल्लवपदमृदुतरस्य पाशाङ्कुशादिधरस्य

मल्लिकाजातीचंपकहारस्य मणिमालस्य

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वल्लीविवाहकारणस्य गुरुगुहपूजितस्य

काळीकलामालिनीकमलाक्षीसन्नुतस्य



३१२ वाग्देवि मामव

वाग्देवि मामव

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: चतुरश्र एकम्

नोटुस्वर साहित्यम्

वाग्देवि मामव कल्याणि वाणि ब्रह्माणि सुताम्रोष्टि
वनजवदन **गुरुगुह** महिते देवसुरपतिविधिविहिते
वर्णमयि विलसितपदकमले वरमधुरकविजनमुदित-
हृदये वक्त्राब्जे नित्यं वरदे व्याससनकशुकमुनिगणमुदिते



३१३ वातापिगणपतिं भजेऽहम्

वातापिगणपतिं भजेऽहम्

रागं: हंसध्वनि (२९) ताळं: आदि

पल्लवि

वातापिगणपतिं भजेऽहं वारणास्यं वरप्रदम् श्री

अनुपल्लवि

भूतादिसंसेवितचरणं भूतभौतिकप्रपञ्चभरणं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वीतरागिणं विनतयोगिनं विश्वकारणं विघ्नवारणम्

चरणम्

पुरा कुम्भसंभवमुनिवरप्रपूजितं त्रिकोणमध्यगतं

मुरारिप्रमुखाद्युपासितं मूलाधारक्षेत्रस्थितम्

परादिचत्वारिवागात्मकं प्रणवस्वरूपवक्रतुण्डं

निरन्तरं निटिलचन्द्रखण्डं निजवामकरविधृतेक्षुदण्डम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कराम्बुजपाशबीजापूरं कलुषविदूरं भूताकारं

हरादिगुरुगुह तोषितबिम्बं हंसध्वनिभूषितहेरम्बम्



३१४ वामाङ्कस्थितया

वामाङ्कस्थितया

रागं: अठाण (२८) ताळं: खण्ड एकम्

पल्लवि

वामाङ्कस्थितया वल्लभयाऽस्त्रिष्टं

वारणवदनं देवं वन्देऽहम्

अनुपल्लवि

वामनस्वरूपं वरदं सचापं चामरकर्णं शशिशेखरतनयं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नामरूपधरं अभिनवगुरुगुहहृदयम्

चरणम्

अष्टाङ्गयोगवरहठाणवादिजयवसिष्टादितपोधनसेवितगणनाथं

सृष्ट्यादिकारणं श्रितपालनं हेतुदृष्टान्तवर्जितं देवतापूजितं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

दुष्टविघ्नहरणं शिष्टभक्तभरणं इष्टफलदचरणं शिष्टहृद्विहरणम्



३१५ वाराहीं वैष्णवीं

वाराहीं वैष्णवीं

रागं: वेगवाहिनि (१६) ताळं: चापु

पल्लवि

वाराहीं वैष्णवीं वनवासिनीं सदा वन्देऽहम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

वारुणीं मदमत्तचण्डादिखण्डिनीं

जातवेदस्वरूपिणीं मन्दहासिनीम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

करुणाकटाक्षवीक्षणीं गुरुगुहनुतसुगुणशालिनीम्



३१६ वासुदेवमुपास्महे

वासुदेवमुपास्महे

रागं: माळवापञ्चमम् (१५) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

वासुदेवमुपास्महे वसुदेवात्मजं हरिम्

अनुपल्लवि

वासवादिदेवजालवन्दितवैकुण्ठपदं

दासजनानामभीष्टदायकाम्भोजपदम्

चरणम्

कनकाङ्गमादिशेषं^{५३} कपटदशाकृतिवेषं

अनन्तवेदघोषं अपगतरागद्वेषम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

घनकौस्तुभमणिभूषं गंभीरमृदुभाषं

वनजासनादिपोषं वरगुरुगुहसन्तोषम्



^{५३}कनकाङ्गरिपुशोषं

३१७ विघ्नेश्वरम्

विघ्नेश्वरम्

रागं: मलहरि (१५) ताळं: आदि

पल्लवि

विघ्नेश्वरं भजरे मानस विधिगुरुगुहपूजितवरं श्री

अनुपल्लवि

विघ्नवारणविनायकमनिशं वीरादिविनुतविघ्नराजम्

चरणम्

श्वेताम्बरधरं श्वेतार्कपुष्पमालावृतं

पाशाङ्कुशधरं पन्नगाभरणप्रियकरम्

प्रणतभक्तार्तिभञ्जनं चतुरतरं

भूतगणादिसेवितपल्लवपादपङ्कजपद्मकरम्

भूतभौतिकप्रपञ्चाधिभरणं भवपाशमोचनं शुभकरम्



३१८ विनायक

विनायक

रागं: वेगवाहिनि (१६) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

विनायक विघ्ननाशक मां तारय दयानिधे

अनुपल्लवि

अनाथरक्षक आरूढमूषिक

(मध्यमकालसाहित्यम्)

दक्षशिक्षक मोदकभक्षक^{८४}

चरणम्

शिव गुरुगुह विधिपूजित आश्रितजनपरिपालक^{८५}

देवराजपुरतोषित वेगवाहिनी वर्धित^{८६}

(मध्यमकालसाहित्यम्)

रविशशिवह्निनेत्र रतिपतिसन्नुत शुभगात्र

पवनात्मजानन्दकर राममित्र वरपवित्र



^{८४}भक्षण

^{८५}आश्रितजनसंरक्षक

^{८६}वन्दित

३१९ विशालाक्षीं

विशालाक्षीं विश्वेशीम्

रागं: काशीरामक्रिय (५१) ताळं: त्रिपुट

पल्लवि

विशालाक्षीं विश्वेशीं भज रे रे मानस सदा

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

काशी राज्ञीं कपालिनीं विनोदजालिनीं वारिणीं^{५७}

(मध्यमकालसाहित्यम्)

पाशमोचिनीं प्रसिद्धिनीं ईशानीं गुरुगुह जननीम्



^{५७}विनोदजालनिवारिणीं

३२० विश्वनाथेन

विश्वनाथेन

रागं: सामन्त (३०) ताळं: आदि

पल्लवि

विश्वनाथेन रक्षितोऽहं विशालाक्षीसमेतेन

अनुपल्लवि

शाश्वत गुरुगुह संपूजितेन सामन्तपुष्पमालाधरेण

(मध्यमकालसाहित्यम्)

विश्वोत्पत्तिस्थितिलयकारणेन गर्ततीरप्रभावेन

चरणम्

काशीक्षेत्रस्तितप्रसिद्धेन वसिष्ठादिमुनिगणसन्नुतेन

विकल्परोगवैद्यनिपुणेन विमलगणिकानर्तनप्रियेण

(मध्यमकालसाहित्यम्)

आश्रितजनमन्दारेण देवादिनुतपदपङ्कजेन

सङ्गीतशास्त्रादिसंयुतेन समस्तसाम्राज्यप्रदशिवेन



३२१ विश्वनाथं भजेऽहम्

विश्वनाथं भजेऽहम्

रागं: नटाभरणम् (१०) ताळं: आदि

पल्लवि

विश्वनाथं भजेऽहं सततं विशालाक्षीशं परमेशम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

नश्वरप्रपञ्चाधिष्ठानं नन्दितुरङ्गयानमीशानं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

उच्छ्वासाजपा नटाभरणं उत्तम गुरुगुह पूजितचरणम्



३२२ विश्वेश्वरो रक्षतु माम्

विश्वेश्वरो रक्षतु माम्

रागं: कानड (२२) ताळं: आदि

पल्लवि

विश्वेश्वरो रक्षतु मां विधिगुरुगुहपूजितस्सततम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

विशालाक्षीसहितानन्दयुतो विकल्पातीतप्रपञ्चातीतो

(मध्यमकालसाहित्यम्)

शशिरविवह्निलोचनो चतुर्विधपुरुषार्थप्रदनिपुणो



३२३ वीणापुस्तकधारिणीम्

वीणापुस्तकधारिणीम्

रागं: वेहवाहिनि (१६) ताळं: खण्ड एकम्

पल्लवि

वीणापुस्तकधारिणीमाश्रये वेगवाहिनीं वाणीमाश्रये

अनुपल्लवि

एणाङ्कयुतजटाजूटमकुटां तां

एकाग्रचित्तनिध्यातां विधिकान्ताम्

चरणम्

पराद्यखिलशब्दस्वरूपावकाशां पौर्णमीचन्द्रिकाधवळसङ्काशां

करारविन्दां कल्याणदां भाषां^{५५} कनकचम्पकदामभूषाविशेषाम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

निरन्तरं भक्तजिह्वाग्रवासां निखिलप्रपञ्चसंकोचविकासां

नराधमाननविलोकशोकापहां नरहरिहरगुरुगुहपूजितविग्रहाम्



३२४ वीणाभेरिवेणुवाद्यादि

वीणाभेरिवेणुवाद्यादि

रागं: आभेरि (२०) ताळं: आदि

पल्लवि

वीणाभेरिवेणुवाद्यादिविनोदिनि मोदिनि रक्ष माम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

घोणीवदनादिनुतचरिते गुणरहिते विधिगुरुगुहमहिते

(मध्यमकालसाहित्यम्)

एणीलोचनि पापविमोचनि इन्दिरेशसहोदरि तलोदरि



३२५ वीरवसन्त त्यागराज

वीरवसन्त त्यागराज

रागं: वीरवसन्तम् (२४) ताळं: आदि

पल्लवि

वीरवसन्त त्यागराज मां तारयाशु करुणानिधे जय

अनुपल्लवि

मारजनकपूजित महादेव मानिताजपानटनप्रभाव

चरणम्

दिनकरशशितेजोमयलोचन देवराजमुनिशापविमोचन

वनजवदन कमलानगरसदन वल्मीकेश्वर भक्तजनावन

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कनकरत्नसिंहासनाभरण गणपति गुरुगुह जनक भवतरण

जननात्कैवल्यदायकचरण जननीश्रीकमलाम्बिकास्मरण



३२६ वीरहनुमते नमो नमः

वीरहनुमते नमो नमः

रागं: कर्णाटक कापि^{५९} (२२) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

वीरहनुमते नमो नमः मारुततनय नमो नमः

अनुपल्लवि

सरसीरुहवदन श्रीरामचन्द्रचरण

चरणम्

क्रूरराक्षसादिहरण सर्वविद्यादाननिपुण

(मध्यमकालसाहित्यम्)

परमन्त्रविनाशकरण कपिविनुत गुरुगुह स्मरण



३२७ वेङ्कटाचलपते

वेङ्कटाचलपते

रागं: कर्णाटक कापि (२२) ताळं: आदि

पल्लवि

वेङ्कटाचलपते निनु नम्मिति वेगमे ननु रक्षियुमय्या

अनुपल्लवि

पङ्कजासनप्रमुखादि विनुतपदमुनाश्रयिञ्चिनवारिकेल्ल

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सङ्कटमुलुदीर्चि संपदलिच्चि

मङ्गळं पोरुन्दिय पुलिवलत्तिल् विळङ्गुम्

चरणम्

श्रीनिवास शेषाचलमुनिंचि शीघ्रमाय् वन्दु

अन्धुनिकाभीष्टदानमोसगि गोकर्णक्षेत्रमुलो

नेलकोनि मृकण्डु मुनिकळ् मुदलान^{१०} भल्लतानाम्

अभयवरप्रदानचतुरतररमापते दयानिधे प्रत्यक्षमुगा-

निन्द मानिलत्तिल् निन् महिमै अनेकम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वानवर् वणङ्गुं वासुदेवने वाञ्छितार्थफलमिच्चु

^{१०}मुनीशर् मुदलान

वरदने दीनरक्ष का पी तम्बरधर देवदेव गुरुगुहन् मामनान



३२८ वेङ्कटेश्वरयादवभूपतिम्

वेङ्कटेश्वरयादवभूपतिम्

रागं: मेघरञ्जनि (१५) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

वेङ्कटेश्वरयादव ११भूपतिमाश्रयेऽहं विशविकल्पापहं

विद्वज्जनकल्पभूरुहं वदनसरसीरुहम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

कङ्कशैलमध्यस्थितकार्तिकेयशिव गुरुगुह करुणाकटाक्षपात्रं

कञ्जदलायतनेत्रं कङ्कणहारकिरीटालङ्कृतसुन्दरगात्रम्

काञ्चनवृष्टिप्रद मेघरञ्जित बहुक्षेत्रं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

पङ्कजभवमुखसुरकृतसकलनिष्कळस्तोत्रं

सङ्कल्पविकल्परहितसच्चिदानन्दमात्रम्



३२९ वेदपुरीश्वरम्

वेदपुरीश्वरम्

रागं: धन्याशि (२०) ताळं: अदि

पल्लवि

वेदपुरीश्वरं भज रे रे चित्त वेदागमादिसन्नुतवैभवम्

अनुपल्लवि

विधीन्द्रसन्नुतविनोदचरणं विमलगुरुगुहपचारिणम्

चरणम्

नादबिन्दुकलास्पदं शङ्करं नन्दितुरगारोहितं वरं

चन्द्रशेखरं सदानन्दकरं चर्माम्बरधरं चतुरतरकरम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

माधवाद्यमरबृन्दघोषितं मारकोटिकोटिप्रकाशितं

महेश्वरं त्रिभुवनेश्वरं प्रसिद्धत्रिपुरसुन्दरीसमेतम्



३३० वेदारण्येश्वराय

वेदारण्येश्वराय

रागं: तोडि (८) ताळं: आदि

पल्लवि

वेदारण्येश्वराय नमस्ते

वीणावादनविदुष्यम्बिकासमेताय

अनुपल्लवि

वेदागमविनुतवैभवाय वेदान्तार्थतत्वबोधिताय

चरणम्

सुरासुरसेवितविश्वेशाय सुन्दर गुरुगुह सुपूजिताय
सूर्यचन्द्राग्निलोचनाय परवामदेवादिवन्दितपदाय

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मुरारिप्रभृतिदेवसमूहाय मूलकन्दाय मुक्तिप्रदाय

चराचरात्मकप्रपञ्चाय शङ्कराय चतुरतरवराय



३३१ वंशवति शिवयुवति

वंशवति शिवयुवति

रागं: वंशवति (५४) ताळं: आदि

पल्लवि

वंशवति शिवयुवति पालय मां शांभवि बहुतरमहिमा

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

द्वाविंशत्श्रुतिस्वरूपिणि विनोदकर गुरुगुह स्वरूपिणि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

अंशांशस्वरूपप्रकाशिनि हंसिनि दुरितध्वंसिनि जननि



३३२ शक्तिसहितगणपतिम्

शक्तिसहितगणपतिम्

रागं : शङ्कराभरणम् (२९) ताळं : तिश्र एकम्

नोट्टुस्वर साहित्यम्

शक्तिसहितगणपतिं शङ्करादिसेवितं

विरक्तसकलमुनिवरसुरराजविनुतगुरुगुह

भक्ताळिपोषकं भवसुतं विनायकं

भुक्तिमुक्तिप्रदं भूषिताङ्गं रक्तपादाम्बुजं भावयामि



शङ्करनारायणम्

रागं: नारायणदेशाक्षि (२९) ताळं: आदि

पल्लवि

शङ्करनारायणं भजेऽहं सदाशिवं

नारायणदेशाक्षि रागनुतम्

अनुपल्लवि

शङ्करनारायणीप्रियकरं साधुजनावनसन्तोषकरम्

चरणम्

शैलराजपूजितपदाम्बुजं शार्दूलचर्माम्बरादिधरं

सूर्यचन्द्राग्निनयनं त्रिनयनं शुकशौनकादिगुरुगुहसेवितम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कैलासगिरिविहारं शङ्करं कपालशूलमालादिधरं

कालहरं त्रिपुरहरं कलिकल्मषापहं कामितफलदकरम्



३३४ शङ्करमभिरामीमनोहरम्

शङ्करमभिरामीमनोहरम्

रागं: मनोहरि (३३) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

शङ्करमभिरामी मनोहरं शशिधरममृतघटेश्वरं भजेऽहं

शङ्खाभिषेकगात्रं सच्चिदानन्दमात्रम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

पङ्कजासनादिपूजिताब्जपदं भक्तमार्कण्डेयायुःप्रदं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

भयङ्करघोररूपधरयमनिग्रहानुग्रहं

पङ्कजमुख गुरुगुह परिपालं कृपालवालम्



३३५ शङ्करवर

शङ्करवर

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: तिश्च एकम्

नोटुस्वर साहित्यम्

शङ्करवर पङ्कजकर शंभो देव पशुपते

ओंकाराकारसुतनो श्रीकाञ्चीनगरपते

एकाम्नेश गुरुगुहादिजनक मां पाहि



३३६ शङ्खचक्रगदापाणिम्

शङ्खचक्रगदापाणिम्

रागं: पूर्णचन्द्रिक (२९) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

शङ्खचक्रगदापाणिं वन्दे

श्रीशार्ङ्गनन्दककौस्तुभधारिणं वन्दे

अनुपल्लवि

पङ्केरुहचरणं पद्मावतीरमणं

सङ्कटापहरणं सदाभक्तभरणम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कुङ्कुमपङ्किलगात्रं पङ्कजविशालनेत्रं

शङ्करसन्नुतिपात्रं वेङ्कटवरदक्षेत्रम्

चरणम्

गजेन्द्रसंरक्षणं गरुडवाहविचक्षणम्

अजेन्द्रादिविलक्षणम् अमृतसारभक्षणम्

अजामिळप्रभृत्यनेकदासाळिसंतरणम्

भजे पूर्णचन्द्रिकाङ्गगुरुगुहान्तःकरणम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कुजादिग्रहविहितं विरजानदीतटस्थितम्

सजातीयादिरहितं निजानन्दबोधहितम्



३३७ शरवणभवगुरुगुहं

शरवणभवगुरुगुहं

रागं: रेवगुप्ति (१५) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

शरवणभव गुरुगुहं षण्मुखं भजेऽहं श्री

अनुपल्लवि

वरदाभयकरं शक्त्यायुधधरकरं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

पुरुहूतादिसेवितं भागवतादिसन्नुतम्

चरणम्

पार्वतीकुमारं नवनन्दनादियुतधीरं

नादान्तविहारं नतभक्तजनमन्दारम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

गर्वितशूरादिहरं गणपतिसोदरं वरं

वल्लीदेवसेनानन्दकरं चतुरतरम्



३३८ शरावतीतटवासिनी

शरावतीतटवासिनी

रागं: शरावती (२५) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

शरावतीतटवासिनी हंसिनी सरस्वती

विधियुवती संरक्षतु मां श्री

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

चराचरात्मकप्रपञ्चरूपिणी शब्दार्थस्वरूपिणी ब्रह्माणी

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मुरारिपुरारि गुरुगुह मोदिनी संवेदिनी

मुरळीवीणागानविनोदिनी गीर्वाणी



३३९ शालिवाटीश्वरम्

शालिवाटीश्वरम्

रागं: देवगन्धरि (२९) ताळं: आदि

पल्लवि

शालिवाटीश्वरं भजेऽहं शालिवाटीनगरविहारं श्री

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

शैलसुताकान्तिमतीलीलं शोकहरधीरं सुरमुनिपालं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वालिपूजितग्रीष्ममहोत्सवं विधीन्द्रादिगुरुगुहनुतवैभवम्



३४० शिवकामीपतिम्

शिवकामीपतिम्

रागं: नाटकुरञ्जि (२८) ताळं: आदि

पल्लवि

शिवकामीपतिं चिन्तयाम्यहं श्रीगुरुगुहपूजितपदाम्भोरुहम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

नवकाळीजितनर्तनधीरं नादबिन्दुकलारूपमनिशं अभि-

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नवपुरन्दरादिसनकादिसन्नुतभानुकोटिसंकाशम्



३४१ शिवकामेश्वरम्

शिवकामेश्वरम्

रागं: आरभि (२९) ताळं: आदि

पल्लवि

शिवकामेश्वरं चिन्तयाम्यहं चिदानदपूजिताम्भोरुहम्

अनुपल्लवि

शिवकामेश्वरीमनोहरं श्रीगुरुगुहभक्तवशंकरम्

चरणम्

नादबिन्दुकलारूपमनिशं नटेश्वरं भानुकोटिसदृशं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नन्दितुरगारोहितं गुरुगुहमहितं चिदम्बरपुरीविलसितम्



३४२ शिवकामेश्वरीम्

शिवकामेश्वरीम्

रागं: कल्याणि (६५) ताळं: आदि

पल्लवि

शिवकामेश्वरीं चिन्तयेऽहं शृङ्गाररससंपूर्णकरीम्

अनुपल्लवि

शिवकामेश्वरमनःप्रियकरीं शिवानन्दगुरुगुहवशंकरीम्

चरणम्

शान्तकल्याणगुणशालिनीं शान्त्यातीतकलास्वरूपिणीं

माधुर्यगानामृतमोदिनीं मदालसां हंसोल्लासिनीम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

चिदम्बरपुरीश्वरीं चिदग्निकुण्डसंभूतसकलेश्वरीम् श्री



३४३ शिवकायारोहणेशाय

शिवकायारोहणेशाय

रागं: रुद्रप्रिय (२२) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

शिवकायारोहणेशाय नमस्ते श्री

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

शिवराजधानिक्षेत्रस्थितवरदाभयकराय

(मध्यमकालसाहित्यम्)

भुवनत्रयमोहिताय भोगमोक्षवितरणाय

नीलायताक्षीमनोहराय गुरुगुहमुदिताय



३४४ शृङ्गाररसमञ्जरीम्

शृङ्गाररसमञ्जरीम्

रागं: रसमञ्जरि (७२) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

शृङ्गाररसमञ्जरीं श्रीकामाक्षीं गौरीं

श्रितजनकल्पवल्लरीं चिन्तयेऽहम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

अङ्गारकादिग्रहदोषनिवारणकरीं अ

नङ्गकुसुमादिशक्तिप्रियकरीं द्विसप्ततिरा-

(मध्यमकालसाहित्यम्)

गाङ्गरागमोदिनीं मतङ्गभरतवेदिनीं

मङ्गळदायिनीं रसिकपुङ्गवगुरुगुहजननीम्



शृङ्गारशक्त्यायुधधर

रागं: रमामनोहरि (५२) ताळं: झम्प

पल्लवि

शृङ्गारशक्त्यायुधधरशरवणस्य
दासोऽहमनिशं धनधान्यप्रदस्य

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

गङ्गामृतपूरितघटाभिषेकस्य
गद्यपद्यादिनुतकोमळतरपदस्य
अङ्गारकादिनवग्रहवन्दितस्य
आदिमध्यान्तरहिताप्रमेयवरस्य

(मध्यमकालसाहित्यम्)

जगदम्बिकादिसकलदेवतामोहित-
जननादिखेदभञ्जनचतुरतरस्य
नगराजसुतानन्दीशनवनन्द्यादि-
भक्तजनान्तःकरणानन्दगुरुगुहस्य



३४६ शृङ्गारदिनवरसाङ्गी

शृङ्गारदिनवरसाङ्गी

रागः धवळाङ्गम् (४९) ताळः खण्ड एकम्

पल्लवि

शृङ्गारदिनवरसाङ्गीबृहदम्बालिङ्गितपुङ्गव धवळाङ्ग श्रियं देहि

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

अङ्गारकादिविनुताङ्गजत्रिपुरारे

(मध्यमकालसाहित्यम्)

गङ्गाधर वृषभतुरङ्ग सत्सङ्ग भयभङ्ग गुरुगुहान्तरङ्ग श्रीमहालिङ्ग



३४७ शेषाचलनायकम्

शेषाचलनायकम्

रागं: वराळि (३९) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

शेषाचलनायकं भजामि विशेषफलप्रदायकम्

अनुपल्लवि

भाषारमणप्रभृत्यशेषामरनुतकौस्थुभ-

भूषालङ्कृतबहुतरवेषात्मकविग्रहम्

चरणम्

मन्दहासवदनं स्वच्छन्दहृदयसदनं

सुन्दरजितमदनं मुकुन्दं मधुसूदनं अर-

विन्दपत्रनयनं गोविन्दमुरगशयनं सुर-

बृन्दसत्कृताध्ययनं नन्दनारायणं पु-

(मध्यमकालसाहित्यम्)

रन्दरादिदिक्पालसनन्दनादिमुनि वराळि -

वन्दितमभिनव गुरुगुह नन्दितमनन्तकीर्तिम्



३४८ शैलराजकुमारि

शैलराजकुमारि

रागं: शैलदेशाक्षि (३५) ताळं: आदि

पल्लवि

शैलराजकुमारि शङ्करि शिवे पाहि मां अम्बिके

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

शैलदेशाक्षि रागप्रिये शङ्कर गुरुगुह प्रिये शुकप्रिये

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कैलासवासप्रिये सुकृतप्रिये समस्तकैवल्यप्रदे



३४९ शैलेश्वरम्

शैलेश्वरम्

रागं: सुमद्युति (५७) ताळं: आदि

पल्लवि

शैलेश्वरजं भज रे रे चित्त श्रीवरदगुरुगुहमुदं वारण

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

शैलात्मजा कामाक्षीरमणं शिवकाञ्चीसदनं मृदुगदनं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

बिलद्वारान्तमध्यस्थितं बहुकीर्तितभाषारमणनुतम्



३५० शौरिविधिनुते

शौरिविधिनुते

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: चतुरश्र एकम्

नोटुस्वर साहित्यम्

शौरिविधिनुते शाम्भवि ललिते शान्तेऽतीते शङ्करमुदिते
गौरि सुरहितैकाम्रपतियुते कामाक्षि मां पाहि
वीरवरविनुतचरणाम्भोजे धीरतरमलयवरहिमगिरिजे
शूरहरण गुरुगुह मातः संसारतरचरणतरकमले



३५१ श्यामळाङ्गि

श्यामळाङ्गि

रागं: श्यामळम् (५५) ताळं: आदि

पल्लवि

श्यामळाङ्गि मातङ्गि नमस्ते शङ्करि सरस्वतीविनुते

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

नामरूपप्रपञ्चविहारिणि नारदादिमुनिहृत्सञ्चारिणि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सोमसुन्दरेशमनोरञ्जनि सुन्दरि मीनाक्षि गुरुगुह जननि



३५२ श्यामळे मीनाक्षि

श्यामळे मीनाक्षि

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: चतुरश्र एकम्

नोटुस्वर साहित्यम्

श्यामळे मीनाक्षि सुन्दरेश्वरसाक्षि

शङ्करि गुरुगुह समुद्भवे शिवेऽव

पामरमोचिनि पङ्कजलोचनि

पद्मासनवाणीहरिलक्ष्मीविनुते शांभवि



३५३ श्री अभयाम्बा

श्री अभयाम्बा

मङ्गलकृति (मणिप्रवाळम्)

रागं: श्री (२२) ताळं: आदि

पल्लवि

श्री अभयाम्बा निन्नु चिन्तिच्चिन वारिकि
चिन्तै^{१२} कवलै येल्लां तीरुमम्मा

अनुपल्लवि

हे अभयकरे वरे ईश्वरि कृपतोनु
एन्दनै रक्षिक्क इदु नल्ल समयमम्मा

चरणम्

नी अत्यद्भुतशुभगुणमुलु विनि नीवे दिक्कनि नेर नम्मिति
(मध्यमकालसाहित्यम्)

नीरजाक्षि निजरूपसाक्षि^{१३} नित्यानन्द गुरुगुह कटाक्षि रक्षि



^{१२}इन्त

^{१३}निरुपमसाक्षि

३५४ श्रीकमलाम्बा जयति

श्रीकमलाम्बा जयति

(नवमावरणकीर्तनम्)

रागं: आहिरि (२०) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

श्री कमलाम्बा जयति अम्बा श्री कमलाम्बा जयति

जगदाम्बा श्री कमलाम्बा जयति

शृङ्गाररसकदम्बा मदम्बा श्री कमलाम्बा जयति

चिद्बिम्बप्रतिबिम्बेन्दुबिम्बा श्री कमलाम्बा जयति

(मध्यमकालसाहित्यम्)

श्रीपुरबिन्दुमध्यस्थचिन्तामणिमन्दिरस्थ-

शिवाकारमञ्चस्थितशिवकामेशाङ्कस्था

अनुपल्लवि

सूकराननाद्यर्चितमहात्रिपुरसुन्दरीं राजराजेश्वरीं

श्रीकरसर्वानन्दमयचक्रवासिनीं सुवासिनीं चिन्तयेऽहम् दि-

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वाकरशीतकिरणपावकादिविकासकरया

भीकरतापत्रयादिभेदनधुरीणतरया

पाकरिपुप्रमुखादिप्रार्थितसुकळेबरया

प्राकट्यपरापरया पालितोदयाकरया^{१४}

^{१४}पालितोदयाकरया प्राकट्यपरापरया

चरणम्

श्रीमात्रे नमस्ते चिन्मात्रे सेवितरमाहरीशविधात्रे
वामादिशक्तिपूजितपरदेवतायाः सकलं जातम्
कामादिद्वादशभिरुपासितकादिहादिसादिमन्त्ररूपिण्याः
प्रेमास्पदशिवगुरुगुहजनन्याम् प्रीतियुक्तमच्चित्तं विलयतु
(मध्यमकालसाहित्यम्)

ब्रह्ममयप्रकाशिनी नामरूपविमर्शिनी
कामकलाप्रदर्शिनी सामरस्य निदर्शिनी



३५५ श्रीकमलाम्बिकया

श्रीकमलाम्बिकया

(तृतीयावरणकीर्तनम्)

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

श्रीकमलाम्बिकया कटाक्षितोऽहं

सच्चिदानन्दपरिपूर्णब्रह्मास्मि

अनुपल्लवि

पाकशासनादिसकलदेवतासेवितया

पङ्कजासनादिपञ्चकृत्यकृत्भावितया

(मध्यमकालसाहित्यम्)

शोकहरचतुरपदया मूकमुख्यवाक्प्रदया

कोकनदविजयपदया गुरुगुह तत्रैपदया

चरणम्

अनङ्गकुसुमाद्यष्टशक्त्याकारया

अरुणवर्णसंक्षोभणचक्राकारया १५

अनन्तकोट्यण्डनायक शङ्कर नायिकया

अष्टवर्गात्मकगुप्ततरया वरया

(मध्यमकालसाहित्यम्)

१५ चक्रागरया

अनङ्गाद्युपासितया अष्टदळाब्जस्थितया
धनुर्बाणधरकरया दयासुधासागरया



३५६ श्रीकमलाम्बिकायाम्

श्रीकमलाम्बिकायाम्

(सप्तमावरणकीर्तनम्)

रागं: सहान (२२) ताळं: त्रिपुट

पल्लवि

श्री कमलाम्बिकायां भक्तिं करोमि
श्रितकल्पवाटिकायां चण्डिकायां जगदम्बिकायाम्

अनुपल्लवि

राकाचन्द्रवदनायां राजीवनयनायां
पाकारिनुतचरणायां आकाशादिकिरणायाम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

ह्रींकारविपिनहरिण्यां ह्रींकारसुशरीरिण्यां
ह्रींकारतरुमञ्जर्यां ह्रींकारेश्वर्यां गौर्याम्

चरणम्

शरीरत्रयविलक्षणसुखतरस्वात्मानुभोगिन्यां
विरिञ्चिहरी शान हरिहयवेदितरहस्ययोगिन्याम्
परादिवाग्देवतारूपवशिन्यादिविभागिन्यां
चरात्मकसर्वरोगहरनिरामयराजयोगिन्याम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

करधृतवीणावादिन्यां कमलानगरविनोदिन्यां

सुरनरमुनिजनमोदिन्यां गुरुगुह वरप्रसादिन्याम्



३५७ श्रीकमलाम्बायाः परम्

श्रीकमलाम्बायाः परम्

(पञ्चमावरणकीर्तनम्)

रागं: भैरवि (२०) ताळं: झम्प

पल्लवि

श्री कमलाम्बायाः परं नहि रे रे चित्त

क्षित्यादिशिवान्ततत्वस्वरूपिण्याः

अनुपल्लवि

श्रीकण्ठविष्णुविरिञ्चादिजनयित्र्याः

शिवात्मकविश्वकर्त्र्याः कारयित्र्याः

(मध्यमकालसाहित्यम्)

श्रीकरबहिर्दशारचक्रस्थित्याः सेवित भैरवी भार्गवीभारत्याः

चरणम्

नादमयसूक्ष्मरूपसर्वसिद्धिप्रदादिदशशक्त्याराधितमूर्तेः

श्रोत्रादि दशकरणात्मककुळकौळिकादिबहुविधोपासितकीर्तेः

अभेदनित्यशुद्धबुद्धमुक्तसच्चिदानन्दमयपरमाद्वैत^{१६}स्फूर्तेः

आदिमध्यान्तरहिताप्रमेय गुरुगुह मोदितसर्वार्थसाधकपूर्तेः

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मूलादिनवाधारव्यावृत्तदशध्वनिभेदज्ञ -

^{१६} सच्चिदानन्दपरमाद्वैत

योगिबृन्दसंरक्षण्याः अनादिमायाविद्या -
कार्यकारणविनोदकरणपटुतरकटाक्षवीक्षण्याः



३५८ श्रीकमलाम्बिकेऽवाव

श्रीकमलाम्बिकेऽवाव

(अष्टमावरणकीर्तनम्)

रागं: घण्ट (२०) ताळं: आदि

पल्लवि

श्रीकमलाम्बिकेऽवाव शिवे करधृतशुकशारिके

अनुपल्लवि

लोकपालिनि कपालिनि शूलिनि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

लोकय मां सर्वसिद्धिप्रदायिके त्रिपुराम्बिके बालाम्बिके

चरणम्

सन्तप्तहेमसन्निभदेहे सदाऽखण्डैकरसप्रवाहे

सन्तापहरत्रिकोणगेहे सकामेश्वरि^{१७}शक्तिसमूहे

सन्ततं मुक्तिघण्टा मणिघोषायमानकवाटद्वारे अ-

नन्त गुरुगुह विदिते कराङ्गुलिनखोदयविष्णुदशावतारे

(मध्यमकालसाहित्यम्)

अन्तःकरणेक्षुकार्मुकशब्दादि पञ्चतन्मात्रविशिखा-

ऽत्यन्तरागपाशद्वेषाङ्कुशधरकरेऽतिरहस्ययोगिनीपरे



^{१७}सकामेश्वर

३५९ श्रीकमलाम्बिके

श्रीकमलाम्बिके

(मङ्गळ कीर्तनम्)

रागं: श्री (२२) ताळं: खण्ड एकम्

पल्लवि

श्रीकमलाम्बिके शिवे पाहिमां ललिते
श्रीपतिविनुते सितासिते शिवसहिते

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

राकाचन्द्रमुखी रक्षितकोलमुखी
रमावाणीसखी राजयोगसुखी

(मध्यमकालसाहित्यम्)

शाकम्बरि शातोदरि चन्द्रकलाधरि

शङ्करि शङ्कर गुरुगुह भक्तवशङ्करि

एकाक्षरि भुवनेश्वरि ईशप्रियकरि

श्रीकरि सुखकरि श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि



३६० श्रीकान्तिमतीम्

श्रीकान्तिमतीम्

रागं: देशीसिम्हारवम् (५८) ताळं: आदि

पल्लवि

श्रीकान्तिमतीं शङ्करयुवतीं श्रीगुरुगुहजननीं वन्देऽहम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

ह्रीङ्कारबीजाकारवदनां हिरण्मयशोभासदनां

पाकशासनादिदेवविनुतां परशुरामनतहिमशैलसुताम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

शुकशौनकादिसदाराधितां शुद्धताम्रपर्णीतटस्थितां

शङ्खाद्यष्टोत्तरसहस्रकलशाभिषेकमोदां सुरहिताम्



३६१ श्रीकालहस्तीश

श्रीकालहस्तीश

रागं: हुशानि (२२) ताळं: झम्प

पल्लवि

श्रीकालहस्तीश श्रितजनावनसमीराकार
मां पाहि राजमौळे एहि

अनुपल्लवि

पाकारिविधिहरिप्राणमय कोशानि लाकाश -
भूमिसलिलाग्निप्रकाश शिव

चरणम्

ज्ञानप्रसूनाम्बिकापते भक्ताभिमान -
दक्षिणकैलासवासाभीष्टदानचतुरकराब्ज
दीनकरुणानिधे सूनशरसूदनाज्ञानहर^{१५} पशुपते

(मध्यमकालसाहित्यम्)

ज्ञानगुरुगुहसच्चिदानन्दमयमूर्ते
हीनजातिकिरातकेन पूजितकीर्ते



३६२ श्रीकृष्णं भज मानस

श्रीकृष्णं भज मानस

रागं: तोडि (८) ताळं: आदि

पल्लवि

श्रीकृष्णं भज मानस सततं श्रितजनपरिपालं गोपालं बालम्

अनुपल्लवि

पाकशासनादिविनुतचरणं शोकमोहभयहरणं भवतरणम्

चरणम्

शङ्खचक्रगदापद्मवनमालं वेणुगानलोलं कृपालवालं

कङ्कणकेयूरमकुटमण्डितकमनीयकनकमयचेलम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

पङ्कजासनादिदेवमहितं श्रीगुरुगुहविहितं रमासहितं

पङ्कजदलनयनं वटशयनं गुरुपवनपुराधीशं लोकेशम्



३६३ श्रीकृष्णं भज रे

श्रीकृष्णं भज रे

रागं: रूपवति (१२) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

श्रीकृष्णं भज रे रे मानस श्री रूपवती गोपस्त्रीजारम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

चक्रनिवारितभास्करप्रकाशं चन्द्रशेखर गुरुगुह विश्वासं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

अक्रूरवन्दितपदं अर्जुनप्रेमास्पदं

नक्रहतदन्तिवरदं नतशुकसनकनारदम्



३६४ श्रीकृष्णो मां रक्षतु

श्रीकृष्णो मां रक्षतु

रागं: नासामणि (७०) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

श्रीकृष्णो मां रक्षतु गुरुगुहा नन्दवरः

अनुपल्लवि

सकृदाराधिततोषो सकलसुरबृन्दवन्दितः

चरणम्

वसुदेवसुतो वरदो काञ्चीनगरविहारो

कंसचाणूरमर्दको कौन्तेयहितबोधको

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नासामणि धरो नवनीतचोरधीरो

नवनवगोपस्त्रीरासक्रीडावेषधरो हरिः



३६५ श्रीगणनाथं भज रे

श्रीगणनाथं भज रे

रागं: ईशमनोहरि (२८) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

श्रीगणनाथं भज रे चित्त पराशक्तियुतम्

अनुपल्लवि

नागयज्ञसूत्रधरं नादलयानन्दकरम्

चरणम्

आगमादिसन्नुतं अखिलदेवपूजितं

योगशालिभावितं भोगिशायिसेवितम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

रागद्वेषादिरहितरमणीयहृदयविदितं^{१९}

श्रीगुरुगुहसंमुदितं चिन्मूलकमलस्थितम्



३६६ श्रीगणेशात्परम्

श्रीगणेशात्परम्

रागं: आर्द्रदेशि (१५) ताळं: झम्प

पल्लवि

श्रीगणेशात्परं चित्त न हि रे रे

शिवादिषट्त्रिंशत्तत्त्वस्वरूपिणः

अनुपल्लवि

वागादिपञ्चकव्यापाररहित -

हृदायाकाशसंस्थिताद्योगिराजार्चितात्

चरणम्

मातङ्गवदनाद् मारुद्रदर्शितात् भूतभौतिक -

विश्वपूजितकळेभरात् श्वेतार्कसुमधरात् स्वेतर -

विवर्जितात् पीताम्बरावृतात् ब्रह्माद्युपासितात्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

भूतादिनुतपदाम्भोजाच्छ्रिवात्मजात्

शीतांशुधरपरमशिव गुरुगुहाग्रजात्



३६७ श्रीगुरुगुह

श्रीगुरुगुह

रागं: देवक्रिया (२८) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

श्रीगुरुगुह तारयाशु मां शरवणभव
श्रीगुरुगुह तारयाशु मां सुरपतिश्रीपति-
रतिपतिवाक्पतिक्षितिपतिपशुपतिसेवित श्री
अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

रागादिरहितहृदयविभावितसुरमुनिपूजित
त्यागादिराजकुमार तापत्रयहर कुमार
(मध्यमकालसाहित्यम्)

भोगिराजविनुतपाद भूदेवक्रियामोद
योगिराजयोगभेदयुक्तमनोलयविनोद



३६८ श्रीगुरुगुहमूर्ते

श्रीगुरुगुहमूर्ते

रागं: उदयरविचन्द्रिका (९) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

श्रीगुरुगुहमूर्ते चिच्छक्तिस्फूर्ते
शिष्यजनावनकीर्ते सुमुहूर्ते जय

अनुपल्लवि

योगिनीहृदयप्रकाशचित्तवृत्ते
युगपद्भोगयोगप्रदाननिपुणशक्ते
आगमरहस्यतत्वानुसन्धानयुक्ते
आनन्दानुरक्ते अतिविरक्ते जय जय

चरणम्

आत्मेश्वरजीवभेदावरणनिवृत्ते
आश्रितशिष्यानुग्रहकारणप्रवृत्ते
आत्मतत्त्वादिशोधनसाधनसंपत्ते
आरक्तश्वेतमिश्रचरणप्रवृत्ते
आत्मकोटिभक्ते अनादिमायोत्पत्ते
अत्मानुभवसारसंतृप्ते निर्मुक्ते

(मध्यमकालसाहित्यम्)

आत्मोदयरविचन्द्रिका संदीप्ते

परमात्मश्रीचिदानन्दनाथ नमस्ते जय जय



३६९ श्रीगुरुगुहस्य

श्रीगुरुगुहस्य

रागं: पूर्वि (१५) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

श्रीगुरुगुहस्य दासोऽहं
नोचेत् चिद्गुरुगुह एवाहम्

अनुपल्लवि

भोगमोक्षात्मकचरणस्य भूपुरादिनवावरणस्य
योगिवृन्दान्तःकरणस्य योगपीठादिकारणस्य
चरणम्

सनकादिपूर्वि कमुनिगणसन्नुतानन्दविग्रहस्य
वनजभवादिसकलसुमनोवाञ्छितार्थानुग्रहस्य
जननलयादिरूपप्रपञ्चाज्ञानकार्यनिग्रहस्य
मननध्यानसमाधिनिष्टमहानुभावहृद्गृहस्य

(मध्यमकालसाहित्यम्)

दिनकरकोटिविभास्वरस्य तेजोमयजगदीश्वरस्य
जनरञ्जनकरस्य वरस्य सर्वस्मात्परस्य हरस्य



३७० श्री गुरुणा पालितोऽस्मि

श्री गुरुणा पालितोऽस्मि

रागं: पाडि (१५) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

श्री गुरुणा पालितोऽस्मि सच्चिदानन्दनाथेन

अनुपल्लवि

आगमादिसन्नुतेन अखिलविश्ववन्दितेन
त्यागराजविभातेन तापत्रयातीतेन^{१००}

चरणम्

वेदान्तार्थवेद्येन विकल्परोगवैद्येन
नादामृतसुपाद्येन नवनाथेनाद्येन
सादाख्यकलाकरेण सदाशिवावतारेण
नादान्तविहारेण नवचक्राधारेण

(मध्यमकालसाहित्यम्)

पादाम्बुजेन परेण^{१०१} भेदादिविदारेण
आदिगुरुगुह्वरेण कादिमतानुसारेण



^{१००}तापत्रयासमेतेन

^{१०१}वरेण

३७१ श्रीत्यागराजस्य

श्रीत्यागराजस्य

रागं: रुद्रप्रिय (२२) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

श्रीत्यागराजस्य भक्तो भवामि

किंचिदज्ञोऽप्यतोऽहं सर्वज्ञ एवास्मि^{१०२}

अनुपल्लवि

कात्यायनीमोहितस्वरूपस्य कामादिवृत्तिहरणप्रतापस्य

भूत्याभरणा^{१०३}लङ्कृतगात्रस्य बुद्धशुद्धनित्यानन्दमात्रस्य

चरणम्

अमरेशादिपूजितसायंकालस्य अतिशुद्धमद्वळादिवाद्यलीलस्य

नवनन्द्यादिभक्तजनपालस्य नतसुरासुरसंहति^{१०४}जालस्य

कमलकल्हारमालस्य काञ्चनमणिमयचेलस्य

कमनीय गुरुगुह^{१०५}मूलस्य कमलापुरकृतलीलस्य

(मध्यमकालसाहित्यम्)

विमल रुद्र^{१०६}गणिकानर्तनविनोदभेदमोदकरस्य

कमलविडम्बनकरस्य शङ्करस्य पुरहरस्य हरस्य



^{१०२}सर्वज्ञ एवाहं, सर्वज्ञाऽहं

^{१०३}भूताभरण

^{१०४}संसति

३७२ श्रीदक्षिणामूर्तिमीशम्

श्रीदक्षिणामूर्तिमीशम्

रागं: फेनद्युति (२) ताळं: आदि

पल्लवि

श्रीदक्षिणामूर्तिमीशं चित्प्रकाशं प्रणौमि

अनुपल्लवि

वेदान्तवेद्यं न्यग्रोधवृक्षमूलवासिनं वल्लकी-

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नादानुभवमोदममृत फेनद्युति मन्दस्मितमुखाम्बुजम्

चरणम्

जननादिखेदभञ्जनचतुरं जगदिन्द्रजालचमत्कृतिकरं

मुनिजनादिनिखिलसंशयहरं मुद्राकरं गुरुगुहाकरम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

अनाद्यविद्यातमोभास्करं आचार्यशेखरं सुन्दरं

मनोवागगोचरं शशिधरं मौनिनं मदनहरं शङ्करम्



३७३ श्रीदक्षिणामूर्तिम्

श्रीदक्षिणामूर्तिम्

रागं: अठाण (२८) ताळं: खण्ड एकम्

पल्लवि

श्रीदक्षिणामूर्तिं सदा चिन्तयेऽहं
सदानन्दविद्याप्रदगुरुगुहकीर्तिम्
अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)
वेदान्तबोधकं विजयचिन्मुद्राङ्कं
नादान्तवेदितं निजसनकादिनुतम्
(मध्यमकालसाहित्यम्)
वदनारविन्दवह्निरविशशिलोचनं
वासुदेवकुमारमारहरनन्दनम्



३७४ श्रीदुंदुर्गे

श्रीदुंदुर्गे

रागं: श्रीरञ्जनि (२२) ताळं: एकम्

पल्लवि

श्रीदुंदुर्गे शिवसंसर्गे चिद्रसवर्गे
स्थिरेहापवर्गे श्रीवनदुर्गे

अनुपल्लवि

दुन्दुभिवाद्यभेदनादविनोदिनि मोदिनि
वीणावादिनि संवेदिनि अभेदिनि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सुन्दरि श्रीरञ्जनि निरञ्जनि जय जननि

चरणम्

करुणारसालये कलिकल्मषविलये
करविधृतकुवलये कानननिलये
चरणकिसलये चामीकरवलये
स्वरसङ्गीतलये सुरुचिरमलये

(मध्यमकालसाहित्यम्)

गुरुगुहोदये सदये विजये अभये
सरसमये षट्समये समये कलये



३७५ श्रीनाथसोदरीम्

श्रीनाथसोदरीम्

रागं : नभोमणि (४०) ताळं : रूपकम्

पल्लवि

श्रीनाथसोदरीं तिरस्करिणीं नमामि

अनुपल्लवि

पानपात्रधारिणीं परदेवताराधिनीम्

चरणम्

दीनदेवरक्षिणीं दिव्यरथसञ्चारिणीं

धनधान्यप्रदायिनीं दृढसेनादिभञ्जनीम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

उन्नतवाग्विलासिनीं ऊर्ध्वाम्नायतोषिणीं

गानामृतानन्दिनीं गुरुगुहनुतानभोमणीम्



३७६ श्रीनाथादिगुरुगुहो

श्रीनाथादिगुरुगुहो

रागं: मायामाळवगौळ (१५) ताळं: आदि

पल्लवि

श्रीनाथादिगुरुगुहो जयति जयति

श्रीचिदानन्दनाथोऽहमिति सन्ततं हृदिनि भज

अनुपल्लवि

नानाप्रपञ्चविचित्रकरो नामरूपपञ्चभूताकरो

अज्ञानध्वान्तप्रचण्डभास्करो ज्ञानप्रदायको महेश्वरो

(मध्यमकालसाहित्यम्)

दीनावनोद्युक्तदिव्यतरो दिव्यौघादिसकलदेहधरो

मानसानन्दकरचतुरतरो मद्गुरुवरो मङ्गळं करोतु

चरणम्

मायामयविश्वाधिष्ठानो मात्मककादिमदानुष्ठानो

मालिनीमण्डलान्तविधानो मन्त्राद्यजपाहंसध्यानो

मायाकार्यकलनाहीनो मामकसहस्रकमलासीनो

माधुर्यगानामृतपानो माधवाद्यभयवरप्रदानो

मायाशबलितब्रह्मरूपो मारकोटिसुन्दरस्वरूपो

मतिमतां हृदयगोपुरदीपो मत्तशूरादिजयप्रतापो

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मायामाळवगौळा दिदेशमहीपतिपूजितपदप्रदेश
माधवाद्यमरबृन्दप्रकाशमहेशस्य महार्थोपदेशः



३७७ श्रीनीलोत्पलनायिके

श्रीनीलोत्पलनायिके

रागं: नारीरीतिगौळ (२०) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

श्रीनीलोत्पलनायिके जगदम्बिके
श्रीनगरनायिके मामव वरदायिके

अनुपल्लवि

दीनजनार्तिप्रभञ्जन रीतिगौरवे
देशिकप्रदर्शितचिद्रूपिणि नतभैरवे

(मध्यमकालसाहित्यम्)

आनन्दात्मानुभवे अद्रिराजसमुद्भवे
सूनशरारिवैभवे ज्ञानसुधारणवे शिवे

चरणम्

संकल्पविकल्पात्मकचित्तवृत्तिजाले
साधुजनाराधितसद्गुरुकटाक्षमूले
संकटहरधुरीणतर गुरुगुहानुकूले
समस्तविश्वोत्पत्तिस्थितिलयादिकाले

(मध्यमकालसाहित्यम्)

विटङ्कत्यागराजमोहितविचित्रलीले
शङ्करि कृपालवाले हाटकमयचेले

पङ्कजनयनविशाले पद्मरागमणिमाले
शङ्करसन्तुतबाले शारदे गानलोले



३७८ श्री पार्थसारथिना

श्री पार्थसारथिना

रागं: शुद्धधन्याशि (२२) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

श्री पार्थसारथिना पालितोऽस्म्यहं सदा

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

गोपस्त्रीमोहितवेणुगानेन श्रीरुक्मिणीमनोल्लासकरणेन

(मध्यमकालसाहित्यम्)

प्रपञ्चादिहरदाननिपुणवैकुण्ठस्थितेन

तुम्बुरुनारदनुतेन गुरुगुह संमोदितेन



३७९ श्रीपार्वतीपरमेश्वरौ

श्रीपार्वतीपरमेश्वरौ

रागं: बौळि (१५) ताळं: आदि

पल्लवि

श्रीपार्वतीपरमेश्वरौ वन्दे

(मध्यमकालसाहित्यम्)

चिद्धिम्बौ लीलाविग्रहौ ममाभीष्टसिद्धये

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

आपादमस्तकालङ्कारौ आदिमध्यान्तरहिताकारौ

सोपानमार्गमुख्याधारौ सुखप्रदौ गन्धरसाधरौ

(मध्यमकालसाहित्यम्)

लोपामुद्रेशार्चितचरणौ लोभमोहादिवारणकरणौ

पापापहपण्डिततर गुरुगुहकरणौ भयहरणौ भवतरणौ



३८० श्रीबालसुब्रह्मण्य

श्रीबालसुब्रह्मण्य

रागं: बिलहरि (२९) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

श्रीबालसुब्रह्मण्यागच्छाग्रगण्य श्रीचिदानन्दनाथ वरेण्य

अनुपल्लवि

आबालगोपालविदित दीनशरण्य आत्मप्रकाशलावण्यकारुण्य

चरणम्

सनकादिसन्नुत स्वामिनाथ स्वामिशैलस्थित सोमतात

कनकवल्लरीदेवसेनोपेत कैवल्यदातस्सकृद्विभातः^{१०५}

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वनजवदन पदपङ्केरुह वरदाश्रितकल्पमहीरुह

मनसिजजनकादि^{१०६}सेवित कुमार धीरतर हर गुरुगुह



^{१०५} विधातः

^{१०६} सनकादि

३८१ श्री भार्गवी

श्री भार्गवी

रागं: मङ्गळकैशिकी (१५) ताळं: चापु

पल्लवि

श्रीभार्गवी भद्रं मे दिशतु श्रीरङ्गधामेश्वरी

अनुपल्लवि

सौभाग्यलक्ष्मी सततं मामवतु

सकललोकजननी विष्णुमोहिनी

चरणम्

मदनगुरुमानिनी मम मनसि तिष्ठतु

मधुकरविजय मङ्गळकैशिका निवसतु

सदनमध्ये महालक्ष्मी सदा विहरतु

सामजहेमकुम्भस्नापिता विजयतु

(मध्यमकालसाहित्यम्)

पदनयनाननकरनलिनी परमपुरुषहरिप्रणयिनी

वदनकमल गुरुगुह धरणीश्वरनुतरङ्गनाथरमणी



३८२ श्रीमङ्गळाम्बिकाम्

श्रीमङ्गळाम्बिकाम्

रागं: घण्ट (२०) ताळं: झम्प

पल्लवि

श्रीमङ्गळाम्बिकां चिद्गगनचन्द्रिकां
चिन्तयेऽहं सदाशिवनायिकाम्

अनुपल्लवि

नामरूपात्मिकां नवरत्नमालिकां
हेमवर्णशुकां हिमशैलबालिकाम्

चरणम्

कनककलशसुशंख घण्टा दि -

पूजोपकरणामरुणकिरणकान्तियुतचरणां
मनुचन्द्रवैश्रवणमदनाद्युपासितां
महदादिकुम्भेशमानसोल्लासिताम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मननध्याननिरतमहापुरुष गुरुगुह विनुतां
विधिविहितां वीरादिसेवितां
वनजासनप्रभृतिवाञ्छितफलप्रदां
वनमालिसोदरीं वरत्रिपुरसुन्दरीम्



३८३ श्रीमङ्गळामिबिके

श्रीमङ्गळामिबिके

रागं: कल्याणि (६५) ताळं: अट

पल्लवि

श्री मङ्गळामिबिके श्रीवाञ्छीशनायिके
चिन्तितार्थदायिके श्रीशिवे संरक्ष मम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

सोमविडम्बनसुन्दरवदने सुरनरमुनिगणसुखकरनयने
कोमळतर गुरुगुह नुतचरणे कोटिसूर्यप्रकाशकोटीराद्याभरणे
श्यामळकोलवदनादिशक्तिसंयुतचक्रभरणे

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कामेश्वरि कचविजितघने कल्याणि चिदानन्दघने
कामकले कम्बुजयगळे करकमले सकलनिष्कले



३८४ श्रीमधुरापुरिविहारिणि

श्रीमधुरापुरिविहारिणि

रागं: बिलहरि (२९) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

श्रीमधुरापुरिविहारिणि श्रीराजमातङ्गि मां पाहि

अनुपल्लवि

पामरजनपालिनि कामदहनमोहिनि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नामरूपविमर्शिनि नटेश्वरि जगज्जननि

चरणम्

पाण्ड्यराजपूजितब्जपदयुगळे

ओड्याणपीठस्थितसकलकळे

(मध्यमकालसाहित्यम्)

पाटलीकुसुमप्रिये पद्मरागसमप्रभे

सोमसुन्दरेश्वरप्रिये गुरुगुहसमुद्भवे



३८५ श्रीमधुराम्बिकया

श्रीमधुराम्बिकया

रागं: अठाण (२८) ताळं: चापु

पल्लवि

श्रीमधुराम्बिकया रक्षितोऽहं सदानन्दकर्या

अनुपल्लवि

सोमसुन्दरेश्वरमनोल्लासकर्या

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कामसञ्जीवनौषधकर्या सामगानसुखकर्या

चरणम्

नामरूपविवर्जितया नामपारायणप्रियया

(मध्यमकालसाहित्यम्)

समयाचारप्रवृत्तया शङ्करगुरुगुहमोदितया



३८६ श्रीमधुराम्बिके

श्रीमधुराम्बिके

रागं: कल्याणि (६५) ताळं: खण्ड चापु

पल्लवि

श्रीमधुराम्बिके श्रीशिवेऽवाव

अनुपल्लवि

सोमसुन्दरेश्वरहृदयविलासिनि

कामगिरिपीठादिवासिनि कल्याणि

चरणम्

कादिहादिसादिमन्त्ररूपिणि कौळिनि

कैवल्यदायिनि गुरुगुहजननि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कदम्बकाननविलासिनि कात्यायनि

मधुरवाणि शुकपाणि अळिवेणि



३८७ श्रीमहागणपतिरवतु माम्

श्रीमहागणपतिरवतु माम्

रागं: गौळ (१५) ताळं: तिस्र त्रिपुट

पल्लवि

श्रीमहागणपतिरवतु मां
सिद्धिविनायको मातङ्गमुखः श्री

अनुपल्लवि

कामजनकविधीन्द्रसन्नुतकमलालयतटनिवासो
(मध्यमकालसाहित्यम्)

कोमळतरपल्लवपदकर गुरुगुहाग्रजः शिवात्मजः

चरणम्

सुवर्णाकर्षणविघ्नराजो पादाम्बुजो
गौरवर्णवसनधरो फालचन्द्रो
नरादिविनुतलम्बोदरो कुवलयस्वविषाणपाशाङ्कुश-
मोदकप्रकाशकरो भवजलधिनावो
मूलप्रकृतिस्वभावस्सुखतरो
(मध्यमकालसाहित्यम्)

रविसहस्रसन्निभदेहो कविजननुत मूषिकवाहो
अवनतदेवतासमूहो अविनाशिकैवल्यगेहो श्री



३८८ श्रीमहाराज्ञि

श्रीमहाराज्ञि

रागं: कर्णाटक कापि (२२) ताळं: खण्ड एकम्

पल्लवि

श्रीमहाराज्ञि शिवगुरुगुहन्ताये मामव

अनुपल्लवि

कामेश्वरवामाङ्गस्ते करुणानिधे

पामरजनुलनु पालनं चेय्किर ललिते

चरणम्

विधविधशक्तिकळुटन् वेडलियुद्धरङ्गमुलो

प्रदमुसेयु दैत्यादिहत निपुणधीरे



३८९ श्रीमातः शिववामाङ्के

श्रीमातः शिववामाङ्के

रागं: बेगड (२९) ताळं: आदि

पल्लवि

श्रीमातः शिववामाङ्के श्रीचक्ररूपताटङ्के मामव

अनुपल्लवि

श्रीमहाराज्ञि वदनशशाङ्के चित्रप्रतिबिम्बे गळजितशङ्के

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मामव वरप्रदायिके कुसुमसायके अखिलाण्डनयिके

चरणम्

रमाभारतीरतिशचीशाराधितपदयुगळे बगळे

ममाभीष्टफलदानचतुरकोमळश्यामळे सकलनिष्कळे

प्रमातृप्रमाणप्रमेयप्रपञ्चप्रकाशकरतरविरळे

समानाधिकरहिते स्वपूजितसाधुजनानामतिसरळे

(मध्यमकालसाहित्यम्)

यमाद्यष्टाङ्गयोगनिरतसंयमिध्येयहृत्कमले विमले

हिमाद्रिजामातृजम्बूपतिसहिते कुशले गुरुगृहवत्सले श्री



३१० श्रीमातृभूतम्

श्रीमातृभूतम्

रागं: कन्नड (२८) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

श्रीमातृभूतं त्रिशिरगिरिनाथं हृदि चिन्तये

सुगन्धिकुन्तळाम्बासमेतम्

अनुपल्लवि

सोमसखं नतशुकसनकं नळ कामादिविजयकमनीयाङ्गं

सोमं शिरोधृतसूर्यागङ्गं^{१०७}

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कोमलकरधृतकुरङ्गं

गुरुगुहान्तरङ्गलिङ्गम्

चरणम्

वासवादिदेववन्दितचरणं वैश्यजातिस्त्रीवेषधरणं

वासुदेवमहितं भवतरणं वासनादिरहितान्तःकरणम्

दरहासत्रिपुरादिहरणं वासुकिप्रमुखाभरणं

भासमाननवावरणं दासजनसन्तोषकरणम् सु-

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वासितनवजवन्तिपुष्पविकासप्रियहृदयं सदयं

^{१०७}सूर्यागङ्गं

मासवर्षपक्षोत्सवविभवम् सदाशिवं परमशिवम्



३९१ श्रीमीनाम्बिकायाः

श्रीमीनाम्बिकायाः

रागं: देवगान्धारि (२९) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

श्रीमीनाम्बिकायाः परं नहि रे रे चित्त

नित्यकामेश्वर्याराधितपरदेव्याः

अनुपल्लवि

सोमसुन्दरेश्वरमोहिन्याः

मलयध्वजपाण्ड्यराजप्रणतशरण्यायाः

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नामरूपपारायणप्रियराजयोगिन्याः

चरणम्

नादबिन्दुकलास्पदरूपिण्याः नवरत्नवीणावादिन्याः

(मध्यमकालसाहित्यम्)

श्री देवगान्धार पूजिताम्बुजासिन्याः

कदम्बवनविलासिन्याः गुरुगुह जनन्याः



३१२ श्रीमीनाक्षि गौरि

श्रीमीनाक्षि गौरि

रागं: गौरि (१५) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

श्रीमीनाक्षि गौरि राजश्यामळे

आश्रितरक्षणधुरीणतरलघुश्यामळे सकले

शृङ्गारकामकले श्रियं देहि मां पाहि

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

भूमिजलाग्न्यनिलगगनभूतपञ्चकाधारे

स्वामिनि सोमसुन्दरेश्वरमोहिताकारे^{१०८}

कामितफलप्रदायककदम्बविपिनागारे

भूमिपालनुत गुरुगुहपूजितमुक्ताहारे

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कोमलतरपदयुगले गुच्छजयस्तनयुगले

तामरसचरणयुगले तत्त्वंपदार्थयुगले



३९३ श्रीरङ्गनाथाय

श्रीरङ्गनाथाय

रागं: धन्याशि (२०) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

श्रीरङ्गनाथाय नमस्ते नमस्ते

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

श्रीरङ्गपुरिविलसितश्रीरमान्तरङ्गाय

(मध्यमकालसाहित्यम्)

श्रीरङ्गनायकीसमेताय गुरुगुहनुताय



३१४ श्री रमासरस्वती

श्री रमासरस्वती

रागं: नासामणि (७०) ताळं: आदि

पल्लवि

श्रीरमासरस्वतीसेवितां श्री ललिताम्बां भावये

अनुपल्लवि

तारसदृश नासामणी विराजितां संपत्करीसेवितां

(मध्यमकालसाहित्यम्)

तारामन्त्रिण्यादिपरिवृतां धीरगुगुहविनतां शिवयुताम्



३१५ श्रीराजगोपाल

श्रीराजगोपाल

रागं: सावेरि (१५) ताळं: आदि

पल्लवि

श्रीराजगोपाल बाल शृङ्गारलील श्रितजनपाल

अनुपल्लवि

धीराग्रगण्य दीनशरण्य चारुचम्पकारण्य दक्षिण-

(मध्यमकालसाहित्यम्)

द्वारकापुरिनिलय विशिष्टाद्वैताद्वैतालय मां पालय

चरणम्

स्मेरानन सेवकचतुरानन नारायण

तारकदिव्यनामपारायणकृतनारदादिनुत सारसपद

सदामोद नारीवेषधर वामभाग मुरारे श्रीविद्याराज हरे

श्रीरुक्मिणीसत्यभामश्रितपार्श्वयुगळ कम्बुजयगल

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नीरसंपूर्णहरिद्रानदीतीरमहोत्सववैभव माधव मारजनक

नतशुकसनकजनक वीर गुरुगुह महित रमासहित



३९६ श्रीराजराजेश्वरि त्रिपुरसुन्दरि

श्रीराजराजेश्वरि त्रिपुरसुन्दरि

रागं: पूर्णचन्द्रिक (२९) ताळं: आदि

पल्लवि

श्री राजराजेश्वरि त्रिपुरसुन्दरि शिवे पाहि मां वरदे

अनुपल्लवि

नीरजासनादिपूजितपरे निखिलसंशयहरणनिपुणतरे

चरणम्

शौरिविरिञ्चादिविनुते सकळे शङ्करप्राणवल्लभे कमले

निरतिशयसुखप्रदे निष्कळे पूर्णचन्द्रिका शीतले विमले

(मध्यमकालसाहित्यम्)

परमाद्वैतबोधिते ललिते प्रपञ्चातीतगुरुगुह महिते

सुरुचिरनवरत्नपीठस्थे सुखतरप्रवृत्ते सुमनस्थे



३९७ श्रीराजराजेश्वरी श्रीरमामनोहरी

श्रीराजराजेश्वरी श्रीरमामनोहरी

रागं: रमामनोहरि (५२) ताळं: आदि

पल्लवि

श्री राजराजेश्वरी श्रीरमामनोहरी

चरणम्

वाराही वैष्णवी मातङ्गी वामदेवुनि मोहनाङ्गी

धीरुडैन गुरुगुह दासुडनि गारविच्चि कामितार्थमिच्चि

सारसाक्षी श्रीबृहदम्बा सन्नृतिञ्चेद सारे सारेकुनु



३१८ श्रीराजराजेश्वरीम्

श्रीराजराजेश्वरीम्

रागं: मध्यमावति (२२) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

श्रीराजराजेश्वरीं महात्रिपुरसुन्दरीं
ललिताभट्टारिकां भजेऽहं भजे

(मध्यमकालसाहित्यम्)

विदेहकैवल्यं आशु एहि देहि मां पाहि

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

आराधयामि सततं गं गणपतिं सौ: शरवणं

अं आं सौ: त्रैलोक्यं ऐं क्लीं सौ: सर्वाशां

ह्रीं क्लीं सौ: संक्षोभणं ह्रैं ह्स्क्लीं ह्सौ: सौभाग्यं

ह्र्सें ह्स्क्लीं ह्सौ: सर्वार्थं ह्रीं क्लीं ब्लें सर्वरक्षां

ह्रीं श्रीं सौ: रोगहरं ह्र्सें ह्स्क्लीं ह्र्स्त्रौ: सर्वसिद्धिं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं सकल ह्रीं श्रीं सर्वानन्दं

श्रीनाथानन्दगुरुगुहपादुकां पूजये सदा

चिदानदनाथोऽहं कामेश्वराङ्गनिलयां

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वैश्रवणविनुतधनिनीं गणपतिगुरुगुहजननीं

निरतिशयशुभमङ्गलां मङ्गलां जय मङ्गलां श्री



३१९ श्रीरामचन्द्रो

श्रीरामचन्द्रो

रागं: श्रीरञ्जनि (२२) ताळं: चापु

पल्लवि

श्रीरामचन्द्रो रक्षतु मां राक्षसादिहरो रघुवरः

अनुपल्लवि

भरताग्रजः कौशिकयागरक्षकः ताटकान्तकः

चरणम्

मिथिलानगरप्रवेशमहेश्वरधनुर्भेदको

सीताकल्याणमहोत्सववैभवयुतचित्रवेषको

(मध्यमकालसाहित्यम्)

माधुर्यगानामृतपानप्रिय गुरुगुह विश्वासो

महादेवीभक्तपरशुरामगर्वहरोल्लासः



४०० श्रीरामं रविकुलाब्धिसोमम्

श्रीरामं रविकुलाब्धिसोमम्

रागं: नारायणगौळ (२८) ताळं: आदि

पल्लवि

श्रीरामं रविकुलाब्धिसोमं श्रितकल्पभूरुहं भजेऽहम्

अनुपल्लवि

धीराग्रगण्यं वरेण्यं दीनजनाधारं रघुवीरं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नारदादिसन्नुतरामायणपारायणमुदित नारायणम्

चरणम्

दशरथात्मजं लक्ष्मणाग्रजं दानवकुलभीकरं श्रीकरं

कुशलवतातं सीतोपेतं कुवलयनयनं सुदर्भशयनम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सुशरचापपाणिं सुधीमणिं सूनृतभाषं गुरुगुह तोषं

दशवदनभञ्जनं निरञ्जनं दाननिधिं दयारसजलनिधिम्



४०१ श्रीलक्ष्मीवराहम्

श्रीलक्ष्मीवराहम्

रागः आभोगि (२२) ताळः आदि

पल्लवि

श्रीलक्ष्मीवराहं भजेऽहं श्रीलक्ष्मीसहितं श्रितजनशुभप्रदम्

अनुपल्लवि

नीलमेघजयश्यामळगात्रं नीलाभूदेवीस्तुतिपात्रं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नीलकण्ठशिवगुरुगुहमित्रं निखिल^{१०९}भक्तजनभयार्तिदात्रम्

चरणम्

मङ्गळालयाभोगिनृतपदं पुङ्गवबुधजननतं वेदनुतं

शङ्करप्रियकरं कुबेरप्रतिष्ठितं शङ्खचक्रधरं कृपाकरम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

पङ्कजासनप्रमुखसेवितं पङ्कजमुखभार्गवीभावितं

भङ्गहरताम्रपर्णीतीरस्थं सङ्कटहर^{११०}सदानन्दसहितम्



^{१०९}अखिल

^{११०}सङ्गहर

४०२ श्रीवटुकनाथ

श्रीवटुकनाथ

रागं: देवक्रिय (२८) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

श्रीवटुकनाथ शिवसंजात जीवदयाकर उमरुभास्वर^{१११} देव

अनुपल्लवि

देव देवक्रिया शक्तिसहित भक्तविहित

भूवलयरक्षणविचक्षण भूतवेताळा^{११२}दिरक्षण

चरणम्

कालकालभैरव ब्रह्मकपालशूलधर

फालनयन क्षेत्रपाल सद्गुणशील भयंकर

ज्वालामुखहालाहलमूलाशनकोलाहल

नीलकण्ठ सुबाल गुरुगुह लोल लीलाजाल पालय



^{१११}समरभास्कर

^{११२}भेताल

४०३ श्री वरलक्ष्मि नमस्तुभ्यम्

श्री वरलक्ष्मि नमस्तुभ्यम्

रागं: श्री (२२) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

श्री वरलक्ष्मि नमस्तुभ्यं वसुप्रदे
श्रीसारसपदे रसपदे सपदे पदे पदे

अनुपल्लवि

भावजजनकप्राणवल्लभे सुवर्णाभे
भानुकोटिसमानप्रभे भक्तसुलभे

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सेवकजनपालिन्यै श्रितपङ्कजमालिन्यै
केवलगुणशालिन्यै केशवहृत्खेलिन्यै

चरणम्

श्रावणपौर्णमीपूर्वस्थशुक्रवारे
चारुमतीप्रभृतिभिः पूजिताकारे
देवादि गुरुगुह समर्पितमणिमयहारे
दीनजनसंरक्षणनिपुणकनकधारे

(मध्यमकालसाहित्यम्)

भावनाभेदचतुरे भारतीसन्नुतवरे

कैवल्यवितरणपरे काङ्क्षितफलप्रदकरे



४०४ श्रीवल्मीकलिङ्गम्

श्रीवल्मीकलिङ्गम्

रागं: काम्भोजि (२८) ताळं: अट

पल्लवि

श्रीवल्मीकलिङ्गं चिन्तये शिवार्धाङ्गं चिन्तये

अनुपल्लवि

श्रीवरदायकं श्रीपुरनायकं

देवतादिविनुतदिव्यवीथीविटङ्गम्

चरणम्

कुरुक्षेत्रविरिञ्चियज्ञोद्भवकार्मुकधरमुररिपु-

हतहरिहयाद्यखिलासुर^{११३}भयोपद्रवहरणचणतरं

शङ्करं सोमकुलाम्बिकाम्भोजमधुकरम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

गुरुगुहजनकं नतजनकं कुबेरसखं चर्माशुकं

सुरुचिरशिरोधृतशशाङ्कं स्वयंप्रकाशकं तारकम्



^{११३}हतहैहयाद्यखिलासुर

४०५ श्रीवाञ्छनाथम्

श्रीवाञ्छनाथम्

रागं: सुरटि (२८) ताळं: अदि

पल्लवि

श्रीवाञ्छनाथं भजेऽहं श्रीमङ्गळाम्बिकासमेतम्

अनुपल्लवि

श्रीवाणीशादिपूजितपदं श्रीकरकाश्याधिकफलप्रदं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

जीवेशजगद्भेदापहं जीवन्मुक्तिविदेहमुक्तिदम्

चरणम्

शीतकिरणरविपावकनेत्रं श्रीगन्धारण्यक्षेत्रं

विभूतिरुद्राक्षाभरणगात्रं भूकैलासस्थितिपात्रम्

निर्धूतपापासीनभैरवं धूर्जटिमादित्यवारोत्सवं

वीतिहोत्रमृगधरं परशिवं विघ्नेश्वरगुरुगुहसमुद्भवम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

भूतपतिं भवसागरनावं भूसुरटीकादीडितभावं

पातकहरणनिपुणमुनितीर्थप्रभावं प्रकृतिस्वभावम्



४०६ श्रीविद्याराजगोपालम्

श्रीविद्याराजगोपालम्

रागं: जगन्मोहनम् (३८) ताळं: तिश्च एकम्

पल्लवि

श्रीविद्याराजगोपालं भजेऽहं
श्रीरुक्मिणीसत्यभामासहितदिव्यदेहम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

जीवेश जगन्मोहिनी रूपं नतगोपं
श्रितमन्दारं^{११४}

धात्रंशस्वरूपावतारं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

गोविन्दमिन्दुवदनं गुरुगुहं नुतमृदुगदनं
देवकीनन्दनं वसुदेवहृदयचन्दनम्



४०७ श्री विश्वनथं भजेऽहम्

श्री विश्वनथं भजेऽहम्

चतुर्दश रागमालिका ताळः आदि

पल्लवि

श्री रागः

श्री विश्वनाथं भजेऽहं चतुर्दशभुवनरूप-

रागमालिकाभरणधरणान्तःकरणम्

अरभि रागः

श्रितजनसंसारभीत्यापहं आध्यात्मिकादि-

तापत्रय मनोभीत्यापहम्

अनुपल्लवि

गौरि रागः

श्री विशालाक्षी गौरीशं सकलनिष्कळरूप-

सच्चिदानन्दमयगौरीशम्

नाट रागः

चित्रविश्वनाटकप्रकाशं जगत्प्रकाशक

भास्करशशाङ्कोटिकोटिप्रकाशम्

गौळ रागः

गोविन्दादिविनुत गौळाङ्गं क्षीरकुन्देन्दुकर्पूरादि-
विजयभसितोद्धूळितगौळाङ्गम्

मोहन रागः

गुरुगुह सं मोहन करलिङ्गं पञ्चीकृतपञ्चमहाभूत-
प्रपञ्चादिमोहनकरलिङ्गम्

विलोमम्

मोहन रागः

विरिञ्चिविष्णुरुद्रमूर्तिमयं

गौळ रागः

विषयपञ्चकरहितमभयं

नाट रागः

निरतिशयसुखदनिपुणतरं

गौरि रागः

निगमसारमीश्वरममरं

आरभि रागः

स्मरहरं परमशिवमतुलं

श्री रागः

सरससदयहृदयनिलयमनिशं

श्री विश्वनाथं भजेऽहम्

चरणम्

साम रागः

सदाशिवं सामगानविनुतं प्रकृत्यादिसप्तरूप-
सामगानविनुतम्

ललित रागः

सन्मात्रं ललितहृदयविदितं कामक्रोधादिरहित-
ललितहृदयविदितम्

भैरव रागः

चिदाकाशभैरवं पुरहरं विधिकपाल-
त्रिशूलधरभैरवं पुरहरम्

सारङ्ग रागः

चित्सभेश्वरं सारङ्गधरं दारुकावनतपोधन-
कल्पितसारङ्गधरम्

शङ्कराभरण रागः

सदाश्रयामि शङ्कराभरणं चिन्तितार्थवितरण-
धुरीणतरमाणिक्यमयशङ्कराभरणम्

काम्भोजि रागः

सद्गतिदाय काम्भोजचरणं धर्मार्थादि^{११५}निखिल-
पुरुषार्थप्रदसमर्थतराम्भोजचरणम्

देवक्रिय रागः

^{११५}धर्मादि

वदान्य देवक्रिया खेलनं सृष्टिस्थितिविलय-
तिरोधानानुग्रहकारणक्रियाखेलनम्

भूपाळ रागः

वैद्यलिङ्ग भूपाल पालनं श्रीपुरनिकृतिभाग-
गर्ततीरस्थिरतरभूपालपालनम्

विलोमम्

भूपाळ रागः

गुरुगणेशसुरनरेशमनिशं

देवक्रिय रागः

कुजबुधादिग्रहगतिविहितं

काम्भोजि रागः

वरदमनलरविशशिनयनं

शङ्कराभरण रागः

वनजचन्द्रसन्निभवदनं

सारङ्ग रागः

परमहम्सानन्दनर्तनं

भैरव रागः

पतितपावनकरणं मधरणं

ललिता रागः

परतरं परममनोलयजयं

साम रागः

परादिवाक्प्रकाशानन्दमयं

मोहन रागः

विरिञ्चिविष्णुरुद्रमूर्तिमयं

गौळ रागः

विषयपञ्चकरहितमभयं

नाट रागः

निरतिशयसुखदनिपुणतरं

गौरि रागः

निगमसारमीश्वरममरं

आरभि रागः

स्मरहरं परमशिवमतुलं

श्री रागः

सरससदयहृदयनिलयमनिशं

श्री विश्वनाथं भजेऽहम्



४०८ श्रीवेङ्कटगिरीशम्

श्रीवेङ्कटगिरीशम्

रागं: सुरटि (२८) ताळं: आदि

पल्लवि

श्रीवेङ्कटगिरीशमालोकये विनायकतुरगारूढम्

अनुपल्लवि

देवेशपूजितभगवन्तं दिनकरकोटिप्रकाशवन्तं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

गोविन्दं नतभूसुरवृन्दं गुरुगुहानन्दं मुकुन्दम्

चरणम्

अलमेलुमङ्गासमेतं अनन्तपद्मनाभमतीतं

कलियुगप्रत्यक्षविभातं कञ्जजादिदेवोपेतम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

जलधरसन्निभसुन्दरगात्रं जलरुहमित्राब्जशत्रुनेत्रं

कलुषापहगोकर्णक्षेत्रं करुणारसपात्रं चिन्मात्रम्



४०९ श्रीवेणुगोपाल

श्रीवेणुगोपाल

रागं: कुरञ्जि (२९) ताळं: झम्प

पल्लवि

श्रीवेणुगोपाल श्रीरुक्मिणीलोल
देवनायक श्रियं देहि देहि मधुमुरहर

अनुपल्लवि

देवकीसुकुमार दीनजनमन्दार
गोवर्धनोद्धार गोपयुवतीजार

चरणम्

गोकुलाम्बुधिसोम गोविन्द नतभौम
श्री कुरञ्जि तकाम श्रितसत्यभाम
कोकनदपदसोम गुरुगुह हित श्याम
श्रीकरतपहोम श्रीजयन्तीनाम

(मध्यमकालसाहित्यम्)

प्राकट्यरणभीम पालितार्जुनभीम
पाकरिपुनुतनाम^{११६} भक्तयोगक्षेम



४१० श्री वेणुगोपालम्

श्री वेणुगोपालम्

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

श्री वेणुगोपालं भज मानस सततं
देवेन्द्रपूजितं दिव्यरत्नभूषितम्

अनुपल्लवि

वेदागमघोषितं विधिगुरुगुहमहितं
नन्दगोपकुमारं नवनीतचोरम्

चरणम्

गोवर्धनगिरिधरं गोपस्त्रीजारं
मन्दहासवदनं मुकुन्दं मधुसूदनं
देवकीनन्दनं मृदुचरणं नीरजनयनम्



४११ श्रीवैद्यनाथम्

श्रीवैद्यनाथम्

रागं: अठाण (२८) ताळं: आदि

पल्लवि

श्रीवैद्यनाथं भजामि श्रितजनवन्दितबालाम्बिकेशम्

अनुपल्लवि

धवळितवैद्यनाथक्षेत्रं दयासुधासागरं त्रिनेत्रं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

अविनाशकैवल्यादिप्रदं आनन्दकरमूलादिप्रदम्

चरणम्

देवराजादिपूजितपदं दिव्याम्बरधरगुरुगुहमुदं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कविजनादिनुतसोमास्कन्दं कमनीयनादबिन्दुकलास्पदम्



४१२ श्री शुक्रभगवन्तम्

श्री शुक्रभगवन्तम्

रागं: परजु (१५) ताळं: अट

पल्लवि

श्रीशुक्रभगवन्तं चिन्तयामि सन्ततं सकलतत्त्वज्ञम्

अनुपल्लवि

हे शुक्रभगवन् मां आशु पालय वृषतुलाधीश दैत्यहितोपदेश

(मध्यमकालसाहित्यम्)

केशवकटाक्षैकनेत्रं किरीटधरं धवलगात्रम्

चरणम्

विंशतिवत्सरोडुदशाविभागमष्टवर्गं

कविं कळत्रकारकं रविनिर्जरगुरुवैरिणं

नवांशहोराद्रेक्काणादिवर्गोत्तमावसरसमये

वक्रोच्चनीचस्वक्षेत्रवरकेन्द्रमूलत्रिकोणे

(मध्यमकालसाहित्यम्)

त्रिंशांशषष्ठ्यांशैरावतांशपारिजातांशगोपुरांश-

राजयोगकारकं राज्यप्रदं गुरुगुहमुदम्



४१३ श्री शूलिनीम्

श्री शूलिनीम्

रागं: शैलदेसाक्षि (३५) ताळं: आदि

पल्लवि

श्री शूलिनीं श्रितपालिनीं जीवेश्वर्यैक्यशालिनीं स्मर

(मध्यमकालसाहित्यम्)

चित्त ब्रह्मकपालिनीं शिवचिन्मालिनीं भवखेलिनीम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

पाशिनीं शरभेश्वरहृदयावेशिनीं अज्ञानध्वान्तविनाशिनीं

रविचन्द्रतेजःप्रकाशिनीं विन्ध्यनिवासिनीम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

ईश **गुरुगुह** ^{११७} विश्वासिनीं ईश्वरीं भक्तमनोल्लासिनीं

श्रीशनुतां भवभयध्वंसिनीं सिंहवाहिनीं जगन्मोहिनीम्



४१४ श्रीसत्यनारायणम्

श्रीसत्यनारायणम्

रागं: शिवपन्तुवराळि (४५) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

श्रीसत्यनारायणमुपास्महे नित्यं
सत्यज्ञानानन्दमयं सर्वं विष्णुमयम्

अनुपल्लवि

वासवादिपूजितं वरमुनिगणभावितं
दासजनपरिपालितं भासमानबदरीस्थितम्

चरणम्

वैश्यजातिकारणं वटुवेषधारिणं
कलियुगप्रसन्नं वसुप्रदाननिपुणम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मत्स्यकूर्मवराहादिदशावतारप्रभावं
शङ्खचक्राब्जहस्तं गुरुगुहनुतप्रसिद्धम्



४१५ श्रीसरस्वति नमोऽस्तु ते

श्रीसरस्वति नमोऽस्तु ते

रागं: आरभि (२९) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

श्रीसरस्वति नमोऽस्तु ते वरदे परदेवते

(मध्यमकालसाहित्यम्)

श्रीपतिगौरीपतिगुरुगुहविनुते विधियुवते

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

वासनात्रयविवर्जितवरमुनिभावितमूर्ते

वासवाद्यखिलनिर्जरवरवितरणबहुकीर्ते दर-

(मध्यमकालसाहित्यम्)

हासयुतमुखाम्बुरुहे अद्भुतचरणाम्बुरुहे

संसारभित्यापहे सकलमन्त्राक्षरगुहे



४१६ श्री सरस्वति हिते

श्री सरस्वति हिते

रागं: माञ्जि (२०) ताळं: आदि

पल्लवि

श्री सरस्वति हिते शिवे चिदानन्दे शिवसहिते

अनुपल्लवि

वासवादिमहिते वासनादिरहिते

चरणम्

कामकोटिनिलये करधृतमणिवलये

कोमळतरहृदये गुरुगुहो दये मामव सदये



४१७ श्री साम्बशिवम्

श्री साम्बशिवम्

रागं: बिलहरि (२९) ताळं: आदि

पल्लवि

श्री साम्बशिवं चिन्तयाम्यहं गणेशवरगुरुगुहादिवन्दित

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

भूसुरादिपूजितमृदुचरणं भागवतप्रमुखादिरक्षणं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वसुप्रदं वरदाभयनिपुणं वासुदेवकुबेरादिभरणम्



४१८ श्रीसुगन्धिकुन्तलाम्बिके

श्रीसुगन्धिकुन्तलाम्बिके

रागः कुन्तलम् (६१) ताळः रूपकम्

पल्लवि

श्रीसुगन्धिकुन्तलाम्बिके जगदम्बिके
हृदि चिन्तयेऽहमनिशं त्वाम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

भूसुराद्यखिलजनसंपूजितपङ्कजचरणे^{११८}

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वासुदेवश्रीगुरुगुहवरदराजराजेश्वरि
वासुकिकाकोटकादिवलयमातृभूतेश्वरि



४१९ श्रीसुन्दरराजम्

श्रीसुन्दरराजम्

रागं: काशीरामक्रिय (५१) ताळं: आदि

पल्लवि

श्रीसुन्दरराजं भजेऽहं श्रितकल्पमहीरुहं मुखाम्भोरुहम्

अनुपल्लवि

भूसुरादिनिखिलजनसेवितं बुद्धशुद्धसत्वहृद्भावितं^{११९}

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वासुदेवमानन्दस्फूर्तिं वाञ्छितार्थफल^{१२०}दायकबहुकीर्तिम्

चरणम्

सोमास्कन्द^{१२१}विमानस्थं मधुसूदनं वृषभाचलसदनं

कामजनकमत्यङ्गतमण्डूकानामागम^{१२२}महोत्सवविभवम्

कामितफलदायकं नूपुरगङ्गातीर्थप्रभावमाधवं

श्यामं जारचोरशिखामणिं शङ्खचक्रगदाखड्गपाणिम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सोमसूर्यनेत्रं शुभगात्रं सुन्दर^{गुरुगुह}सन्नुतिपात्रम्

पामरत्ववारण^{१२३}सुचरित्रं पद्मनाभमिन्दिराकळत्रम्



^{११९}हृत्भावितं, कृद्भावितं

^{१२०}वाञ्छित्फल

^{१२१}सोमच्छन्द

^{१२२}मण्डूकागमन

^{१२३}पामरत्वामारण

४२० श्रीसुब्रह्मण्याय

श्रीसुब्रह्मण्याय

रागं: काम्भोजि (२८) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

श्रीसुब्रह्मण्याय नमस्ते नमस्ते
मनसिजकोटिकोटिलावण्याय दीनशरण्याय

अनुपल्लवि

भूसुरादिसमस्तजनपूजिताब्जचरणाय
वासुकितक्षकादिसर्पस्वरूपधरणाय
वासवादिसकलदेववन्दिताय वरेण्याय
दासजनाभीष्टप्रददक्षतराग्रण्याय

चरणम्

तारकसिंहमुखशूरपद्मासुरसंहर्त्रे
तापत्रयहरणनिपुणतत्वोपदेशकर्त्रे
वीरनुत गुरुगुहा याज्ञानध्वान्तसवित्रे
विजयवल्लरीभर्त्रे शक्त्यायुधधर्त्रे

(मध्यमकालसाहित्यम्)

धीराय नतविधात्रे देवराजजामात्रे
भूरादिभुवनभोक्त्रे भोगमोक्षप्रदात्रे



४२१ श्रीसुब्रह्मण्यो माम्

श्रीसुब्रह्मण्यो माम्

रागं: तोडि (८) ताळं: आदि

पल्लवि

श्रीसुब्रह्मण्यो माम् रक्षतु षण्मुखावतारः शक्तिरूपः

अनुपल्लवि

भासमानवल्लीदेवसेनो भारतीशादितत्वबोधन्^{१२४}

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वासवादिवन्दितशुभचरणो पत्रविभूतिप्रदाननिपुणः

चरणम्

शतकोटिभास्करशोभाकरः शिष्टशितिकण्ठात्मजशिवंकरः

प्रतापतारकादिहतधीरः प्रबलगणेशानुजषडक्षरः

(मध्यमकालसाहित्यम्)

शतायुःप्रदभक्तमन्दारः शङ्काभिषेकाद्युपचारः

क्षितीशपूजितदिव्याम्बरः नववीरानन्दवरगुरुगुहः



४२२ श्री स्वामिनाथाय

श्री स्वामिनाथाय

रागं: खमास् (२८) ताळं: खण्ड चापु

पल्लवि

श्री स्वामिनाथाय नमस्ते नमस्ते

अनुपल्लवि

शाश्वतशिवसुताय सर्वदेवसमूहाय १२५

स्वामिशैलस्थिताय वरदाय

चरणम्

गजाम्बारमणाय गणपतिसोदराय

गुणत्रयातीताय गुह्याकाराय

(मध्यमकालसाहित्यम्)

अजेन्द्रपूजिताय आश्रितफलप्रदाय

वरशिखिवाहनाय गुरुगुह स्वरूपाय



४२३ श्वेतगणपतिम्

श्वेतगणपतिम्

रागं: रागचूडामणि (३२) ताळं: त्रिपुट

पल्लवि

श्वेतगणपतिं वन्दे वामदेवप्रतिपाद्यमनाद्यम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

भूतगणादिसंसेवितं बुद्धगुरुगुहसंभावितं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मातङ्गमुखं वल्लभासमेतं^{१२६} वि रागचूडामणिम्



४२४ श्वेतारण्येश्वरम्

श्वेतारण्येश्वरम्

रागं: आरभि (२९) ताळं: आदि

पल्लवि

श्वेतारण्येश्वरं भजेऽहं सदा ब्रह्मविद्यानायकीसहितम्

अनुपल्लवि

वेदागमविनुतवैभवं विधिगुरुगुहसन्नुतप्रभावम्

चरणम्

श्वेतारण्यक्षेत्रविलसितं श्वेताम्बरादिधरं सुरनतं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

भूतादिसेवितं शङ्करं शशिधरं भिक्षाटनवेषधरम्



४२५ षडानने

षडानने

रागं: खमास् (२८) ताळं: आदि

पल्लवि

षडानने सकलं अर्पयामि सदा त्वत्पादभक्तिं यामि

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

षडाधारादिशक्त्यात्मके षट्त्रिंशत्तत्त्वकलात्मके

षडङ्गश्रुतिविचित्रात्मके षट्कोणमध्यस्थितात्मके

(मध्यमकालसाहित्यम्)

ईद्व्यमानारिनाशात्मके ईश्वरादिनुत गुरुगुहात्मके

दुण्डिगणेशानन्दात्मके डमरुशूलादिधरकरात्मके



४२६ सकलसुरविनुत

सकलसुरविनुत

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: चतुरश्र एकम्

नोटुस्वर साहित्यम्

सकलसुरविनुत शंभो स्वामिन्
विकटगुरुगुह विजय त्रिपुरहर
एकाम्रपते करुणामूर्ते एकानेकविभूते
एकान्तहृदय एकभोगदायकानन्दकर विभो



४२७ सच्चिदानन्दमय

सच्चिदानन्दमय

रागं: कुम्बिनि (४१) ताळं: आदि

पल्लवि

सच्चिदानन्दमयविजृम्भिणीं

स्मराम्यहं स्तनकनककुम्भिनीम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

मच्चित्ताम्भोरुहविहारिणीं मणिहारिणीं बृहन्नायकीं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

विचित्रात्मकजगद्व्यापिनीं श्रीगुरुगुहचित्तस्वरूपिणीम्



४२८ सदाचलेश्वरम्

सदाचलेश्वरम्

रागं: भूपाळम् (९) ताळं: आदि

पल्लवि

सदाचलेश्वरं भावयेऽहं चमत्कारपुरगेहं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

गिरिजामोहम्

अनुपल्लवि

सदाश्रितकल्पवृक्षसमूहं शरणागतदेवतासमूहं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

उदाज्यकृतनामधेयवाहं चिदानन्दामृतप्रवाहम्

चरणम्

चमत्कार भूपालादिप्रसादकरणनिपुणं^{१२७} महालिङ्गं

छायारहितदीपप्रकाशगर्भगृहमध्यरङ्गम्

समस्तदुःखादिहेतुभूतसंसारसागरभयभङ्गं

शमदमोपवृत्त्यादि^{१२८} संयुक्तसाधुजनहृदयसरसिजभृङ्गम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कमलविजयकरविधृतकुरङ्गं करुणारससुधारणवतरङ्गं

^{१२७} करनिपुण

^{१२८} शमदमोपरत्यादि

कमलेशविनुतवृषभतुरङ्गं कमलवदनगुरुगुहान्तरङ्गम्



४२९ सदाविनतसादरे

सदाविनतसादरे

रागं: रेवगुप्ति (१५) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

सदाविनतसादरे सरसिजनयनसोदरे

पदारविन्दे त्वामहं वन्दे

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

निदाघजडभरतनुते निखिलनिर्जरसेविते

सदाशिवानुग्रहदेवते सच्चिदानन्दास्पदे

मुदाब्ज^{१२९} रेवगुप्ति रागमोदितहृदये सदये

(मध्यमकालसाहित्यम्)

चिदानन्दमये^{१३०} गुरुगुह शिवजीवोदये शिवे



^{१२९}मुखाब्जे

^{१३०}चिदानन्दमये

४३० सदाशिवजाये

सदाशिवजाये

रागम्: शङ्कराभरणम् ताळम्: चतुरश्र एकम्

नोटुस्वर साहित्यम्

सदाशिवजाये विजये सरसिजपदयुगळे सकळे
वदनकराम्भोजे तारय शिववामाङ्के वरकरविधृतशुके
सदये गुरुगुह सेविते शशिशेखरसम्भाविते
सुधार्णवमध्यगतेऽतिललिते शुभकरसुरसुतमुरहरमुदिते



४३१ सदाशिवमुपास्महे

सदाशिवमुपास्महे

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: आदि

पल्लवि

सदाशिवमुपास्महे शं मुदा चिदानन्दरूपं सदा मुदा

अनुपल्लवि

निदाघदत्तात्रेयकपिलवामदेव-

व्यासशुकादिवन्दितपदाम्भोजयुगळं

वराभयप्रदानकुशलं भक्तवत्सलम्

चरणम्

चराचरात्मकप्रपञ्चगेहं सुरासुरसेवितवृषभवाहं

मुरारिप्रभृतिदेवसमूहं पराशक्तिसम्मेलनमोहम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

पुराणपुरुषं पुरान्तकं शङ्कराभरणभासमानदेहं

निरामयं निखिलशोकापहं परात्परं परमगुरुगुहमहम्



४३२ सदाशिवेन

सदाशिवेन

रागं: सिन्दुरामक्रिय (४५) ताळं: आदि

पल्लवि

सदाशिवेन शङ्करेण संरक्षितोऽहं हरिब्रह्मेन्द्रादिपूजितेन

अनुपल्लवि

सदाचारप्रवृत्तात्मकेन सनकादिसंशयहरणेन श्री

चरणम्

हिमाद्रिराजात्मजारमणेन हिरण्यकुण्डलालंकृतेन

हीनजातिकिरातपूजितेन हंसोल्लासानन्दनटनेन

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कामितफलप्रदगुरुगुहात्मजेन कलशोद्भवमुनिबृन्दनुतेन

सद्योजातादिपञ्चमुखेन सिन्दुरामक्रिया रागनुतेन



सदाश्रये

रागः चामरम् (५६) ताळः रूपकम्

पल्लवि

सदाश्रये अभयाम्बिके सन्निधेहि
सदाश्रये त्वाम्बिके भद्रं देहि

अनुपल्लवि

चिदाश्रये चिदम्बरचन्द्रिके एहि
चिदाश्रये शिवमञ्चके नतवाराहि
मुदाश्रये भुक्तिमुक्तिप्रदमार्गं ब्रूहि
(मध्यमकालसाहित्यम्)

मुदाश्रये मायाधीनं दीनं मां पाहि
चरणम्

गौरी मायूरनाथमोहनकरशक्ते
शौरीशविधीन्द्रादि^{१३१}सन्नुतपराशक्ते
नारीमण्याद्यर्चितनादबिन्दुयुक्ते
शारीरकादिविद्यासिद्धान्तयुक्ते
भेरीमद्दळवीणावादनानुरक्ते
सूरिजनोपासितचरणनलिनयुक्ते
वाणीमाकरधृत चामरसेवासक्ते

^{१३१}शौरिविधीन्द्रादि

दूरीकृत^{१३२}दुरितवेदशास्त्रादिप्रसक्ते^{१३३}

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वारीशादिलोकपालनुत गुरुगुह भक्ते
दारिद्र्यदुःखभञ्जनकरशङ्कराविभक्ते
शुकसनकादिदेवतासेविते परदेवते
वारिजमुखि वरदाभयहस्ते नमो नमस्ते



४३४ सन्ततं गोविन्दराजम्

सन्ततं गोविन्दराजम्

रागं : शङ्कराभरणम् (२९) ताळं : तिश्र एकम्

नोटुस्वर साहित्यम्

सन्ततं गोविन्दराजं सदा वन्दितनारदमुनिबृन्दं
सन्तानकृष्णं आनन्दकन्दं चिन्तितं चिदानन्दकन्दम्
रुक्मिणीसत्यभामासमेतम् नीलमेघजितसुन्दरगात्रं
शङ्खचक्रधरं शान्तपङ्कजपादं पद्मकरं परशुरामसेवितम्
गुरुगुहमुदं सार्वभौमनन्दगोपालं
गिरिधरं वेणुगानलोलं स्मराम्यहम्



४३५ सन्ततं पाहि माम्

सन्ततं पाहि माम्

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: तिश्च एकम्

नोटुस्वर साहित्यम्

सन्ततं पाहि मां सङ्गीतश्यामळे

सर्वाधारे जननि रे जननि

चिन्तितार्थप्रदे चिद्रूपिणि शिवे

श्री गुरुगुह सेविते शिवमोहाकारे



४३६ सन्तानगोपालकृष्णम्

सन्तानगोपालकृष्णम्

रागं: खमाश् (२८) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

सन्तानगोपालकृष्णमुपास्महे श्री

अनुपल्लवि

सन्तानसौभाग्यवितरणनिपुणतरं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सन्ततं सद्गुरुगुहसन्नुतं सारसकरम्

चरणम्

श्रीरुक्मिणीसत्यभामासमेतं

अर्जुनप्रेमास्पदं आश्रितजनफलदम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नर्तनमुरलीधरं नतशुकसनकनारदं

नीरजासनादिनुतं नीलमेघजितगात्रम्



४३७ सन्तानमञ्जरी शङ्करी

सन्तानमञ्जरी शङ्करी

रागं: सन्तानमञ्जरि (६७) ताळं: आदि

पल्लवि

सन्तानमञ्जरी शङ्करी सन्ततं पातु मां बृहदीश्वरी

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

चिन्तामणिसदना शशिवदना चिदानन्दघना मृदुगदना

(मध्यमकालसाहित्यम्)

चिन्तितार्थदायकी श्रीकरी श्री गुरुगुह गणनायकजननी



४३८ सन्तानरामस्वामिनम्

सन्तानरामस्वामिनम्

रागं: हिन्दोलवसन्तम् (२०) ताळं: आदि

पल्लवि

सन्तानरामस्वामिनं सगुणनिर्गुणस्वरूपं भज रे

अनुपल्लवि

सन्ततं यमुनाम्बापुरिनिवसन्तं नतसन्तं हिन्दोल-
वसन्तमाधवं जानकीधवं सच्चिदानन्दवैभवं शिवम्

चरणम्^{१३४}

सन्तानसौभाग्यवितरणं साधुजनहृदयसरसिजचरणं
चिन्तामण्यालङ्कृतगात्रं चिन्मात्रं सूर्यचन्द्रनेत्रं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

अन्तरङ्गगुरुगुहसंवेद्यं अनृतजडदुःखरहितमनाद्यम्



^{१३४}संगीत संप्रदाय प्रदर्शिनी कोशे चरणम् न दृश्यते

४३९ सन्तानसौभाग्य

सन्तानसौभाग्य

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: तिश्च एकम्

नोटुस्वर साहित्यम्

सन्तानसौभाग्यलक्ष्मीकलत्रं
सङ्गीतसाहित्यामोदं पवित्रम्
कुन्तीसुताप्तं कोटीरदीप्तं
शान्तं भजेऽनन्दमानन्दकन्द-
मुकुन्दं दयासागरं पादपद्मम्



४४० सन्ध्यादेवीम्

सन्ध्यादेवीम्

रागं: देवक्रिय (२८) ताळं: आदि

पल्लवि

सन्ध्यादेवीं सावित्रीं वरगायत्रीं सरस्वतीं भजेऽहम्

अनुपल्लवि

विन्ध्याचलनिवसितविशालिनीं

विधिगुरुगुहसन्नुतवरदायिनीम्

चरणम्

गुप्ततरमार्गकुलयोगिनीं गुणिनीं गोविन्दजननीं नलिनीम्

सत्यसङ्कल्पतमोपहारिणीं सकाररूपिणीं संप्रदायिनीम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सप्तस्वरमातृकारूपिणीं संसारदुःखशमनीं धनिनीम्

तत्पदलक्ष्यार्थरूपिणीं समयाचारप्रवर्त्तिनीम्



४४१ सरससौवीर

सरससौवीर

रागं: सौवीरम् (४७) ताळं: आदि

पल्लवि

सरस सौवीर रसनादि^{१३५}करणसमस्ततरपुष्पवनाधिपते

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

हरिब्रह्मेन्द्राद्वाराधितहालास्यसुन्दरेश्वरमूर्त्ते

(मध्यमकालसाहित्यम्)

गुरुगुह भवतर^{१३६}बहुतरमूर्त्ते गुणत्रयहितशक्तिस्फूर्त्ते



^{१३५} रसास्वाद

^{१३६} धर, धृत

४४२ सरसिजनाभसोदरि

सरसिजनाभसोदरि

रागं: नागगान्धारि (२०) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

सरसिजनाभसोदरि शङ्करि पाहि माम्

अनुपल्लवि

वरदाभयकरकमले शरणागतवत्सले

चरणम्

परन्धामप्रकीर्तिते पशुपाशविमोचिते

पन्नाभरणयुते नागगान्धारी -

पूजिताब्जपदे सदानन्दिते संपदे^{१३७}

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वरगुरुगुहजननि मदशमनि

महिषासुरमर्दनि मन्दगमनि मङ्गळप्रदायिनि



४४३ सरस्वती छायातरङ्गिणी

सरस्वती छायातरङ्गिणी

रागं: छायातरङ्गिणि (२८) ताळं: आदि

पल्लवि

सरस्वती छायातरङ्गिणी सकलकलास्वरूपिणी रक्षतु मां

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सकलदुरितभञ्जनी विधिरञ्जनी निरञ्जनी

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

पुरन्दरादिपूजिताब्जमुखी बुधजनोपाश्रितसच्चित्सुखी

(मध्यमकालसाहित्यम्)

गरुडवृषतुरगहरिहरकरिमुख गुरुगुह मुखमतिवितरणगुणिनी



४४४ सरस्वती मनोहरि

सरस्वती मनोहरि

रागं: सरस्वतिमनोहरि (२९) ताळं: आदि

पल्लवि

सरस्वती मनोहरि शङ्करि सदानन्दलहरि गौरि शङ्करि

अनुपल्लवि

सरसीरुहाक्षि सदाशिवसाक्षि करुणाकटाक्षि पाहि कामाक्षि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मुरहरसोदरि मुख्यकौमारि मूकवाक्प्रदानकरि मोदकरि

चरणम्

अकाराद्यक्षरस्वरूपिणि अन्तःकरणरूपेक्षुचापिनि

प्रकाशपरमाद्वैतरूपिणि परे त्रिपुरसुन्दरि तापिनि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

प्रकल्पितप्रपञ्चप्रकाशिनि प्रसिद्धगुरुगुहजननि पाशिनि

विकल्पजाटिलविश्वविश्वासिनि विजयकाञ्चीनगरनिवासिनि



४४५ सरस्वती विधियुवती

सरस्वती विधियुवती

रागं: हिन्दोळम् (२०) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

सरस्वती विधियुवती संरक्षतु मां श्री

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

मुरळीवीणागानविनोदिनी संवेदिनी

चारुचन्द्रहासिनी सरसीरुहलोचनी

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मुरारि गुरुगुह मोदिनी शब्दार्थस्वरूपिणी

हंसिनी ब्रह्माणी आरक्तवर्णरूपिणी



४४६ सरस्वत्या भगवत्या

सरस्वत्या भगवत्या

रागं: छायागौळ (१५) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

सरस्वत्या भगवत्या संरक्षितोऽहं

छायागौरतरया वरया श्री

अनुपल्लवि

विरिञ्चिप्राणनायिकया वीणावादनोत्सुकया

सरससङ्गीतसाहित्यस्तनद्वयया पराद्वयया

चरणम्

चतुःषष्टिकलात्मिकया समस्तवर्णात्मिकया

श्रितजनपालकया सेवकभूपालकया

श्रुतिप्रतिपादितया शुभ्र^{१३८}वस्त्रावृतया

नतेन्द्राद्यखिलदेवतया आनन्दगुरुगुहसुसेवितया

(मध्यमकालसाहित्यम्)

रतिरमागिरिजार्चितया रत्नाभरणालंकृतया

मतिमज्जिह्वाग्रस्थितया मङ्गलप्रदया सदयया



४४७ साधुजनचित्त

साधुजनचित्त

रागं: पूर्णपञ्चमम् (१५) ताळं: त्रिपुट

पल्लवि

साधुजनचित्तसरसिजोदयं सकलं ब्रह्म^{१३९}मयमाश्रये

अनुपल्लवि

बोधं शिवसङ्कल्पविकल्पं बुद्धशुद्धनित्यनिर्विकल्पम्

चरणम्

सकलनिष्कलरूपमाद्यं सच्चिदानन्दमनाद्यं

सगुणनिर्गुणवेद्यमनाद्यं संसाररोगमाद्यमक्लेद्यम्

प्रकटमायाचित्रचोद्यं प्रसिद्धाम्नायान्तवेद्यं

शुकरहस्यप्रतिपाद्यं शुभकरं हरिहराराध्यम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

स्वकल्पितविद्याविद्यं सुरुचिरं भेद्याभेद्यं

शुकवामदेवादिचिन्त्यं सुखतरं गुरुगुह^{१४०}मचिन्त्यम्



^{१३९}ब्रह्मच

^{१४०}गुरुगुहमाद्यम्

४४८ साधुजनविनुतम्

साधुजनविनुतम्

रागं: गीतप्रिया (६३) ताळं: त्रिपुट

पल्लवि

साधुजनविनुतं गुरुगुहं संगीतप्रियं भजेऽहम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

माधुर्यरसादिभक्षणं मत्तशूरादिशिक्षणं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

माधवादिदेवरक्षणं मारकोटिविजयलक्षणम्



४४९ सामगानप्रिये

सामगानप्रिये

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: तिश्च एकम्

नोटुस्वर साहित्यम्

सामगानप्रिये कामकोटिनिलये

शङ्करि सुन्दरि सारतरलहरि

चण्डिके निर्मले कामिनि मोदिनि पाहि गुरुगुह जननि



४५० साम्बसदाशिवाय

साम्बसदाशिवाय

रागं: काम्भोजि (२८) ताळं: अदि

पल्लवि

साम्बसदाशिवाय नमस्ते सदानन्दाय सोमास्कन्दाय

अनुपल्लवि

शाम्भविहिताय शशिशेखराय सद्गतिप्रदाय काम्भोजपदाय

चरणम्

साधुजनावनाय शङ्कराय सद्गुरुगुहात्मजाय

वरदाय सकलागमसन्नुतवराय

(मध्यमकालसाहित्यम्)

श्रीधरपुरन्दरादिदिक्पालसनन्दनादिसकलदेवनुताय

माधुर्यसुधाधाराय मार्कण्डेयायुष्पदनिपुणतराय



४५१ सारङ्गरागप्रिये

सारङ्गरागप्रिये

रागं: सारङ्ग (६५) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

सारङ्ग रागप्रिये सन्ततं चिन्तयेऽहम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

मारजनकसोदरि महिषासुरमर्दिनि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

सारसपदयुगळे तत्त्वंपदार्थयुगळे

सच्चिदानन्द गुरुगुह्दये संपदे सदये विजये



४५२ सारसदलनयन

सारसदलनयन

रागं: खमास् (२८) ताळं: त्रिपुट

पल्लवि

सारसदलनयन सङ्कटहरण हरे गोविन्द मं पाहि

अनुपल्लवि

नीरजासनादिपूजिताङ्ग श्रीरमान्तरङ्ग शुभाङ्ग

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मुरहर अभयप्रद मुकुन्द यादवकुलभूषण माधव^{१४१}

चरणम्

मा घमासोत्सवप्रभाव मानित गुरुगुह वन्दित भव

(मध्यमकालसाहित्यम्)

गोकुलजनपाल गोपिकामनोहर गोवर्धनधर



४५३ सिद्धिविनायकम्

सिद्धिविनायकम्

रागं: चामरम् (५६) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

सिद्धिविनायकं अनिशं चिन्तयाम्यहं प्र-
सिद्धगणनायकं विशिष्टार्थदायकं वरम्

अनुपल्लवि

सिद्धयक्षकिन्नरादिसेवितं अखिलजगत्
प्रसिद्धं मूलपङ्कजमध्यस्थं मोदकहस्तम्
चरणम्

भाद्रपदमासचतुर्थ्यां ब्रह्मणादिपूजितं
पाशाङ्कुशधरं छत्रचामरपरिवीजितम्
रौद्रभावरहितं दासजनहृदयविराजितं
रौहिणेयानुजार्चितं ईहनावर्जितम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

अद्रिराजसुतात्मजं अनन्तगुरुगुहाग्रजं
भद्रप्रदपदाम्बुजं भासमानचतुर्भुजम्



४५४ सिद्धीश्वराय

सिद्धीश्वराय

रागं: नीलाम्बरि (२९) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

सिद्धीश्वराय^{१४२} नमस्ते जगत्प्रसिद्धेश्वराय नमस्ते

अनुपल्लवि

बुद्धेश्वराय पराय वराय भुक्तिमुक्तिप्रदचतुरतरकराय

शुद्धसत्त्वगुणाकराय वि-

(मध्यमकालसाहित्यम्)

शुद्धचक्रनिलयाय नित्यसुखतरकराय शङ्कराय

चरणम्

निर्मलहृदयविहाराय हराय नीलाम्बराकाराय श्रीकराय

चर्माम्बरधराय चन्द्रशेखराय शब्दादिपञ्चतन्मात्राधाराय

धर्माद्यखिलपुरुषार्थप्रदायकगुरुगुहकुमाराय

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कर्मज्ञानयोगसाक्षात्काराय विदलितमाराय



४५५ सिंहासनस्थिते

सिंहासनस्थिते

वेदरागमालिका ताळं: रूपकम्

सौराष्ट्र रागः

सिंहासनस्थिते सुन्दरगुरुगुहनुतललिते
चिदानन्दनाथोऽहं वन्देऽहं वन्देऽहम्

वसन्त रागः

ब्रह्मादिसकलदेवताराधितपदयुगळे
परशुरामभागवतप्रमुखोपासितबगळे

सुरटि रागः

कमलेशनुतमडळे कविजननतमङ्गळे
मन्त्रिणीदण्डनीसमूहादिमङ्गळे

मध्यमावति रागः

हयग्रीवकुम्भजादिपूजितनित्यमङ्गळे
निरतिशयशुभमङ्गळे नवनवविधमङ्गळे



४५६ सुन्दरमूर्तिमाश्रयामि

सुन्दरमूर्तिमाश्रयामि

रागं: टक्का (१५) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

सुन्दरमूर्तिमाश्रयामि शिवभूसुरकुलाब्धिचन्द्रं
करुणासान्द्रम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

कन्दर्पविडम्बनविग्रहकान्तिं कामक्रोधादिरहितोपशान्तिं
(मध्यमकालसाहित्यम्)

मन्दस्मितमृदुगदनं माणिक्यरुचिरसदनं
कुन्दमुकुलनिभरदनं गुरुगुहमोदितगदनम्



४५७ सुन्दरेश्वराय नमस्ते

सुन्दरेश्वराय नमस्ते

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

सुन्दरेश्वराय नमस्ते सदानन्दाय सोम-

अनुपल्लवि

मन्दस्मिताननाय मधुरापुरिनिलयाय

(मध्यमकालसाहित्यम्)

माधवाद्यमरवन्दितमङ्गलवरप्रदाय

चरणम्

भानुकोटिप्रकाशाय भासमानशशिधराय

भारतीशपूजिताय भद्रकालीसेविताय

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मीनाक्षीमोहिताय मोक्षसाक्षात्काराय

महामन्त्रस्वरूपाय गणपतिगुरुगुहनुताय



४५८ सुब्रह्मण्येन रक्षितोऽहम्

सुब्रह्मण्येन रक्षितोऽहम्

रागं: शुद्धधन्याशि (२२) ताळं: आदि

पल्लवि

सुब्रह्मण्येन रक्षितोऽहं अष्टादशलोचनाखण्डेन

अनुपल्लवि

प्रब्रवामादिपूजितपदेन पुरन्दरमनोल्लासकरणेन

चरणम्

कङ्कशैलविहारेण वरेण वल्लीदेवसेनारमणेन

अकारवृत्तेन सानन्देन^{१४३} भोगमोक्षदानेन नित्येन

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वेङ्कटेश्वरसुपूजितेन^{१४४} विचित्रविशाखामहोत्सवेन

शुकरहस्यप्रकाशगुरुगुहेन कृत्तिकासुतशुद्धधन्येन



^{१४३}आनन्देन

^{१४४}वेङ्कटेश्वरनामधेयेन

४५९ सुब्रह्मण्यम्

सुब्रह्मण्यम्

रागः शङ्कराभरणम् (२९) ताळः चतुरश्र एकम्

नोट्टुस्वर साहित्यम्

सुब्रह्मण्यं सुरसेव्याब्जपदं सुन्दरवदनं सुकुमारविनुतलावण्यं
शुभगात्रं शुभकरनेत्रं सोमात्मकमाश्रितकल्पभूमिरुहं
सूरिगुरुगुहं सुरराजविधिविनुतसर्वज्ञं
सुमते चिन्तय गुरुनाथं
स्वाज्ञानविदारणपण्डितसाधुजनं सूनृतवचनम्



४६० सूर्यमूर्ते

सूर्यमूर्ते

रागं: सौराष्ट्रम् (१५) ताळं: ध्रुवम्
पल्लवि

सूर्यमूर्ते नमोऽस्तु ते सुन्दरच्छायाधिपते
अनुपल्लवि

कार्यकारणात्मकजगत्प्रकाशकसिंहाराश्यधिपते
(मध्यमकालसाहित्यम्)

आर्यविनुततेजःस्फूर्ते आरोग्यादिफलदकीर्ते
चरणम्

सारसमित्र मित्र भानो सहस्रकिरण कर्णसूनो
क्रूरपापहर कृशानो गुरुगुहमोदितस्वभानो
सूरिजनेडितसुदिनमणे सोमादिग्रहशिखामणे
धीरार्चितकर्मसाक्षिणे दिव्यतरसप्ताश्वरथिने
(मध्यमकालसाहित्यम्)

सौराष्ट्रार्णमन्त्रात्मने सौवर्णस्वरूपात्मने
भारतीशहरिहरात्मने भुक्तिमुक्तिवितरणात्मने



४६१ सेनापते

सेनापते

रागं: काशीरामक्रिया (५१) ताळं: आदि

पल्लवि

सेनापते पालय मां सन्मुनिगणादिपूजितानन्दकर

अनुपल्लवि

कनककुण्डलशोभित सुन्दर श्रीनवनन्दनादियुत धीर

(मध्यमकालसाहित्यम्)

प्रणवोपदेश गुरुगुहा कार माणिक्यमकुटधर करुणाकर

चरणम्

वल्लीदेवसेनानन्दकर वाञ्छितार्थप्रदचतुरतरकर

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वेलायुधधर कुक्कुटध्वजधर कालहरत्रिपुरहरशङ्करपुत्र



४६२ सैन्धवीरागप्रिये

सैन्धवीरागप्रिये

रागं: सैन्धवि (२२) ताळं: आदि

पल्लवि

सैन्धवी रागप्रिये शङ्करि सन्ततं पाहि मां बृहदीश्वरि

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

साधुजनावनसन्तोषकरि सद्गुरुगुहजननि सर्वेश्वरि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

माधवसोदरि महाराजराजेश्वरि मङ्गळवरदानकरि



४६३ सोमसुन्दरेश्वरम्

सोमसुन्दरेश्वरम्

रागः शुद्धवसन्तम् (२९) ताळः आदि

पल्लवि

सोमसुन्दरेश्वरं भजेऽहं सोमास्कन्दं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नित्य शुद्धवसन्तो त्सवविभवम्

अनुपल्लवि

हिमाद्रिजारमणं भवतरणं वामदेवादिवन्दितचरणम्

चरणम्

करुणामृतरसजलेश्वरं वरं कदम्बवनस्थितकपालेश्वरं

मधुरापुरिविलसितमहेश्वरं चिदानदगङ्गाधरेश्वरं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वर गुरुगुहेश्वरं परमेश्वरं वाञ्छितार्थफलदायकचतुरम्



४६४ सोमास्कन्दम्

सोमास्कन्दम्

रागं : शङ्कराभरणम् (२९) ताळं : तिश्च एकम्

नोटुस्वर साहित्यम्

सोमास्कन्दं स्वानन्दकन्दं कामाक्षीशं कल्याणवेषं
सोमास्कन्दं स्वानन्दकन्दं सुन्दराङ्गमाश्रयामि
गङ्गाधरं तं गौरीसमेतं शृङ्गाररूपं श्रीसोमसुन्दरं
गङ्गाधरं तं गौरीसमेतं गुरुगुह रूपमाश्रयामि



४६५ सौन्दरराजम्

सौन्दरराजम्

रागं: बृन्दावनि^{१४५} (२२) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

सौन्दरराजमश्रये गज बृन्दावनसारङ्गवरदराजम्

अनुपल्लवि

नन्दनन्दनराजं नागपत्तनराजं

सुन्दरीरमाराजं सुरविनुतमहिराजम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मन्दस्मितमुखाम्बुजं मन्दरधरकराम्बुजं

नन्दकरनयनाम्बुजं सुन्दरतरपदाम्बुजम्

चरणम्

शम्भरवैरिजनकं सन्नुतशुकशौनकं

अम्बरीषादिविदितं अनादिगुरुगुहमुदितम्

अम्बुजासनादिनुतं^{१४६} अमरेशादिसन्नुतं^{१४७}

अम्बुधिगर्वनिग्रहं अनृतजडदुःखापहम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कम्बुविडम्बनकण्ठं खण्डीकृतदशकण्ठं

^{१४५} बृन्दावनसारङ्ग

^{१४६} नतं

^{१४७} अमरेन्द्रादिसन्नुतं, अमरेन्द्रादिभावितं, अमरेन्द्रादिसंयुतं

तुम्बुरुनुतश्रीकण्ठं दुरितापहवैकुण्ठम्



४६६ सौरसेनेशम्

सौरसेनेशम्

रागं: सौरसेन (२७) ताळं: आदि

पल्लवि

सौरसेने शं वल्लीशं सुब्रह्मण्यं भजेऽहमनिशम्^{१४८}

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

गौरीशनुतं गजाननयुतं गर्वितशूरहरं सुकुमारं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नीरजपदं निरुपमानन्दं वारिजभववन्दितं गुरुगुहम्



४६७ स्तवराजादि

स्तवराजादि

रागं: स्तवराजम् (४६) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

स्तवराजादिनुतबृहदीश तारयाशु मां दयानिधे

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

भवपाशमोचननिपुणतर पार्वतीश भक्तप्रियकर

(मध्यमकालसाहित्यम्)

भव गुरुगुहजनक त्रिपुरहर भुक्तिमुक्तिवितरणचतुर



४६८ स्मराम्यहं सदा राहुम्

स्मराम्यहं सदा राहुम्

रागं: रमामनोहरि (५२) ताळं: रूपकम्
पल्लवि

स्मराम्यहं सदा राहुं सूर्यचन्द्रवीक्ष्यं विकृतदेहम्
अनुपल्लवि

सुरासुरं रोगहरं सर्पादिभीतिहरं
शूर्पासनसुखकरं शूलायुधधरकरम्
चरणम्

कराळवदनं कठिनं कयानार्णकरुणार्द्रापाङ्गं
चतुर्भुजं खड्गखेटादिधरणं
(मध्यमकालसाहित्यम्)

चर्मादिनीलवस्त्रं गोमेदकाभरणं
शनिशुक्रमित्रं गुरुगुहं सन्तोषकरणम्



४६९ स्वामिनाथ

स्वामिनाथ

रागं: चलनाट (३६) ताळं: आदि

पल्लवि

स्वामिनाथ परिपालयाशु मां
स्वप्रकाश वल्लीश गुरुगुह देवसेनेश

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

कामजनकभारतीशसेवित कार्तिकेय नारदादिभावित
वामदेवपार्वतीसुकुमार वारिजास्त्रसम्मोहिताकार
(मध्यमकालसाहित्यम्)

कामितार्थवितरणनिपुणचरण काव्यनाट कालङ्कारभरण
भूमिजलाग्निवायुगगनकिरण बोधरूपनित्यानन्दकरण



४७० स्वामिनाथेन

स्वामिनाथेन

रागं: बृन्दावनि^{१४९} (२२) ताळं: आदि

पल्लवि

स्वामिनाथेन संरक्षितोऽहं

सच्चिदानन्दनाथात्मना श्री

अनुपल्लवि

सोमतातेन वल्लीदेवसेनोपेतवरगुरुगुहेन

चरणम्

प्रणवार्थतत्वोपदेशेन मणिमन्त्रौषधप्रदनिपुणेन

सनकादिसन्नुतप्रभावेन दिनकरशशितेजःप्रकाशेन

(मध्यमकालसाहित्यम्)

माणिक्यमकुटकुण्डलशोभितमरकतमणिमयवज्रायुधेन

नवनन्दनाद्युपासितशरवणमन्त्रस्वरूपेण वरेण श्री



४७१ हरियुवतीम्

हरियुवतीम्

रागं: देशिसिंहारवम्^{१५०} (५८) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

हरियुवतीं हैमवती माराधयामि

सततं अखिललोकजननीं श्री^{१५१}

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

नरहरिहृदयनिवासिनि नामरूपप्रकाशिनि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

गुरुगुह मानसरञ्जनि गुणजननुते^{१५२} निरञ्जनि



^{१५०} हैमवति

^{१५१} त्वाम्

^{१५२} नुत

४७२ हरिहरपुत्रम्

हरिहरपुत्रम्

रागः वसन्त (१५) ताळः खण्ड एकम्

पल्लवि

हरिहरपुत्रं शास्तारम् सदा भजेऽहं
मायकार्यम् त्यजेऽहम्

अनुपल्लवि

मुरहरादिमोदितशौरिगिरिविहारम्
मुरळीभेरीवाद्यादिप्रियकरं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

प्रार्थितपुत्रपदं वसन्तनतबृन्दं
दीर्घायुःप्रदं दीनजनफलप्रदम्^{१५३}

चरणम्

फाल्गुनमासपौर्णिमावतारं
पाण्ड्यकेरळादिदेशप्रभाकरं
पुष्पशरेक्षुकार्मुखधरं
फुल्लकल्हारदण्डधरकरं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कलियुगप्रत्यक्षम् गर्वितदक्षशिक्षं

^{१५३}सुखप्रदम्

वर गुरुगुहा न्तरङ्गम् रथगजतुरङ्गम्



४७३ हस्तिवदनाय

हस्तिवदनाय

रागं: नवरोज् (२९) ताळं: मिश्र चापु

पल्लवि

हस्तिवदनाय नमस्तुभ्यं

हाटकमयमण्डपे सिंहासनस्थिताय

अनुपल्लवि

हस्तिकृत्तिवसनधरार्चित महागणपाय तत्त्वस्वरूपाय स-

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मस्तभक्तानुग्रहाय मायालिङ्गितविग्रहाय

चरणम्

कमलोत्पलपाशशङ्खचक्रेक्षुकार्मुकव्रीह्याग्रागदानिजविषाण-

मातुलङ्गरत्नकलशधरण कराम्बुजाय पदपङ्कजाय विमलाय

विश्वोत्पत्तिस्थितिविलयाय करुणालयाय

(मध्यमकालसाहित्यम्)

हिमाद्रितनयाननपङ्कजहिरण्यगर्भाय सुमनसे

उमारमणकुमार गुरुगुह समा नवरौज से महसे



४७४ हाटकेश्वर

हाटकेश्वर

रागं: बिलहरि (२९) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

हाटकेश्वर संरक्ष मां तप्तहाटकमयलिङ्गमूर्ते त्रयात्मक

अनुपल्लवि

पाटलीपादपमूलप्रकाश पाताल बिलहरि हयाद्यमरनुत

(मध्यमकालसाहित्यम्)

हाटकक्षेत्रनिवास हंसरूपचिद्विलास

कोटिकोटिचिताभास गुरुगुह मानसोल्लास

चरणम्

दारुकावनस्थ^{१५४} तपोधनात्युग्रतपःप्रभावसंभवमूर्ते

मेरुशृङ्गमध्यस्थितश्रीनगरविहारपराशक्तिसहितकीर्ते

मारुतिनन्द्यर्जुनादिभरताचार्यरवेदितनर्तनस्फूर्ते

चारुस्मितमुखाम्भोजशशिधर सरसीरुहपद विदलितभक्ताते

(मध्यमकालसाहित्यम्)

गौरीपते पशुपते गङ्गाधर जगत्पते

शौरिविनुत भूतपते शङ्कर कैलासपते



^{१५४}दारुकावनतपोधन

४७५ हालास्यनाथम्

हालास्यनाथम्

रागं: दर्बार् (२२) ताळं: आदि

पल्लवि

हालास्यनाथं स्मरामि कोलाहलमीनाक्षीसमेतम्

अनुपल्लवि

मूलादिनवाधारनायकं मुनिजनादिभक्तवरदायकं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

मलयध्वजपुरमण्डपस्थितं महागणेश गुरुगुहा दियुतम्

चरणम्

नवनीतकाळीपूजितं नन्दिरूपाञ्जनेयादिनुतं

(मध्यमकालसाहित्यम्)

नावाद्याषाढमहोत्सवं नतसुरासुरदेवप्रभावम्



४७६ हिमगिरिकुमारि

हिमगिरिकुमारि

रागं: अमृतवर्षिणि (६६) ताळं: आदि

पल्लवि

हिमगिरिकुमारि ईशप्रियकरि

हेमाम्बरि पाहि मां ईश्वरि

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

उमामहेश्वरि कुमार गुरुगुह जननि शङ्करि सदाशिवकरि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

वाममार्गप्रियकरि सुखकरि वरदाभयकरि परमेश्वरि श्री



४७७ हिमगिरिकुमारि ईश्वरि

हिमगिरिकुमारि ईश्वरि

रागं: रविक्रिया (४२) ताळं: आदि

पल्लवि

हिमगिरिकुमारि ईश्वरि हेमाम्बरि हरिसोदरि सुन्दरि

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

कमलभवादिविनुतबृहदीश्वरि कमनीयतर गुरुगुह विभास्वरि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

विमलहृदयकमलविकासकरि विधुवह्नि रविक्रिया शक्तिकरि



४७८ हिमाचलकुमारीम्

हिमाचलकुमारीम्

रागं: झङ्कारभ्रमरि (१९) ताळं: रूपकम्^{१५५}

पल्लवि

हिमाचलकुमारीं भजे त्रिपुरसुन्दरीं

ह्रीङ्कारसरसीरुह झङ्कारभ्रमरीम्

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

रमाभारतीनयनां राजीवचन्द्रवदनां

(मध्यमकालसाहित्यम्)

कुमारगुरुगुहजननीं उमामहेश्वरीं धनिनीं

नमामि शम्भुरञ्जनीं भ्रमात्मकविश्वजननीम्



४७९ हिरण्मयीं लक्ष्मीम्

हिरण्मयीं लक्ष्मीम्

रागं: ललित (१५) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

हिरण्मयीं लक्ष्मीं सदा भजामि

हीनमानवाश्रयं त्यजामि

अनुपल्लवि

चिरतरसंपत्प्रदां क्षीराम्बुधितनयां

(मध्यमकालसाहित्यम्)

हरिवक्षःस्थलालयां हरिणीं चरणकिसलयां

करकमलधृतकुवलयां मरकतमणिमयवलयाम्

चरणम्

श्वेतद्वीपवासिनीं श्रीकमलाम्बिकां परां

भूतभव्यविलासिनीं भूसुरपूजितां वराम्

मातरमब्जमालिनीं माणिक्याभरणधरां

गीतवाद्यविनोदिनीं गिरिजां तामिन्दिराम्

(मध्यमकालसाहित्यम्)

शीतकिरणनिभवदनां श्रितचिन्तामणिसदनां

पीतवसनां गुरुगुहमातुलकान्तां ललिताम्



४८० हे माये

हे माये

रागं: शङ्कराभरणम् (२९) ताळं: तिश्च एकम्

नोटुस्वर साहित्यम्

हे माये मां बाधितुं का हि त्वं का हि त्वं पाहि याहि
कामाक्षि काञ्चीपुरनायिके रक्षितुं एहि एहि
कामकोटीश्वरि कामितार्थप्रदैकाम्रनाथेश्वरि पाहि पाहि
कामसञ्जीविनि सेवितश्रीगुरो कौळिनि मे मुदं देहि देहि



४८१ हेरम्बाय

हेरम्बाय

रागं: अठाण (२८) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

हेरम्बाय नमस्ते हरिब्रह्मेन्द्रादिसेविताय शिवकुमाराय

अनुपल्लवि

वीरगणादिमुदिताय वीरादिवरप्रदाय

चरणम्

सूरिजनोपासिताय सुरगुरुगुहसेविताय

परमेश्वरकुमाराय पञ्चहस्ताय पाशाङ्कुशधराय

प्रसिद्धगणनाथाय विनायकाय



४८२ क्षितिजारमणम्

क्षितिजारमणम्

रागं: देवगान्धारि (२९) ताळं: आदि

पल्लवि

क्षितिजारमणं चिन्तये श्रीरामं भवतरणम्

अनुपल्लवि

क्षितिपतिनतचरणं सेवितविभीषणं

क्षितिभरणं श्रितचिन्तामणिमघहरणम्

चरणम्

सकलसुरमहितसरसिजपदयुगळं शान्तं अतिकुशलं^{१५६}

विकसितवदनकमलमतुलितममलं वीरनुतभुजबलम्

शुकसनकमुनि^{१५७}मुदितगुरुगुहविदितं शोभनगुणसहितं

प्रकटितसरोजनयनं पालितभक्तं भवपाशहरणनिपुणम्



^{१५६}अतिमृदुलं

^{१५७}सकलसुरमुनि

४८३ ज्ञानप्रसूनाम्बिके

ज्ञानप्रसूनाम्बिके

रागं: कल्याणि (६५) ताळं: रूपकम्

पल्लवि

ज्ञानप्रसूनाम्बिके मामव जगदम्बिके

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

दीनजनावनशङ्करि देवि त्रिपुरसुन्दरि

(मध्यमकालसाहित्यम्)

दिनकरचन्द्रतेजःप्रकाशकरि शुभकरि

गुरुगुह जननि काळहस्तीशमनोल्लासिनि



४८४ ज्ञानाम्बिके

ज्ञानाम्बिके

रागं: सेनाग्रणि (७) ताळं: तिश्च एकम्

पल्लवि

ज्ञानाम्बिके पालय मां श्री ज्ञातृज्ञानज्ञेयस्वरूपिणि

अनुपल्लवि (समष्टिचरणम्)

सेनाग्रणी प्रमुखोपासिते सितासिते अखिलदेवतासेविते

(मध्यमकालसाहित्यम्)

ज्ञानप्रद गुरुगुह विज्ञानघने घनजघने

दीनावनकोङ्कणेशदिव्यललने शोभने

